ज्ञानामृत

वर्ष 50, अंक 1, जुलाई 2014 (मासिक),
मूल्य 8.50 रुपये, वार्षिक शुल्क 100 रुपये

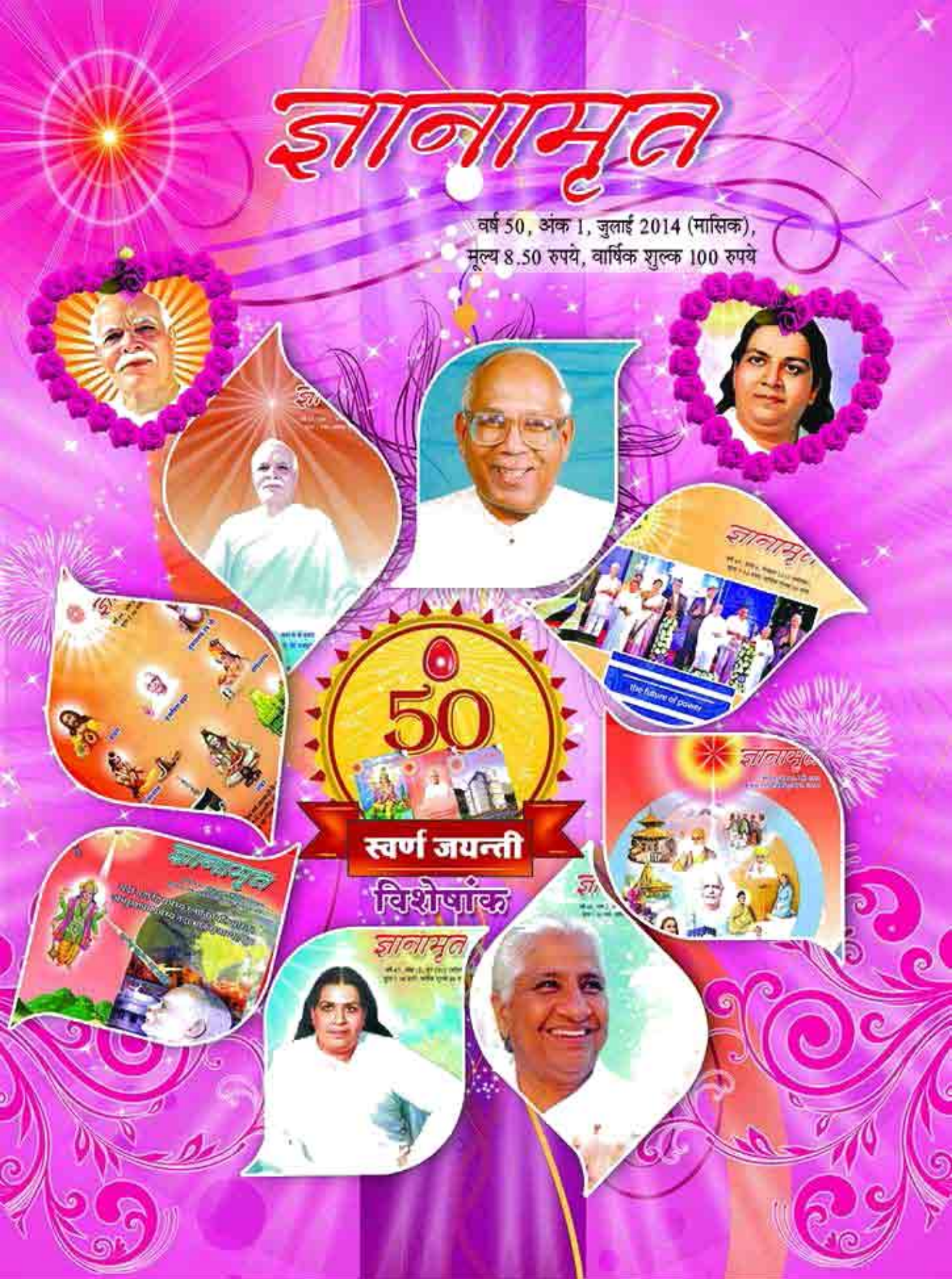

1.गाजियाबाद (कवि नगर)- केन्द्रीय स्वतंत्र प्रभार राज्यमंत्री भाता वी.के.सिंह को ईश्वरीय संदेश देने के बाद ब्र.कु.राजेश बहन, ब्र.कु.सीमा बहन, ब्र.कु.विनीत भाई एवं अन्य समूह चित्र में। **2.दिल्ली (पांडव भवन)-** लोकसभा अध्यक्षा बहन सुमित्रा महाजन को ईश्वरीय सन्देश देने के बाद ब्र.कु.सविता बहन तथा ब्र.कु.मेधा बहन उनके साथ। **3.रायपुर (शान्ति सरोवर)-** 'कर लो स्वास्थ्य मुट्ठी में' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए कानून आयोग के अध्यक्ष न्यायमूर्ति भाता लालचन्द भादू, ब्र.कु.कमला बहन तथा वनविभाग के मुख्याधिकारी भाता ए.के.सिंह। **4.पोखरा (नेपाल)-** नेपाल के उप-प्रधानमंत्री तथा गृहमंत्री भाता बामदेव गौतम को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.परिणीता बहन। **5.चेन्नई-** तंबाकू निषेध दिवस पर मोबाइल प्रदर्शनी को शिवध्वज दिखाकर रवाना करते हुए तामिलनाडु के पशुपालन मंत्री भाता टी.के.एम.चिन्नैय्या, सांसद भाता के.एन.रामचन्द्रन, ब्र.कु.देवी बहन तथा अन्य। **6.गांधीनगर-** गुजरात की नवनियुक्त मुख्यमंत्री आनंदी बहन पटेल को अभिनन्दन-पत्र भेंट करते हुए ब्र.कु.सरला बहन तथा ब्र.कु.मृत्युंजय भाई।

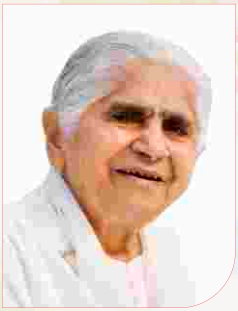

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हो रही है कि ज्ञानामृत पत्रिका, आत्माओं को प्रभु-सन्देश देने की सेवा करते हुए स्वर्ण जयन्ती वर्ष में प्रवेश हो गई है।

जब बाबा साकार में थे तब 'ज्ञानामृत' पत्रिका 'त्रिमूर्ति' के नाम से प्रारंभ हुई थी। 'ज्ञानामृत' नाम बाद में पड़ा है। अति स्नेही मातेश्वरी जी के देह-त्याग के बाद एक दिन मैं उनके कमरे में बैठी थी, 'त्रिमूर्ति' मेरे हाथ में थी, बाबा आये और पूछा, बच्ची, क्या कर रही हो, पढ़ रही हो? मैंने कहा, हाँ बाबा, मैगज़ीन पढ़ रही हूँ, कोई पूछे इसमें क्या है तो मुझे पता तो होना चाहिए ना। यह सुनकर बाबा ने बहुत प्यार किया। ज्ञानामृत में लिखने वालों की कलम कमल समान हो गई है। ज्ञानामृत कितना सुख देती है! मैंने कोई ज्ञानामृत नहीं छोड़ी होगी। त्रिमूर्ति पत्रिका में एक बार जगदीश भाई (प्रथम मुख्य संपादक) के लेख में पढ़ा था, 'सच्चाई, सफाई, सादगी'। मुझे अभी तक याद है वो पत्रिका, पूना के छोटे-से सेवाकेन्द्र में जब मैं थी तब वो पढ़ी थी। बाबा कहता है, बच्चों को मैगज़ीन अवश्य पढ़नी चाहिए, पढ़ना भी आगे बढ़ना है।

स्वर्ण जयन्ती विशेषांक के लिए ज्ञानामृत की सेवा से जुड़े सभी भाई-बहनों को दिल से दुआएँ और बधाई देती हूँ, उनकी अथक सेवा से जन-जन के दिल में ज्ञानामृत की धारा यूँ ही बहती रहे, सर्व को पावन करती रहे और एक दिन यह धरा भी स्वर्णिम बन जाए। पुन: दिल की दुआएँ और बधाई।

राजयोगिनी दादी जानकी
मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

मेरी अनुभूतियाँ

बोध कराती है कथाओं के मर्म का

आज से पचास वर्ष पूर्व आध्यात्मिक ज्ञान की झंकार करती हुई 'ज्ञानामृत' का जन्म हुआ। पचास वर्षों के इस सफर में ज्ञानामृत ने अपने बदलते रूप-रंग द्वारा विविध विधाओं और आयामों द्वारा पाठकों के हृदय में अपना एक अनूठा स्थान बना लिया है। सबकी चहेती ज्ञानामृत का पाठक बेसब्री से इंतजार करते हैं। अपनी गुणवत्ता, सारगर्भिता और विश्वसनीयता से इसने अपनी श्रेष्ठता को सिद्ध किया है। पाठकों को बांधे रखा है। इस बहुरंगी मासिक पत्रिका ने सचमुच पठनीयता को बढ़ावा दिया है। इसकी श्रेष्ठता का कारण इसके लेखों की मौलिकता और प्रभावशीलता है। आध्यात्मिक ज्ञान और राजयोग को अलग-अलग सुर-ताल में लयबद्ध करते हुए ज्ञानामृत का गुंजन आत्माओं की चेतना को झंकृत कर रहा है। यह धर्म-कर्म की व्याख्या और कथाओं के मर्म का बोध कराती है। चिंता, तनाव और व्यसनमुक्त जीवन जीने के लिये, संबंधों में सुसंवादिता लाने के लिए, गुणों से जीवन का शृंगार करने के लिए, तन और मन का उत्तम स्वास्थ्य पाने के लिए और सार्थक जीवन जीने के लिए ज्ञानामृत सर्वोत्तम सहज और सुलभ मासिक है। ज्ञानामृत नित नये रूप-रंग और सज्जा के साथ समस्त जनमानस का ज्ञानवर्धन और आत्मरंजन करती रहेगी और पचास वर्षों में इसने जो जन चेतना जगाई है उसका गुंजन चारों ओर बढ़ता ही रहेगा, ऐसा मेरा विश्वास है। पुन: कोटि-कोटि बधाइयाँ।

➢ **ब्रह्माकुमार अशोक,**
ससाणेनगर, हडपसर, पूणे

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हो रही है कि ज्ञान अमृत का पान कराने वाली यह ''ज्ञानामृत मासिक पत्रिका'' जन-जन के जीवन को अमरत्व प्रदान करते हुए अपनी यात्रा के 50 वर्ष पूरे कर अभी स्वर्णिम जयन्ती वर्ष में प्रवेश कर रही है।

यह पत्रिका साकार पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा बाबा, मातेश्वरी जगदम्बा माँ और वरिष्ठ दादियों के दिव्य वरदानों से आलोकित है, उनकी प्रेरणाओं से ओत-प्रोत है। इसे पहले-पहले ''त्रिमूर्ति पत्रिका'' के नाम से प्रकाशित किया गया। हमारे आदरणीय भ्राता जगदीश जी की अथक मेहनत, बुद्धि की दिव्यता व विशालता से यह पत्रिका दिनोंदिन सबकी चाहत बनती गई। जिसने भी इसे पढ़ा, सुना उसने सहज अपना लिया। इसकी सरल, सुगम, मधुर भाषा अनेक गूढ़ रहस्यों को सहज उद्घाटित कर देती है। देश-विदेश के लाखों भाई-बहनें इसे पढ़ते, ज्ञान के अनमोल हीरे-मोती स्वयं में संजोते और आनंदित होते रहते हैं।

पूरा दैवी परिवार तथा सम्बन्ध-सम्पर्क में आने वाली अनेकानेक आत्मायें ''ज्ञानामृत पत्रिका'' के माध्यम से आध्यात्मिक मार्ग में स्वयं की उन्नति करते हुए ईश्वरीय सेवाओं के क्षेत्र में आगे बढ़ते रहते हैं।

मैं इस अद्भुत प्रेरणादायी ज्ञानामृत का नित्य पाठ करने वाले सभी पाठकों को तहेदिल से बधाइयां देती हूँ। साथ-साथ अपने स्नेही आत्मप्रकाश भाई, उर्मिला बहन तथा पूरे सम्पादकीय परिवार को, सुन्दर-सुन्दर विषयों पर विचार व्यक्त करने वाले मनन-चिंतनशील लेखक भाई-बहनों को भी बहुत-बहुत धन्यवाद देती हूँ जिनकी अथक मेहनत से यह पत्रिका ईश्वरीय विश्व विद्यालय की सेवाओं की प्रगति में चार चांद लगा रही है।

हमारी यह शुभ भावना है कि विश्व की हर एक अध्यात्म प्रेमी, प्रभु प्रेमी आत्मा के हाथों में यह ज्ञानामृत पत्रिका शीघ्र से शीघ्र पहुंचे ताकि उन्हें दिव्यता व सत्यता के मार्ग पर सतत् चलने के लिए आत्मबल मिलता रहे और वे आने वाली स्वर्णिम दुनिया में भी अपना जन्म सिद्ध अधिकार प्राप्त कर सकें।

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी
सह मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

मेरी अनुभूतियाँ

ज्ञानामृत ने बनाया लेखक और वक्ता

जब ज्ञानामृत में लेख लिखने शुरू किये तब एक लिखा, दूसरा लिखा, तीसरा लिखा, ऐसे करते-करते 25 लेख लिखे और विचार सागर मंथन चालू हो गया। मुझे अन्दर से खुशी होने लगी। एक बार सम्पादक जी से मधुबन में मुलाकात हुई। उन्होंने पूछा, आपका एक भी लेख नहीं छपा, आप नाराज तो नहीं होते हो? मैंने कहा, भाई साहब, मुझे खुशी हो रही है, मेरा विचार सागर मंथन चलना शुरू हो गया है। लेख छपे या न छपे, उसकी कोई परवाह नहीं, मेरी हिन्दी भाषा अच्छी हो रही है।

इसके बाद एक लेख छपा, मुझे बहुत खुशी हुई। इसके बाद तो लेख छपते रहे। ज्ञानामृत के बाद अन्य मासिक पत्रिकाओं एवम् कुछ अखबारों में भी लेख लिखने शुरू किये। अब तक लगभग 2000 से भी अधिक लेख लिखे होंगे। ज्ञानामृत का बहुत-बहुत आभार मानता हूँ इसने मुझे लेखक और वक्ता बनाया।

➤ **ब्रह्माकुमार भगवान भाई, शान्तिवन**

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अति हर्ष हो रहा है कि बहन-भाइयों द्वारा देश-विदेश में विशेष रुचि से पढ़ी जाने वाली ज्ञानामृत पत्रिका जन-जन की सेवा करते हुए स्वर्णजयन्ती वर्ष में प्रवेश कर गई है।

अनेक आत्माओं की मन-बुद्धि को पारस सम बनाने में इस पत्रिका का काफी बड़ा योगदान है। जैसे अलौकिक जन्म लेते ही मुरली का रसपान आत्मा करने लगती है वैसे ही बापदादा के वरद् हस्तों से प्रारम्भ हुई 'ज्ञानामृत' के ज्ञान का पान भी प्रारम्भ हो जाता है।

इसमें छपे ज्ञान के गहन मनन चिन्तन के लेखों से ब्रह्मावत्स स्वउन्नति करते हैं और इसमें छपे देश-विदेश के सेवा समाचारों से नए-नए लोग बाबा के करीब आने की प्रेरणा पाते हैं।

ज्ञानामृत पढ़ते-पढ़ते कभी तो ईश्वरीय प्रेम में नयन भीगते हैं और कभी खुशी की सिहरन सारे शरीर में दौड़ जाती है। कभी आत्मा विदेही बन शिवपिता की किरणों रूपी बाँहों में जा विश्रामी बनती है तो कभी विश्व के गोले पर खड़ी हो शान्ति का प्रवाह देने लगती है। कभी उसमें उत्साह का उद्रेक उठता है और कभी करुणा की सरिता कल-कल कर बहने लगती है। इस प्रकार यह साहित्य के नौ रसों में अवगाहन कराती हुई दसवें रस अतीन्द्रिय रस की ओर अग्रसर कर देती है।

इसका अध्ययन कर समय सफल होता है, उनींदे को नींद आती है, आलसी को उठकर खड़े होने की प्रेरणा मिलती है, अपव्ययी मितव्ययी बन जाता और कंजूस में दानशीलता जाग जाती है। इस प्रकार यह स्वभाव में परिवर्तन ला मानव की सोई दिव्यता को जगा देती है।

स्वर्ण जयन्ती वर्ष में यह और अधिक लोगों के दिल-मन को स्वर्णिम युग की ओर आकर्षित करे, पारसनाथ बाबा के ज्ञान का साक्षात्कार सभी को कराकर, सभी को लोहे से सोने जैसा बना दे, यही हार्दिक शुभकामना है।

राजयोगिनी दादी रत्नमोहिनी
संयुक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

वाह ज्ञानामृत वाह

मेरी अभिव्यक्ति शक्तिशाली हो गई

मैं पिछले 20 वर्षों से ईश्वरीय ज्ञान में चल रही हूँ। साधारण परिवार की होने के कारण ज्यादा शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाई अत: बाबा के घर समर्पित होने के बाद मैं सोचती थी कि आखिर कौन-सी सेवा करूँ।

मुझे जन-जन को ज्ञान सुनाने का बहुत शौक था अत: मैं लोगों के घरों में बाबा का संदेश सुनाकर उन्हें ज्ञानामृत पत्रिका पढ़ने के लिए देने लगी। इससे जनता के बीच ज्ञान के प्रति बहुत ही श्रद्धा व प्रेम बढ़ने लगा तथा कई भाई-बहनें बाबा को पहचान उनके वर्से के हकदार बन गए। ज्ञानामृत के प्रचार-प्रसार से मेरी अभिव्यक्ति और शक्तिशाली होती गई और मेरे द्वारा ज्ञानामृत का लाभ पाने वाले सदस्यों की संख्या 600 से ऊपर हो गई। मैं गाँव-गाँव जाकर एक ही कार्य करती हूँ ज्ञानामृत दान, इससे ईश्वरीय सेवाएँ भी बढ़ रही हैं। अन्त में यही कहूँगी –

बहुत ही अनोखी है ज्ञानामृत पत्रिका,
सबके दिलों में विराजी है ये पत्रिका,
जादू भरा है प्रभु प्यार का जिसमें,
प्रभु से मिलाती है, प्यारी पत्रिका।।

➢ **ब्रह्माकुमारी हेमलता, सेमरिया (रीवा)**

शुभकामना संदेश

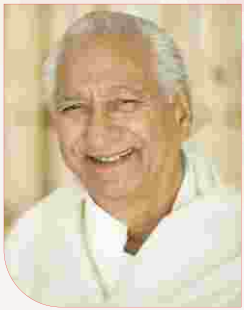

बहुत ही हर्ष का विषय है कि स्थापना काल में पिताश्री ब्रह्मा बाबा और आदि देवी जगदम्बा सरस्वती का दिव्य मार्गदर्शन पाने वाली और उच्च कोटि के आध्यात्मिक चिन्तक, लेखक, वक्ता तथा प्रथम सम्पादक भ्राता जगदीश जी के सम्पादन से नित नए विचारों को प्रवाहमान करती हुई ज्ञानामृत पत्रिका ने स्वर्ण जयन्ती वर्ष में प्रवेश किया है। इस अवसर पर मैं सम्पादक भ्राता आत्मप्रकाश, उर्मिला बहन तथा प्रकाशन में उनके सहयोगियों को कोटि-कोटि हार्दिक बधाइयाँ देता हूँ।

आध्यात्मिक विचारों, अनुभवों, समाचारों और अन्य साहित्यिक रचनाओं द्वारा आत्मा को पुष्ट करने वाली यह पत्रिका भौतिकता प्रधान वातावरण में अध्यात्म का आलोक बिखेरती है। धरती पर अवतरित परमात्मा पिता के दिव्य चरित्रों का साक्षात्कार कराने के साथ-साथ समाज के विभिन्न वर्गों को अध्यात्म रूपी लिफ्ट देकर निर्विघ्न रूप से आगे बढ़ाते हुए स्वर्णिम दुनिया तक ले जाना इसका लक्ष्य है।

समय की तेज़ गति के साथ अपने रूप-स्वरूप का समायोजन बनाते हुए यह और अधिक प्रगति करे तथा इसकी संख्या कई गुणा होकर यह हर घर में ज्ञान प्रकाश फैलाए, यही मेरी शुभकामना है। पुन: स्वर्ण जयन्ती की कोटि-कोटि बधाइयाँ स्वीकार करें।

ब्रह्माकुमार निर्वैर भाई
महासचिव, ब्रह्माकुमारीज़

मेरी अनुभूतियाँ

सर्व धर्मों को सम्मान देने वाली

'ज्ञानामृत' पत्रिका में छपे भाई-बहनों के अनुभव प्रमाणित करते हैं कि स्वयं ईश्वर पृथ्वी पर आकर सतयुग की स्थापना का कार्य कर रहे हैं। इसका नियमित पठन मन-बुद्धि को ताज़ा व धारदार बनाए रखता है। 'ज्ञानामृत' प्रति माह हो रही ईश्वरीय सेवा को दिखलाने का एक झरोखा है, ज्ञान रत्न लुटाने की एक ज्ञान-मंजूषा है, एक गागर है, सागर (शिव) के जल को घर-घर तक पहुँचाने की।

इसका कागज़ी मूल्य तो कम है परन्तु यह 'काग' को 'हंस' बनाने वाली अमूल्य निधि है। भक्ति का फल है 'ज्ञान', तो 'ज्ञानामृत' का फल है 'आपसी प्रेम'। यह पत्रिका उड़ती कला का वरदानी बनने में सहायक है। इसने अनेक आत्माओं का जीवन संवारा है क्योंकि इसे बापदादा का वरदानी हाथ प्राप्त है। यह ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की एक सन्देशवाहक बन गई है, जो कबूतर की तरह उड़ कर दूर-दराज तक पहुँचती है और पाठक के हाथ में आते ही उसके मुख पर मुसकान बिखेर देती है।

सांसारिक पत्रिकाएँ विज्ञापनों व माया के पॉम्प से चलती हैं परन्तु ज्ञानामृत तो त्याग, तपस्या व सेवा के बल से चलती है। वर्तमान समय इस जैसी सस्ती व श्रेष्ठ छपाई वाली अन्य कोई पत्रिका है नहीं। इसमें व्यक्त उच्चस्तरीय विचार और इसकी सरल, सुगम भाषा इसे सभी समकालीन पत्रिकाओं में विशेष स्थान दिलाते हैं। यह विश्व की एकमात्र ऐसी पत्रिका है जिसे दूसरे धर्म-अनुयायियों ने सम्मान की दृष्टि से देखा है, प्रतिस्पर्धा की भावना से नहीं क्योंकि इसने सभी धर्मों का सम्मान किया है। यह कभी समय की परिधि में नहीं बंधी। इसमें छपे लेख कभी पुराने नहीं पड़ते। यही कारण है कि पुरानी ज्ञानामृत पत्रिका जब नये लोगों की सेवा में बांटी जाती है, तो यह उनमें उतनी ही चेतना जगाती है जितनी कि नये माह की ज्ञानामृत।

➤ **ब्रह्माकुमार नरेश, मुजफ्फरपुर**

शुभकामना संदेश

बड़े हर्ष की बात है कि बापदादा की प्रिय पत्रिका ज्ञानामृत का स्वर्णजयन्ती वर्ष चल रहा है, इस अवसर पर सभी को दिल से बहुत-बहुत बधाइयाँ।

हम सब जानते हैं, दो प्रकार की वृद्धि होती है। उनमें से एक है नारियल के वृक्ष की तरह जो ऊपर की ओर होती है और दूसरी बेलों की तरह है जो चारों ओर धरती पर फैलती हैं। ज्ञानामृत की दोनों प्रकार से वृद्धि हुई है। एक तरफ इसकी संख्या सवा तीन लाख तक पहुँच गई है और दूसरी तरफ कई प्रादेशिक भाषाओं जैसे नेपाली, गुजराती, बंगाली, कन्नड़, मराठी आदि में भी भिन्न नाम से पत्रिकाएँ प्रकाशित होने लगी हैं। इन सबका बीज ज्ञानामृत ही है। इसके लिए आत्मप्रकाश भाई, उर्मिला बहन और उनकी टीम को खूब-खूब बधाई है।

एक बार सिंगापुर में मैं एक पत्रिका देखने गया। मुझे बताया गया कि 150 पेज की चार रंगों वाली पत्रिका की 3 या 4 लाख प्रतियाँ वे एक दिन में छाप देते हैं। आजकल इतना विकास हो चुका है। अब हम भी अपना कारोबार इतना ही फास्ट करें।

ज्ञानामृत प्रेस और उसके निमित्त सभी भाई-बहनें यज्ञ की अनेक प्रकार की सेवाओं में सहयोगी बनें, तो बहुत अच्छा होगा। मैं शुभेच्छा देता हूँ कि यज्ञ का कारोबार यूँ ही बढ़ता रहे और ज्ञानामृत का कारोबार भी इतना बढ़े कि इसकी प्लेटिनम जुबली आने तक विश्व की नामी-गिरामी पत्रिकाओं में इसकी गिनती होने लगे।

एक समय में इल्लस्ट्रेटिड वीकली तथा धर्मयुग का बहुत नाम था। इनमें लेख छपना बड़ी बात होती थी पर अब ये बन्द हो चुके हैं। खुशवन्त सिंह इल्लस्ट्रेटिड वीकली के सम्पादक थे। उन्होंने अपने सहयोगियों को पाण्डव भवन में भेजा था। वे बाबा के फोटो के साथ-साथ अन्य भी कई फोटो यहाँ से लेकर गए थे। उस पत्रिका के कवर पेज पर पत्र लिखते हुए बाबा का फोटो छपा था। अन्दर भी कई बातें छपी थी। उसमें एक किचन का फोटो डाला गया था जिसमें भोली दादी कढ़ाई में कुछ तल रही थी। मैंने पूछा, इसका क्या महत्व है। खुशवन्त सिंह ने कहा, आपकी संस्था में किचन बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि आप बाहर का पका हुआ तो खाते नहीं हो, आप सबके जिन्दा रहने का आधार ही यह है।

दूसरा एक फोटो शान्तिस्तम्भ के सामने इन्द्रप्रस्थ के निर्माणाधीन भवन का था जिसमें मिस्त्री ईंटें लगा रहा था। मैंने कहा, इसके बदले तो किसी कार्यक्रम का फोटो ज्यादा अच्छा रहता। उन्होंने कहा, दुनिया में कार्यक्रम तो बहुत होते रहते हैं। उन्होंने उस फोटो के नीचे कैप्शन लिखा, 'सदा ही विकास को प्राप्त होती रहने वाली संस्था।'

ज्ञानामृत पत्रिका भी नए-नए ढंग से छपती रहे, सबको प्रेरणा देती रहे, बापदादा और दादियों का नाम रोशन करती रहे, यही मेरी शुभकामना है।

ब्रह्माकुमार रमेश शाह
अतिरिक्त महासचिव, ब्रह्माकुमारीज़

मेरी अनुभूतियाँ

लेख छोटे, अर्थ विशेष

ज्ञानामृत का एक-एक अनुभव अपने भीतर एक अथाह सागर समेटे हुए है। छोटे-छोटे लेखों में भी बहुत विशेष अर्थ भरा होता है। इनको पढ़ने में समय भी अधिक नहीं लगता और इन्हें दिल में उतारने में भी कोई मेहनत नहीं होती। विविध विषयों से सम्बन्धित ये सार रूप बातें सबके लिए हर समय उपयोगी हैं। मैं ज्ञानामृत के अमृत बिन्दुओं की फुहार से अपने जीवन को सरस, सुखद एवं सफल बना रहा हूँ।

➢ **ब्रह्माकुमार रामकुमार, रेवाड़ी**

स्वर्ण जयन्ती

शुभकामना संदेश

मेरा इस पत्रिका से पुराना संबंध है। मार्च, 1957 में ब्रह्मा बाबा की प्रेरणा से हमने दिल्ली में ब्रह्माकुमारीज़ की पहली हिन्दी पत्रिका 'त्रिमूर्ति' मासिक के नाम से शुरू की थी। हमारे बड़े दैवी भ्राता जगदीश चंद्र हसीजा जी इसमें लेख लिखते थे, मैं कविता लिखता था और इसे प्रकाशित करता था। दिसंबर, 1957 में मैंने फर्टीलाइजर कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया, भाखड़ा नंगल, पंजाब में चार्टर्ड एकाउंटेंट के रूप में सर्विस प्रारंभ की। वहाँ से भी मैं इस पत्रिका को दो वर्ष तक चलाता रहा। बाद में इसे बंद करना पड़ा क्योंकि यह दिल्ली की एक प्रेस में छपती थी। बाइंडिंग दूसरी जगह होती थी, पोस्टिंग तीसरी जगह से होती थी। कागज़ एक जगह से खरीदना होता था और टाइटल के लिए आर्ट पेपर दूसरी जगह से खरीदना होता था। यह सारा कार्य मैं किया करता था जो नंगल जाने के पश्चात् कठिन होता जा रहा था। किंतु लक्ष्य यही रहा कि दुबारा पत्रिका निकाली जाये।

उसके पश्चात् मार्च, 1965 में हमने 'ज्ञानामृत' पत्रिका को उसके अगले अवतार के रूप में प्रकाशित करना प्रारंभ किया। नाम इसलिए बदलना पड़ा कि 'त्रिमूर्ति' नाम किसी दूसरे प्रकाशक ने ले लिया था। तब भ्राता जगदीश जी ने कहा कि व्यस्तता के कारण कुछ लेख तो वे लिखेंगे किंतु मैं अन्य योग्य लेखकों से पत्र-व्यवहार करके उनसे लेख लिखवाऊँगा। मैं नंगल से पत्र-व्यवहार द्वारा यह कार्य करता रहा।

जुलाई, 1971 में भ्राता जगदीश जी को 15 मास के लिए विदेश जाना पड़ा। उन्होंने मुझे कहा कि उनके पीछे 'ज्ञानामृत' की पूरी ज़िम्मेवारी आपकी है। बाबा की मदद से मैं नंगल से ही संपादकीय लिखकर और अन्य लेखकों से प्रकाशन सामग्री इकट्ठी करके पत्रिका को नियमित रूप से छपवाता रहा।

आज इस पत्रिका की हर महीने सवा 3 लाख प्रतियाँ छपती हैं। इसका सारा स्टाफ पूरी लगन से सेवा करता है। आबू रोड जैसे छोटे शहर से भी इसे नियमित रूप से पोस्ट किया जाता है जहाँ मेलिंग सुविधायें बड़े शहरों जैसी नहीं हैं।

मुझे अति प्रसन्नता है कि मासिक ज्ञानामृत पत्रिका अब अपने 50वें वर्ष में प्रवेश कर रही है और इस अवसर पर स्वर्ण जयन्ती विशेषांक भी प्रकाशित किया जा रहा है। मेरी हार्दिक शुभकामना है कि यह पत्रिका दिनों-दिन वृद्धि को प्राप्त हो। इसके सुचारु रूप से प्रकाशन के पीछे जो समर्पित भाव से कार्य करने वाले बहन-भाई हैं, उन्हें मैं हार्दिक बधाई देता हूँ।

ब्रह्माकुमार बृजमोहन

अतिरिक्त महासचिव, ब्रह्माकुमारीज़

मेरी अनुभूतियाँ

सोच हुई सकारात्मक

ज्ञानामृत के नियमित पठन से मुझमें जीवन जीने की कला आ गई। जिन फालतू बातों का चिंतन किया करता था वो अब नहीं रहीं। अब सोच सकारात्मक हो गई है। एक चमत्कार यह हुआ कि मेरा बी.पी. भी नार्मल रहने लग गया है। इसे पढ़ने से मुझे अच्छे व बुरे कर्म की भी समझ मिली है। अब बाबा की दुआ से मेरे सब कार्य अच्छे हो गये हैं। अगर इसमें दिये लेखों को सभी दिल से पढ़ें और जीवन में उतारें तो एक अच्छा समाज बन जाएगा।

➢ **पवन कुमार, बड़ौत (बागपत) उ.प्र.**

शुभकामना संदेश

ज्ञान के सागर भगवान शिव द्वारा ब्रह्मा मुख से उच्चारित ज्ञान बिन्दुओं का अमृतपान कराने वाली ज्ञानामृत पत्रिका अपनी सफल यात्रा के 50वें वर्ष में प्रवेश कर चुकी है, यह बहुत हर्ष का विषय है।

ऊंचे, महान विचारों की प्रबल प्रेरक और जन-जन की चहेती इस पत्रिका की मांग विश्व के कोने-कोने में बढ़ रही है। इसके हर अंक में मूल्यों की, राजयोग की, दिव्य व्यवहार की सरल और स्पष्ट व्याख्या होती है जिससे पाठकों को समाधान मिलते हैं और उनके जीवन में सकारात्मक परिवर्तन आते हैं। निर्मल मन, निर्मान भाव और दातापन की स्थिति बनाने तथा जीवनमुक्ति के सरल पथ की ओर ले जाने का यह पत्रिका अति उत्तम साधन है।

पत्रिका की स्वर्ण जयन्ती के शुभ अवसर पर मैं इसके सम्पादक, प्रकाशक तथा वितरण से जुड़े सभी भाई-बहनों को हार्दिक बधाई देती हूँ और शुभकामना करती हूँ कि जन-जन को ईश्वरीय सन्देश देती हुई यह पत्रिका मानव को देवतुल्य बनाने की सेवा में और भी तीव्रगति से आगे बढ़े। पुन: स्वर्ण जयन्ती की कोटि-कोटि बधाई!

ब्रह्माकुमारी मुन्नी बहन
कार्यक्रम निदेशिका, ब्रह्माकुमारीज़

वाह ज्ञानामृत वाह

परिवार बना कलह-मुक्त

मैं पिछले 17 वर्षों से बाबा के ज्ञान में चल रही हूँ। बाबा को बार-बार शुक्रिया कि बाबा ने मुझे एक ऐसा अनोखा रूहानी अस्त्र दिया है जिससे मैं सभी उच्च पदासीन व्यक्तियों की सेवा करने में सक्षम हो गई हूँ। पहले मैं बहुत डरती थी, सहमी-सहमी रहती थी लेकिन अब जब से ज्ञान में आई व ज्ञानामृत के लेखों को पढ़ने लगी तो भयमुक्त हो गई।

हर गांव, गली में लोगों को बाबा की याद में यह ज्ञानामृत पढ़ने को देती हूँ। प्रथम भेंट में यदि कोई स्वीकार न करे तो भी मैं बड़े प्यार से बाबा की याद में ज्ञानामृत के पन्ने खोलकर जब सुनाने लगती हूँ, तो व्यक्ति नतमस्तक हो जाते हैं और बाद में पत्रिका की भूरि-भूरि प्रशंसा कर सहयोगी बन जाते हैं।

एक बार एक भाई साहब को तीन माह तक पत्रिका देती रही लेकिन वे मुझे लौटाते रहे कि मुझे नहीं पढ़नी। मैं उनके यहाँ फिर भी जाती रही। चौथे मास उनके ही घर में बाबा की पत्रिका के लेख उन्हें पढ़कर सुनाए। अब वे नियमित सदस्य भी हैं और बाबा की सेवा में बहुत मददगार बन गये हैं।

मुझे अपने पारिवारिक सदस्यों से अति दुख होता था। मन ही मन बाबा से कहती थी, बाबा, लोग कहेंगे कि इतनी ईश्वरीय सेवा करती है पर घर के लोग तो खुश रहते नहीं। फिर भी मैंने ज्ञानामृत बांटना बंद नहीं किया। जिनके निमित्त बनाया है उन सदस्यों की संख्या 400 से भी ज्यादा है। इस सेवा के फलस्वरूप मेरे परिवार के सदस्यों की कलह स्वत: समाप्त हो गई। ये भी सेवा की दुआएँ हैं। अंत में यही कहूँगी –

बाबा आपकी है कमाल,
ज्ञानामृत जैसी कोई नहीं मिसाल।

➢ **ब्रह्माकुमारी श्यामवती, रीवा**

शुभकामना संदेश

जब त्रिमूर्ति पत्रिका निकलती थी तब उसकी सेवा का सुअवसर मुझ आत्मा को भी मिला। फिर ज्ञानामृत नाम से पत्रिका का नामांकन हुआ। दिनों-दिन उन्नति के शिखर पर जाते आज यह प्रभु प्यारी पत्रिका अपनी स्वर्ण जयन्ती में प्रवेश कर रही है। इसकी सेवाओं को बढ़ाने का श्रेय सम्पादक भ्राता आत्मप्रकाश जी तथा सहयोगी बहन-भाइयों को जाता है और मैं हृदय की गहराइयों से सभी को मुबारक देना चाहूँगी। भविष्य के लिए मैं यही आशा करती हूँ कि यह ज्ञानामृत पत्रिका बहुतों की हृदय सम्राट बन उन्हें शिवबाबा के वर्से का अधिकारी बनायेगी।

एक बार पुन: ज्ञानामृत पत्रिका की स्वर्णजयन्ती के लिए बहुत-बहुत शुभकामनायें।

ब्रह्माकुमारी चक्रधारी,
अध्यक्षा, महिला प्रभाग

स्वच्छ छवि बनाने की प्रेरणा

मैं एक सरकारी कर्मचारी हूँ, विभिन्न प्रकार की कार्यप्रणालियों और कर्मचारियों से मेरी प्रतिदिन मुलाकात होती है। उन सभी के बीच रहते हुए अपनी स्वच्छ छवि किस प्रकार बनानी है, इसकी प्रेरणा मुझे ज्ञानामृत के हर लेख से मिलती है। हर लेख एक ''डोज'' का कार्य करता है जिससे तन-मन स्वस्थ रहता है। हर ''समस्या'' का निवारण मिलता है। स्वयं की हर कमी, कमज़ोरी को महसूस कर उसे निकालने का बल मिलता है। प्रत्येक दिन बाबा, परिवार, मधुबन की समीपता का अनुभव होता है। स्वयं को एक अच्छा इन्सान, परमात्मा का वफ़ादार बच्चा बनने की प्रेरणा मिलती है।

➢ **ब्रह्माकुमारी प्रीति खत्री,**
मालवीय नगर, जयपुर

वाह ज्ञानामृत वाह

हर मर्ज की दवा

ज्ञानामृत दो शब्दों का समूह है – ज्ञान + अमृत (अर्थात् सुनने के लिए भी तो पीने के लिए भी)। मैं ज्ञानामृत का प्रारंभ से ही पाठक भी हूँ, लेखक भी। एक ज्ञानामृत को 15 लोगों को पढ़ाता हूँ। पहले स्कूल स्टॉफ के 300 सहयोगियों को पढ़कर सुनाया करता था। जो लोग ईश्वरीय ज्ञान को नहीं समझते, ''ज्ञानामृत'' उनके लिए भी 'रामबाण' का काम करती है। कितनी ही आत्माएँ बिना सप्ताह का कोर्स किए इसी से बी.के.बन गए। यह हर मर्ज की दवा है।

➢ ब्र.कु.मुरारीलाल त्यागी (सम्पादक, कल्पान्त), केशवपुरम, दिल्ली

कर्मों में श्रेष्ठता आई

ज्ञानामृत पत्रिका पढ़ने से मेरे जीवन में अभूतपूर्व परिवर्तन आया। जीवन खुशियों से भर गया। जीवन जीने का नज़रिया बदल गया। कर्मों में श्रेष्ठता आई। हर कर्म करते हुए आनंद का अनुभव होने लगा। जो कर्म पहले बोझ लगते थे वो सरल लगने लगे। कर्म करने की क्वालिटी पहले से बेहतर हो गई। धीरे-धीरे यह पत्रिका जीवन की सभी समस्याओं का समाधान देने लगी। पाँचों विकार धीरे-धीरे दूर होने लगे रात्रि में सोने से पहले इसे पढ़कर सोता हूँ तो नींद अच्छी आती है और सुबह अपने-आप को ऊर्जा से भरपूर पाता हूँ। सम्पादक और प्यारे बाबा को दिल से शुक्रिया जो इस पत्रिका के माध्यम से नये युग की स्थापना और मानव में देवत्व उदय करने का कार्य कर रहे हैं।

➢ **शिक्षक देवेन्द्र सिंह, नरेला**

50 स्वर्ण जयन्ती

शुभकामना संदेश

मुझे ज्ञात हुआ है कि ज्ञानामृत मासिक पत्रिका के स्वर्ण जयंती वर्ष पर एक विशेषांक प्रकाशित कर रहे हैं। किसी भी पत्रिका का 50 वर्ष चलना एक विशेष उपलब्धि तथा लंबी यात्रा है। इससे सिद्ध होता है कि यह पत्रिका बहुत ही लोकप्रिय है। मुझे याद है, आदरणीय भ्राता जगदीश चन्द्र हसीजा जी ने बाबा-मम्मा के समय उनके आदेशानुसार इस पत्रिका की शुरूआत की। यह पत्रिका अपने आप में ईश्वरीय अलौकिक शिक्षा एवं मानव कल्याण के लिए महत्वपूर्ण संदेश का माध्यम बनी है। यह पत्रिका इस संस्था के स्थापक शिवबाबा एवं ब्रह्मा बाबा द्वारा दी गई मूल्याधारित शिक्षाओं को हरेक के मानस पटल पर अंकित करने में सफल रही है। मालूम हुआ है कि लगभग सवा तीन लाख पत्रिकाएँ प्रति मास छपती हैं। मुझे आशा ही नहीं, विश्वास है कि आगे चलकर इसकी पाँच लाख प्रतियाँ छापनी पड़ेंगी।

शुरूआत में अकेले भ्राता जगदीश जी ने अनेक ईश्वरीय जवाबदारियों के साथ-साथ कठिन परिस्थितियों में इसके संपादन, लेखन, मुद्रण, प्रकाशन एवं वितरण आदि सारे कार्यों को स्वयं करके इसे आगे बढ़ाया। अपनी तबीयत व अन्य असुविधा को भी ना देखते हुए ईश्वरीय ज्ञान और सेवाओं को इस पत्रिका के माध्यम से लोकप्रिय बनाया। इस स्वर्णिम अवसर पर भ्राता जगदीश जी को हमारा शत-शत प्रणाम!

इस संस्था की पूर्व मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि जी इस पत्रिका को पढ़कर बहुत प्रसन्न होती थीं और अपनी सेवा-यात्रा में इसे साथ लेकर चलती थी। विभिन्न विषयों पर प्रकाशित इसके लेखों को पढ़कर अपने प्रवचन में भी इसका जिक्र करती थी। वर्तमान समय मुख्य प्रशासिका दादी जानकी जी और अन्य लोग भी इसकी सराहना करते हैं और अपने मंतव्य को इस पत्रिका के माध्यम द्वारा लेखन के रूप में दर्शाते हैं।

ज्ञानामृत पत्रिका में अनेक भाई-बहनों के जीवन-परिवर्तन के वृत्तांत भी प्रकाशित होते हैं। इन्हें पढ़कर अनेक लोगों को प्रेरणा मिलती है तथा स्वयं में और ईश्वरीय कार्य में विश्वास एवं दृढ़ता बढ़ती है। यह खुद का व अनेक आत्माओं का भाग्य बनाने की विधि है।

वर्तमान समय ज्ञानामृत के संपादक आदरणीय भ्राता आत्म प्रकाश जी, उर्मिला बहन और ज्ञानामृत प्रेस के उनके साथी भाई-बहनें इसका विस्तार करते हुए इस ईश्वरीय कार्य को दृढ़ता एवं निष्ठापूर्वक आगे बढ़ा रहे हैं। यह पत्रिका इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय की शान एवं पहचान है। आपको स्वर्ण जयंती की कोटि-कोटि बधाइयाँ!

ब्रह्माकुमार मृत्युंजय
कार्यकारी सचिव, ब्रह्माकुमारीज़
तथा उपाध्यक्ष, शिक्षा प्रभाग

मेरी अनुभूतियाँ

तैंतीस करोड़ देवों के निर्माण में सहभागी

जब हम ज्ञानामृत पत्रिका के लेख पढ़ते हैं तो आभास होता है कि ये हमें समझाने के लिए नहीं बल्कि नर से नारायण बनाने के लिए हैं। श्रीमद्भगवद् गीता में कहा गया है कि विष्णो: पदं अवाप्नोति भय शोकादि वर्जित: अर्थात् इस ज्ञान से भय और शोक से रहित विष्णु पद प्राप्त होता है। ज्ञानामृत पत्रिका के पाठक को यह सहज ही अनुभव होता है कि वह धीरे-धीरे जीवन में आने वाले विघ्नों और दुखों से दूर होता जा रहा है और सुख, शान्ति, पवित्रता, शक्ति, आनन्द आदि जीवन के अंग बनते जा रहे हैं। ज्ञानामृत लाखों-करोड़ों को मिले और तैंतीस करोड़ देवताओं के निर्माण में यह सहभागी बने, इसी शुभ आशा के साथ पत्रिका की स्वर्णिम जयन्ती की बहुत-बहुत मुबारक।

➤ **ब्र.कु.प्रेम, गुलबर्गा**

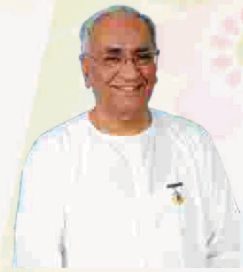

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की पहली हिन्दी मासिक पत्रिका ज्ञानामृत के प्रकाशन के 50 वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। ज्ञानामृत को यह विलक्षण गौरव प्राप्त है कि इसकी स्थापना स्वयं प्रजापिता ब्रह्माबाबा एवं मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती जी के साक्षात् मार्गदर्शन में हुई है। आध्यात्मिक क्रांति की मशाल ज्ञानामृत, अवश्य ही सम्पूर्ण विश्व के गगन को आलोकित कर रही है। पचास वर्षों की अनवरत सफल यात्रा कर स्वर्ण जयंती के इस मुकाम तक पहुंचने का समस्त ज्ञानामृत परिवार को बहुत-बहुत अभिवादन स्वीकार हो।

सामग्री संकलन, संपादन, मुद्रण एवं लेखन आदि का कुशल प्रबंधन हर माह नियमित समय पर सम्पन्न करना जटिल कार्य है जो कि आप सभी के भागीरथ प्रयास से संभव हो रहा है। अध्यात्म जैसे गूढ़ व गंभीर विषय को सरलता से पाठकों के सामने प्रस्तुत कर देना ज्ञानामृत की खासियत रही है। भविष्य में भी लाखों-करोड़ों आत्माओं के जीवन में ज्ञान प्रकाश फैला कर दिन दूनी, रात चौगुनी वृद्धि को प्राप्त होती रहे, इन्हीं शुभ कामनाओं के साथ आप सबको बहुत-बहुत धन्यवाद एवं बधाई।

भ्राता ब्रह्माकुमार आत्मप्रकाश जी, ब्रह्माकुमारी उर्मिला बहन एवं ज्ञानामृत परिवार के सभी साथियों को इस शुभ अवसर पर विशेष लाख-लाख बधाइयां एवं मंगल कामनायें।

ब्रह्माकुमार ओम प्रकाश 'भाईजी'
क्षेत्रीय निदेशक, इंदौर जोन,
इंदौर (म.प्र.)

मेरी अनुभूतियाँ

'ज्ञानामृत' ने बनाया गोल्ड मेडलिस्ट

मैं ज्ञानामृत पत्रिका का बहुत आभारी हूँ, सन् 2005 से बाबा के ज्ञान में चल रहा हूँ। ईश्वरीय ज्ञान में आने से पूर्व मैं दुखी रहता था, परिवार में बहुत अशांति थी। मेरा बेटा पढ़ाई में बहुत कमज़ोर था, संस्कार भी चंचलता के थे। मैं चाहकर भी उसे बदल नहीं पा रहा था। जब मैं ज्ञान में आया तो मुझे कहा गया कि आप ज्ञान का दान करें तो यह कष्ट खत्म हो जायेगा। अत: मैंने ज्ञानामृत पत्रिका लेकर साथियों को देना शुरू किया। दो वर्षों के अन्दर पुत्र में सुधार नज़र आने लगा। वह खुद भी यह पत्रिका पढ़ने लगा तथा बाबा को याद भी करने लगा। इस आधार पर बार-बार फेल होने के बदले उसकी बुद्धि एकाग्र होने लगी। इतना ही नहीं, वह इतना कुशाग्र बुद्धि हो गया कि सन् 2007 में उसने यूनिवर्सिटी में टॉप कर गोल्ड मेडलिस्ट होने का गौरव हासिल किया। इसके बाद भी कई प्रतियोगिताओं में चयनित हुआ और आगे बढ़ता गया। वर्तमान में वह असिस्टेंट कमाण्डेन्ट के रूप में उत्तराखण्ड में अपनी सेवाएँ दे रहा है।

प्यारे बाबा की अमृत पिलाने वाली ज्ञानामृत को बार-बार शुक्रिया जो उसने मेरे जैसे लाखों परिवारों को खुशियों से भरपूर किया। प्यारे बाबा, आपकी इस पत्रिका की जितनी प्रशंसा की जाए उतनी ही कम है।

➢ **ब्रह्माकुमार एस.के.शर्मा,**
स्टेशन मास्टर, रीवा

शुभकामना संदेश

ज्ञानामृत पत्रिका के स्वर्ण जयन्ती वर्ष पर पत्रिका के प्रति हार्दिक बधाई और कृतज्ञता प्रगट करता हूँ।

वर्तमान समय एक ओर जहाँ मानव मन में विकृति उत्पन्न करने वाली, देह भान को बढ़ावा देने वाली पत्रिकाओं का प्रचलन आम बात हो गई है वहाँ स्वच्छ, निर्मल आध्यात्मिक साहित्य से ओतप्रोत ज्ञानामृत पत्रिका समाज में आध्यात्मिक क्रान्ति लाने के कार्य में अहम भूमिका निभा रही है।

यही एकमात्र ऐसी पत्रिका है जिसे पढ़कर बच्चे, युवा और बुजुर्ग सभी दिव्य जीवन बनाने की प्रेरणा लेते रहते हैं। इस का हर स्तंभ चाहे वह 'संजय की कलम से' हो या ब्र.कु.रमेश भाई के अनुभवों से भरा लेख हो या फिर दादी जी से पूछे गये सवाल और उनके जवाब हों, सभी ज्ञान के खजाने से परिपूर्ण होते हैं। नाटक, कविता के साथ-साथ अध्यात्म पथ पर चल रहे भाई-बहनों के अनुभव जितने प्रेरणादायक होते हैं उतने ही सचित्र सेवा समाचार भी ज्ञानामृत को चार चाँद लगा देते हैं। मेरे जैसे अनेक ब्रह्मावत्स जो बचपन से ही ज्ञान में चल रहे हैं, उनके जीवन को दिशा देने का और आध्यात्मिक पथ पर बने रहने की प्रेरणा देने का श्रेय ज्ञानामृत को ही जाता है।

आज भी व्यक्तिगत रूप से मैं ज्ञानामृत के अमृतोपदेश से लाभान्वित होता ही हूँ पर ग्लोबल अस्पताल की सेवाओं के समाचार को जन-जन तक पहुँचाने में भी ज्ञानामृत का बहुत सहयोग रहता है।

ऐसी हम सबकी प्रिय ज्ञानामृत पत्रिका के संपादक आदरणीय भ्राता आत्मप्रकाश भाई जी, उर्मिला बहन जी तथा उनकी सहयोगी टीम को मैं तहे दिल से स्वर्ण जयन्ती के शुभ अवसर पर बहुत-बहुत बधाई देता हूँ। मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि आने वाले वर्षों में ज्ञानामृत यूँ ही हमें ज्ञान स्नान कराती रहेगी और हमारे आध्यात्मिक लक्ष्य को प्राप्त करने में हमारी मददगार बनेगी।

स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर कोटि-कोटि बधाई।

ब्रह्माकुमार डा.प्रताप मिड्ढा
निदेशक, ग्लोबल हॉस्पिटल, माउण्ट आबू, आबू रोड

वाह ज्ञानामृत वाह

ज्ञानामृत है ज्ञान की धारा

ज्ञानामृत है ज्ञान की धारा
सबका ज्ञान बढ़ाये।
मधुर-मधुर, पावन शिक्षा से
जीवन दिव्य बनाये।।

ब्रह्मावत्सों की कलम से निकली
दिव्य, मनोहर वाणी।
पढ़कर पाठकगण की
बदल गयी जिन्दगानी।।

जिनके पास ये पत्रिका जाती
वह घर मंदिर बन जाता है।
आधुनिक युग की इस गीता से
दिल गद्‌गद् हो जाता है।।

महिमा इसकी क्या लिखूँ
लिखने को वो शब्द नहीं।
जो पढ़े वो अनुभव करे
ऐसी पत्रिका और कहीं उपलब्ध नहीं।।

चहूँ ओर बर्बादी को देखकर
लोगों के दिल में बने थे घाव सभी।
लेकिन डूबते को मिल गया किनारा
ज्ञानामृत है वो नाव अभी।।

ज्ञानामृत के हर शब्द में
जीवन का रहस्य होता है।
धारण करे जो उन बातों को
वो प्रभु प्रेम में दिल भिगोता है।।

ब्रह्माकुमार राजेश गुप्ता,
रायपुर (छ.ग.)

शुभकामना संदेश

"ज्ञानामृत" मासिक पत्रिका ने जन मानस को ज्ञान से समृद्ध किया है और आत्म जागृति का अद्भुत संदेश सारगर्भित लेखों द्वारा दिया है। विगत वर्षों में लाखों की संख्या में प्रकाशन इसकी लोकप्रियता तथा प्रगति को सिद्ध करता है।

सरल, सहज, सुरुचिपूर्ण पत्रिका प्रगति पथ पर बढ़ती हुई स्वर्ण जयन्ती वर्ष में प्रवेश कर रही है। हमारी हार्दिक शुभ कामना है कि इसी क्रम में यह प्लेटिनम जुबली वर्ष में भी प्रवेश करे!

ब्रह्माकुमारी सरला, अहमदाबाद
क्षेत्रीय संचालिका, गुजरात जोन

वाह ज्ञानामृत वाह

विश्व की सर्वश्रेष्ठ पत्रिका

– डॉ. ए.के. मिश्रा, डेंटल सर्जन, रीवा

मैं पिछले 25 वर्षों से बाबा की ज्ञानामृत पत्रिका का सदस्य हूँ। लायन्स क्लब का 45 वर्षों से सदस्य हूँ जिससे सभी प्रकार की सामाजिक सेवाएँ करने का अवसर मिला है लेकिन जो सेवा ब्रह्माकुमारी बहनें करती हैं उसकी मिसाल अन्यत्र कहीं भी संभव नहीं है।

इस पत्रिका में जो बातें मुझे अच्छी लगती हैं उनको यदि क्रमबद्ध रूप में कहूँ तो संख्या ज्यादा हो सकती है लेकिन मुख्य 5 बातों से यह पत्रिका विश्व की सर्वश्रेष्ठ पत्रिका है।

प्रथम, यही एक ऐसी परमात्मा की संदेशवाहिनी पत्रिका है जिसमें आत्मा और परमात्मा का सत्य ज्ञान अनुभूतियों के साथ दिया जाता है। दूसरा, यही एक ऐसी मनभावन पत्रिका है जिसे पढ़ने से मन प्रभु-प्रेम में पग जाता है, आत्मा परमात्मा के प्रति निकटता का अनुभव करती है। तीसरा, यह पत्रिका एक ऐसी औषधि का कार्य करती है जिससे अशांति व तनाव जैसे रोग सदा के लिए समाप्त हो जाते हैं। यह पत्रिका, पथ प्रदर्शक की भांति मार्गदर्शन देकर समस्याओं का निवारण कर देती है। चौथी बात, वर्तमान समय एक वैश्विक समस्या है, वर्गवाद-जातिवाद। कई प्रकार के वादों-प्रतिवादों से मानव दुखी हो रहा है। ऐसे में यह पत्रिका हर मानव को बिना भेदभाव के "हम एक हैं, एक पिता की संतान हैं और आपस में भाई-भाई हैं" ऐसा स्नेहमय मंत्र देकर सबको परस्पर प्रेम के धागों में पिरोने का महानतम कार्य कर रही है। मेरा मानना है यह एक क्रांतिकारी कार्य है जिससे समस्त धर्म वाले इस पत्रिका को नमन करते हैं। पांचवीं बात, जीवन का अंतिम लक्ष्य बताने में कोई भी संस्था या गुरु आज सक्षम नहीं है। आज जय-जयकार और दूसरे दिन गिरावट के दौर में गुरु व संस्थाएँ जा रही हैं। ऐसे समय में जीवन का शाश्वत सत्य यह संस्था अपनी पत्रिका ज्ञानामृत द्वारा उद्घोषित कर रही है कि नवयुग का अरुणोदय हो रहा है। सारा विश्व भयभीत है अणुबम और पर्यावरण प्रदूषण द्वारा पृथ्वी के अंत की ओर जाने से लेकिन शुक्र है इस पत्रिका के चुनौतीपूर्ण, तथ्यपरक लेखों का जो आने वाले सुखमय काल के रहस्यों का उद्घाटन कर हर मानव को अति सुकून देते हैं। मेरा मानना है कि भयाक्रांत मानवता को ज्ञान तथा धैर्य देने के लिए पत्रिका व इसके संपादकीय प्रमुखों को जितना साधुवाद दिया जाए कम है। अंत में मैं अपनी बातों को इन पंक्तियों से समाप्त करता हूँ -

जो चाह थी वह मिल गई, ज्ञानामृत को प्राप्त कर,
नहीं आस है कोई बची, बाबा के ज्ञान को पाकर,
शाश्वत रहे शिखरों पे ये बाबा की पत्रिका,
भारत नहीं भू-मण्डल में पहुँचे ज्ञानामृत पत्रिका।।

शुभकामना संदेश

हमें यह जानकर अति प्रसन्नता हो रही है कि ज्ञानामृत पत्रिका अपनी स्वर्ण जयंती मना रही है। ब्रह्माकुमार आत्मप्रकाश जी तथा उनके सहयोगी-साथी कितने अथक, ऊर्जावान एवं सफलता स्वरूप हैं, इसका प्रतीक यह स्वर्ण जयंती है।

हमारे प्रिय आदरणीय भ्राता जगदीशचंद्र, जो कि प्रथम संपादक रहे हैं, उनके विचार अभी भी ''संजय की कलम से'' प्रकाशित होते हैं, जो ज्ञान के गुह्य राज़ों को स्पष्ट करते हैं।

ज्ञानामृत पत्रिका में विविध विषयों पर सामग्री प्राप्त होती है जो शिक्षाप्रद, मार्गदर्शक एवं प्रेरणादायक होती है। सचित्र सेवा समाचार उमंग-उत्साह बढ़ाते हैं।

मेरी शुभभावना तथा शुभकामना है कि ज्ञानामृत पत्रिका की लोकप्रियता और बढ़े तथा पाठक अपना जीवन सुखमय बनाएँ।

ब्रह्माकुमारी संतोष, मुंबई (सायन)
क्षेत्रीय संचालिका – महाराष्ट्र तथा आन्ध्र प्रदेश क्षेत्र

वाह ज्ञानामृत वाह

'ज्ञानामृत' का जवाब नहीं!

मैंने ईश्वरीय ज्ञान के करीब तीन सालों के अनुभव में पाया है कि भगवान द्वारा बताये गये ज्ञान-बिन्दुओं को जीवन में धारण करने के लिए, अपना पुरुषार्थ निरंतर बनाये रखने के लिए और अपना अकेलापन समाप्त करने के लिए ज्ञानामृत मासिक पत्रिका बहुत ही उपयोगी साबित हो रही है। कई बार मन में चल रहे प्रश्नों के उत्तर ज्ञानामृत में उदाहरण सहित मिल जाते हैं। धन्य हैं ज्ञानामृत बनाने वाले और उसके लिए लिखने वाले भाई-बहनें। मैं पेशे से एक डॉक्टर हूँ और सरस्वती मेडिकल कॉलेज (पिलखुवा, उत्तर प्रदेश) में एसोसिएट प्रोफेसर (सह-प्राध्यापक) की हैसियत से कार्यरत हूँ।

➢ **ब्रह्माकुमार डॉ.गौरव अग्रवाल,**
दिलशाद गार्डन, दिल्ली

'गुडन्यूज' देने वाली

''ज्ञानामृत'' पत्रिका अव्यक्त पालना में आगे बढ़ने वाले बच्चों के लिए संजीवनी बूटी का काम कर रही है। ज्ञान मुरली के साथ-साथ ''ज्ञानामृत'' बुद्धि के लिए लाजवाब भोजन है। इस अमृतरस का पान कर बुद्धि दिव्यता की ऊँचाई को सहज प्राप्त कर लेती है। न सिर्फ ब्रह्मावत्स बल्कि नये जिज्ञासुओं को भी प्रेरणा देती है। इस दुखदायी दुनिया में दुख के समाचार रोज़ सुनते-पढ़ते लोगों के लिए ''ज्ञानामृत'' ज्ञानदान के साथ-साथ ''गुड न्यूज़'' देते हुए सभी का जीवन सुखदायी बना रही है। इसके पाठक और भी बढ़ते जाएँ, ऐसी बहुत-बहुत दिल की दुआओं सहित सभी को बधाई।

जन-जन तक पहुँचाये प्रभु संदेश,
जन-जन तक पहुँचाये प्रभु प्यार,
दुखियों के जीवन की संजीवनी,
ज्ञानामृत है प्रभु का उपहार।

➢ **ब्रह्माकुमारी शकु बहन, मुम्बई (डोंबिवली)**

शुभकामना संदेश

अति प्यारे-मीठे बापदादा की प्रेरणा से पल रही ''ज्ञानामृत'' पत्रिका के स्वर्ण जयन्ती वर्ष पर सम्पादक तथा उनकी टीम को बहुत-बहुत बधाई हो!

हर मन को पावन करने वाली, ज्ञान खज़ानों से सम्पन्न, मन में नयी चेतना, उमंग-उत्साह भरने वाली ''ज्ञानामृत पत्रिका'' का हम सभी को सदा ही इंतजार रहता है। इसमें आने वाले लेख आत्मा में अद्‌भुत शान्ति का संचार करते हैं। हर लेख अपने आप में विशेष शिक्षा लिए हुए होता है। 'संजय की कलम से' पढ़ते-पढ़ते हम साकार बाबा से जुड़ जाते हैं। दादी जानकी जी के प्रश्नोत्तर बाबा की समीपता का अनुभव कराते हैं एवम् यज्ञ की मर्यादा-नियम से हमें अवगत कराते हैं, जिससे अव्यक्त पालना लेने वाले बापदादा के बच्चों को आगे बढ़ने में बहुत अच्छी मदद मिलती रहती है।

छोटी-छोटी कविताएँ भी मन को छू जाती हैं। पत्रिका के हर पन्ने पर जो सुविचार लिखे जाते हैं वे पत्रिका को और भी शोभनिक बनाते हैं। ''ज्ञानामृत'' पढ़ते-पढ़ते दिल से सदा ही निकलता है, वाह बाबा वाह! वाह ज्ञानामृत वाह!! इसकी महिमा में चंद पंक्तियाँ कहना चाहूँगी –

मन को पावन करती,
ज्ञान रंगों से हम सबको रंगती,
दिव्यता से जीवन सवाँरती,
ओहो! 'ज्ञानामृत' तुम तो
सबको अति भाती, अति भाती।

''ज्ञानामृत पत्रिका'' सदा ही सर्व आत्माओं को अमृत से पावन बनाती रहे, ज्ञानामृत का रसपान कर हर आत्मा तृप्त होती रहे तथा ज्ञान श्रृंगार कर सतयुग की तरफ कदम बढ़ाती जाये, ऐसी बहुत-बहुत शुभकामना एवम् बधाई।

ब्रह्माकुमारी नलिनी बहन,
क्षेत्रीय संचालिका, घाटकोपर क्षेत्र, मुम्बई

मेरी अनुभूतियाँ

'ज्ञानामृत' ने मिलाया मुझे ज्ञान सागर से

सन् 1998 के पूर्व मेरे जीवन में बहुत अशान्ति व परेशानी रहती थी। पान, तम्बाकू का सेवन करना तो मेरे जीवन का शौक बन गया था। ''ज्ञानामृत पत्रिका'' तो लेता रहा परन्तु पढ़ता नहीं था। एक दिन ब्रह्माकुमारी बहन जी ने पत्रिका देते ही पूछा, क्या आपने पिछले महीने के लेख पढ़े? मैंने सीधा मना किया कि मेरे पास इतना समय नहीं है। तब बहन जी ने वहीं पर खड़े होकर जीवन परिवर्तन का एक लेख सुनाना शुरू कर दिया। लेख सुनकर मेरे अन्दर रोमांच खड़े हो गए कि ऐसा परिवर्तन तो मेरे जीवन में भी आ सकता है। परिवर्तन का दृढ़ संकल्प लेकर मैं बहन जी के कहने पर माउण्ट आबू गया। वहाँ की निराली छटा देखते ही बनती है। वहाँ पहुँचकर मैं अपने आप को जैसे भूल-सा गया। मेरा मन जीवन को श्रेष्ठ बनाने एवं आध्यात्मिक जीवन जीने के लिए वहीं पर संकल्पित हो गया। मधुबन से वापस लौट कर प्रतिदिन सत्संग शुरू किया तो लगने लगा जैसे कोई मुझे खींच रहा है, मेरी आन्तरिक शक्तियाँ बढ़ रही हैं। मुरली सुनते ही जीवन में नियमों व संयम की धारणा सहज होने लगी। तब से मैं और मेरी युगल (सावित्री) मुरली सुनने रोज़ाना सेन्टर पर जाने लगे। कई ऐसी परिस्थितियाँ जीवन में आयीं जिनमें प्यारे बाबा की मुरली ने योगयुक्त बनाकर विजयी बनाया। मुरली सुनते वक्त ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे पिता अपने बच्चे को समझा रहे हैं। दिल में अब यही संकल्प रहता है कि जब तक जीना है, ज्ञानामृत पीना है।

➢ **ब्रह्माकुमार भारत प्रसाद ताम्रकार, रीवा**

शुभकामना संदेश

ज्ञानामृत पत्रिका के स्वर्ण जयन्ती वर्ष में प्रवेश करने पर मुझे अपार हर्ष व गौरव का अनुभव हो रहा है। मेरा इस पत्रिका से तब से सम्बन्ध रहा है जब यह त्रिमूर्ति नाम से छपती थी तथा आदरणीय जगदीश भाई जी इसका सम्पादन किया करते थे। मुझे याद आता है कि तब पिताश्री प्रजापिता साकार ब्रह्मा बाबा भी इसे पढ़कर समय प्रति समय इसके उत्थान और प्रगति के लिए मार्ग प्रदर्शना करते रहते थे। अभी भी यह परम्परा चली आ रही है तथा आदरणीया दादी जानकी जी भी इस सम्बन्ध में अपने विचार प्रगट करती रहती हैं। जहाँ बड़ों की दुआएँ व आशीर्वाद हैं वहाँ सफलता निश्चित है। पत्रिका में बहुत ही सारगर्भित लेख, अनुभव, कविताएं, सेवा समाचार (विशेषकर चित्रों के माध्यम से) तथा सम्पादकीय आदि अधिक, और अधिक पढ़ने के लिए प्रेरणा देते हैं।

पचास वर्ष के इस सफल सफर पर मैं ज्ञानामृत सम्पादक मंडल को, विशेषकर भ्राता आत्म प्रकाश जी तथा बहन उर्मिला जी को हार्दिक बधाइयाँ देता हूँ और आशा करता हूँ कि आने वाले समय में दिन दूनी-रात चौगुनी प्रगति करके यह बाबा का और यज्ञ का नाम रोशन करेगी तथा इसके नाम के आगे एक और विशेषण जुड़ जायेगा – **वाह ज्ञानामृत वाह**!

एक बार पुन: ज्ञानामृत की सेवा में रत सभी सेवाधारी भाई-बहनों को बहुत-बहुत शुभ कामनाएं एवं हार्दिक बधाइयाँ।

ब्रह्माकुमार मोहन सिंघल
राष्ट्रीय संयोजक,
साइन्टिस्ट और इन्जीनियर प्रभाग

मेरी अनुभूतियाँ

हर लेख अमूल्य

ज्ञानामृत एक ऐसी पत्रिका है जिस द्वारा विश्व के विभिन्न देशों के भाई-बहनों के अनुभवों तथा विचारों का लाभ ले सकते हैं। इसका एक-एक लेख अति अमूल्य है जिस द्वारा अति गुह्य आध्यात्मिक ज्ञान, योग, अनुभव तथा सामाजिक, वैज्ञानिक....हर क्षेत्र की जानकारी मिलती है। कई लेख ऐसे होते हैं जिन्हें पढ़कर दिल करता है कि अलग से छपवा कर सबको बाँटूं। आध्यात्मिक प्रगति के लिए 'ज्ञानामृत' सभी भाई-बहनों को ज़रूर पढ़नी चाहिए।

➤ **ब्रह्माकुमार राजूभाई, पाण्डव भवन**

अनसुलझे प्रश्नों के उत्तर मिले

ज्ञानामृत पत्रिका स्वर्ण जयन्ती वर्ष मना रही है, यह समाचार सुनकर अपार खुशी हुई। इस स्वर्णिम सफर की कोटि-कोटि बधाइयाँ। विगत 26 वर्षों से, जब से ईश्वरीय ज्ञान मार्ग में आया, ज्ञानामृत ने मेरा बहुत अच्छा मार्गदर्शन किया। कई अनसुलझे प्रश्नों के उत्तर, वरिष्ठ भाइयों एवं बहनों के लेखों द्वारा स्पष्ट हुए और ज्ञान के नये-नये आयामों को समझ सका। मैं इसका अध्ययन कर निरन्तर लाभान्वित होता हूँ और ज्ञानामृत के सदस्यों की वृद्धि करने में भी निरन्तर प्रयासरत रहता हूँ। यह पत्रिका और भी अधिक सफलता की ऊँचाइयों पर पहुँचे, मानवता की सेवा करती रहे, यही मेरी हार्दिक शुभकामना है।

➤ **ब्रह्माकुमार कृष्ण अग्रवाल, समस्तीपुर**

शुभकामना संदेश

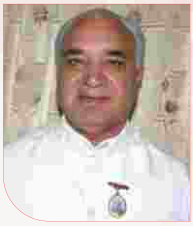

मुझे यह जानकर अति हर्षोल्लास हो रहा है कि ज्ञानामृत पत्रिका सफलता की बुलन्दियों को छूते हुए इस वर्ष अपनी स्वर्ण जयन्ती मना रही है। ज्ञान की गहराई और महीनता को लिए हुए लेख तथा ज्ञान को जीवन में उतारने से आए सकारात्मक परिवर्तन के अद्भुत संस्मरण पत्रिका की एक अलग पहचान बनाते हैं। प्राण प्यारे साकार ब्रह्मा बाबा व शिव बाबा की प्रेरणाओं से आरम्भ हुई इस पत्रिका ने देश-विदेश में लाखों लोगों के जीवन में ज्ञान की सरिता बहाकर उन्हें श्रेष्ठ चिन्तन, अध्ययन व मनन की ओर प्रवृत्त करके उन्हें सशक्त करने में महत्वपूर्ण व सराहनीय कार्य किया है। ईश्वरीय विश्व विद्यालय के विभिन्न सेवाकेन्द्रों पर हो रही आध्यात्मिक व सामाजिक सेवाओं को जन-जन तक पहुँचाने के लिए भी यह एक सशक्त माध्यम बनी है। जीवन में आने वाली समस्याओं को हल करने व चुनौतियों का सामना करने की प्रेरणाएँ व युक्तियाँ इसमें छपने वाले लेखों द्वारा सहज ही प्राप्त होती हैं।

पत्रिका की लोकप्रियता व उपयोगिता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि ज्ञान में रुचि रखने वाले नये-पुराने सभी ब्रह्मावत्सों को ज्ञानामृत के आने का बेसब्री से इंतजार रहता है और ज्यादातर भाई-बहनें इसके पुराने अंकों को भी सम्भाल कर रखते हैं। पत्रिका को आरम्भ करने से लेकर कई दशकों तक सम्पादन करने वाले आदरणीय जगदीश भाई के योगदान को भी भुलाया नहीं जा सकता। इस अवसर पर मैं पत्रिका को रोचक व आधुनिक स्वरूप में प्रस्तुत करने वाले सम्पादक, प्रकाशक, लेखक, डिज़ाइनर व पोस्टिंग से जुड़े सभी भाई-बहनों की टीम का हार्दिक अभिवादन करता हूँ और उनकी नि:स्वार्थ सेवाओं की सच्चे दिल से प्रशंसा करता हूँ। मेरी हार्दिक शुभकामना व पूरा विश्वास है कि ज्ञानामृत पत्रिका आने वाले समय में करोड़ों घरों तक पहुँच कर ईश्वरीय ज्ञान को प्रत्यक्ष करने और दैवी दुनिया के निर्माण में निमित्त बनेगी।

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ,

ब्रह्माकुमार अमीरचन्द भाई

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, समाज सेवा प्रभाग

वाह ज्ञानामृत वाह

भारत रामराज्य बन जाएगा

आज से तीस वर्ष पहले जब ज्ञानामृत पत्रिका पढ़ना शुरू किया, तब से कोई भी ज्ञानामृत ऐसी नहीं जिसे कम से कम दो बार नहीं पढ़ा हो। साथ ही पुरानी जितनी भी ज्ञानामृत मिली, उनको पढ़कर जीवन में अपार हर्ष का अनुभव किया। मुझे तो अनुभव होता है कि हर भारतीय घर में यदि 'ज्ञानामृत' पुस्तक का अध्ययन किया जाये तो हर घर खुशियों से भरपूर हो जायेगा और सहज ही भारत फिर से रामराज्य में बदल जायेगा। ज्ञानामृत सरल शब्दों में गीता का सत्य सार है। इसमें ज्ञान-स्नान कर मैं अपने आपको पावन, निर्मल महसूस करता हूँ। ऐसी मीठी पत्रिका के आने का इंतजार रहता है और जब मिल जाती है तो खुशी का अनुभव होता है क्योंकि यह ऐसा सुपाच्य, श्रेष्ठ आहार है जो आत्मा को तृप्त कर देता है। अंत में यही कहूँगा –

''वाह ज्ञानामृत वाह, तेरी हर बात निराली,
पहुँचे जिसके पास, छा जाती खुशहाली।''

स्वर्ण जयन्ती के शुभ अवसर पर ज्ञानामृत परिवार को ढेर सारी हार्दिक बधाइयाँ।

➤ **ब्र.कु. शिवकुमार,**
बी.के.कालोनी, शान्तिवन

आश्चर्यजनक घटनायें

जगदीश भाई

'संजय की कलम से' के लेखक 'संजय' वास्तव में ज्ञानामृत के प्रथम मुख्य सम्पादक आदरणीय जगदीश भाईजी ही हैं। उनकी अति तीक्ष्ण और दिव्य बुद्धि को देखकर प्यारे बापदादा ने उन्हें यादगार ग्रन्थ महाभारत में वर्णित 'संजय' की उपाधि प्रदान की। ज्ञानामृत की स्वर्णजयन्ती के शुभ अवसर पर हम उनका मार्च, 1965 में छपा प्रथम सम्पादकीय इस बार प्रकाशित कर रहे हैं। 'ज्ञानामृत' से पहले 'त्रिमूर्ति' नाम से एक पत्रिका प्रारम्भ की गई थी जो कुछ सालों के प्रकाशन के बाद बंद हो गई थी। मार्च, 1965 में 'ज्ञानामृत' प्रारंभ हुई। इसका थोड़ा-सा उल्लेख भी इस सम्पादकीय में किया गया है। इस पहले अंक को 'पवित्रता अंक' नाम दिया गया। इसमें छपी सामग्री के कुछ अंश बाद में प्रकाशित पुस्तकों में प्रयोग किये गये जो कि साहित्य के काउंटर पर उपलब्ध हैं जैसे कि 'कमलपुष्प-सम पवित्र जीवन' और 'ब्रह्मचर्य व्रत का पालन और काम विकार पर विजय' आदि।

'ज्ञा'नामृत' का पहला अंक आप बहनों और भाइयों के हाथों में है। बहुत लोग समझते होंगे कि 'त्रिमूर्ति' के पिछले अंक से लेकर इस अंक के प्रकाशित होने तक जो समय बीता है उस थोड़े से काल में संसार में बहुत बड़ी-बड़ी घटनाएँ घटी हैं और कई नई समस्याएँ तथा नई परिस्थितियाँ पैदा हुई हैं। क्यूबा और अमेरीका के बीच हुआ वृत्तान्त, चीन का हमला, लाओस की घटना, इन्डोनेशिया और मलेशिया के बीच मनमुटाव, वियतनाम की वर्तमान परिस्थिति आदि-आदि अनेक घटनायें हुई हैं। यद्यपि सामान्य दृष्टि से ये घटनायें नई लगती हैं, दिव्य-दृष्टि अथवा ज्ञान-दृष्टि से ये कोई नई नहीं हैं (There is nothing new)। इस पुनरावृत्त होने वाले संसार चक्र में ये अनेकानेक बार हूबहू घटी हैं। ये तो कल्प पहले भी हुई थीं और कल्प के बाद फिर भी हूबहू ऐसे ही होंगी – यह हम अब जान चुके हैं। परन्तु जो मनुष्य त्रिकालदर्शी परमात्मा से योग-युक्त नहीं हुए और जो विश्व के इतिहास के भूत, वर्तमान और भविष्य को यथार्थ रीति नहीं जानते वो इस गूढ़ रहस्य से भी अपरिचित हैं और सोच में हैं। ये

अमृत-सूची

- स्वर्ण जयन्ती तक का सफर *(सम्पादकीय)* 21
- ईश्वरीय कारोबार में.....24
- आवरण पर आवरण.....27
- दुआओं से अभिषेक *(कविता)* 29
- समय नहीं है 30
- आलोचना से बचें.....31
- खुशहाल जीवन के लिए 32
- गुरुपूर्णिमा महोत्सव.....33
- बाबा बने न्यायाधीश.....34
- दीदी की अद्‌भुत पालना 35
- बिछुड़ने लगे तो 39
- मिला खुदा दोस्त का साथ ...40
- मैंने जाना सच्ची खुशी को 41
- जहाँ एकाग्रता है 43
- शान्ति की खोज में.....46
- डिस्चार्ज होती आंतरिक ऊर्जा की पहचान 48

सदस्यता शुल्क

भारत	वार्षिक	आजीवन
ज्ञानामृत	100 /-	2,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	100/-	2,000/-
विदेश		
ज्ञानामृत	1,000 /-	10,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	1,000/-	10,000/-

शुल्क केवल '**ज्ञानामृत**' अथवा '**द वर्ल्ड रिन्युअल**' के नाम से ड्राफ्ट या मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- संपादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन- 307510 (आबू रोड) राजस्थान।**

शुल्क के लिए सम्पर्क करें - 09414006904, 09414423949
hindigyanamrit@gmail.com

घटनायें हमारे लिये इस कारण भी आश्चर्यजनक, भयंकर अथवा नई नहीं हैं क्योंकि परमपिता परमात्मा द्वारा हमें पहले ही से इस मूल रहस्य का ज्ञान प्राप्त हो चुका है कि अब दिन-प्रतिदिन अधिक ही संकट आयेंगे और संसार की हालत अधिक ही बिगड़ती जाएगी और वह समय जल्दी ही आयेगा जब परिस्थितियाँ बिल्कुल ही विकट हो जायेंगी और ऐटामिक विश्वयुद्ध इत्यादि के द्वारा इस कलियुगी, पतित एवं भ्रष्टाचारी सृष्टि का महाविनाश हो जाएगा। अत: ज्ञान-दृष्टि से देखा जाए तो अभी तक जो कुछ हुआ है वह आने वाली आपदाओं और घटनाओं की भेंट में कुछ भी नहीं है। हम इन घटनाओं के अतिरिक्त यह भी देख रहे हैं कि सतयुग के सुहावने दिन शीघ्र ही आने वाले हैं क्योंकि परमपिता परमात्मा द्वारा न केवल अधर्म के विनाश की बल्कि सत्धर्म की स्थापना की भी तैयारियाँ हो रही हैं।

ये जो घटनायें घटी हैं अथवा घटित हो रही हैं, ये मनुष्य की हिंसा, क्रोधाग्नि, लोभ-वृत्ति इत्यादि की सूचक हैं और ईश्वर-विमुखता की परिचायक हैं। दिन प्रतिदिन विकराल परिस्थितियों का होना ही सिद्ध करता है कि मनुष्य अत्यंत पतित हो गया है। यह जो अन्न का और धन का संकट भारत में है, यह यहाँ के लोगों की योग-भ्रष्ट और विकारी अवस्था ही का संकेतक है क्योंकि रंक को राजा और नर को नारायण बनाने वाले दयालु परमात्मा से योगयुक्त हुए लोगों की तथा श्रेष्ठाचार वाले समाज की तो ऐसी गति कभी भी नहीं हो सकती।

अत: आप और हम कर्म की गहन गति को, वर्तमान कलियुगी सृष्टि के भावी महाविनाश को, सतयुगी सृष्टि की निकट भविष्य में पूर्ण होने वाली स्थापना को, परमपिता परमात्मा के वर्तमान काल में हुए अवतरण के रहस्यों को भलीभाँति जान कर अपने जीवन को कल्याण के लिए ईश्वरीय शिक्षा के आधार पर पवित्र बनाने के पुरुषार्थ में लगे हुए हैं। हम जान चुके हैं कि पवित्रता के बिना न तो व्यक्ति का कल्याण है और न ही विश्व को सुख और शान्ति प्राप्त हो सकती है। हमने अपने जीवन का लक्ष्य ही यह बना लिया है कि परमपिता शिव परमात्मा नित्य प्रति प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा जो ज्ञान देते हैं, जिसको ही सच्चे अर्थ में 'श्रीमद्भगवद्गीता' अर्थात् भगवान के श्रेष्ठ ज्ञान-गीत कहा गया है, उनको हम अधिकाधिक धारण करें और दूसरों को भी उनसे परिचित करायें ताकि वे भी लाभ उठा सकें अर्थात् अपने जीवन को पवित्र करके मुक्ति और जीवनमुक्ति की प्राप्ति के लिये पुरुषार्थ कर सकें।

इसी लक्ष्य की पूर्ति के लिए यह ''पवित्रता अंक'' प्रकाशित किया गया है। इसमें आपको बहुत ही अनमोल ज्ञान-रत्न मिलेंगे। भिन्न-भिन्न शीर्षकों वाले इन सभी लेखों का उद्देश्य मनुष्य को काम, क्रोध इत्यादि विकारों पर विजय प्राप्त करने के योग्य बनाना ही है। इस प्रकार के लेख आपको भविष्य में भी ''ज्ञानामृत'' में मिला करेंगे।

विश्व नव-निर्माण प्रदर्शनी

आप जानते हैं कि यह पवित्रता अंक तो एक छोटा-सा प्रयत्न है। इसके अतिरिक्त अन्य अनेक विधियों से भी जनता की आध्यात्मिक सेवा में हम लोग लगे रहते हैं। अब प्रदर्शनी द्वारा भी ईश्वरीय सेवा की जा रही है।

(शेष..पृष्ठ 38 पर)

सम्पादकीय

स्वर्ण जयन्ती तक का सफर

आदि देव पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा और आदि देवी मातेश्वरी जगदम्बा के वरद हस्तों से प्रारम्भ हुई ज्ञानामृत पत्रिका ईश्वरीय सेवा का लम्बा सफर तय करते हुए 50वें वर्ष में प्रवेश कर गई है। सन् 1969 तक बाबा ने व्यक्तिगत रूप से भी और मुरलियों के माध्यम से भी 'ज्ञानामृत' को खूब मार्गदर्शन दिया। वे हर पत्रिका का बड़े ध्यान से अवलोकन करते थे और अपनी अमूल्य सम्मति देते थे।

विचार सागर मन्थन का महत्व

सन् 1965 के मार्च महीने में इसका पहला अंक छपा, एक प्रति की कीमत मात्र 60 पैसे थी। हम जानते हैं कि जन्मते ही बच्चे की प्रथम आवश्यकता है दूध। दूध सम्पूर्ण आहार माना जाता है। शरीर की वृद्धि के लिए ज़रूरी सभी पौष्टिक तत्व उसमें रहते हैं। कुछ समय के बाद दूध के अलावा फलों का रस, दाल का पानी, पतला दलिया आदि-आदि पचने योग्य चीज़ें भी बच्चे को दी जाने लगती हैं। इसके बाद अधिक तीव्र शारीरिक विकास के लिए थोड़े अधिक पौष्टिक पदार्थ भी बच्चा खाने लगता है। ईश्वरीय गोद में नया जन्म लेने वाले यज्ञ-वत्सों के लिए भी मुरली, दूध की तरह पहली खुराक है परन्तु आध्यात्मिक जीवन में तीव्र विकास के लिए, मुरली में बोले महत्वपूर्ण विषयों पर मनन करने की भी बहुत आवश्यकता है। मनन-मंथन का महत्व बताते हुए बाबा कहते हैं कि इससे आत्मा व्यर्थ से बची रहती है और अतीन्द्रिय आनन्द में डूबी रहती है। क्रमबद्ध ज्ञान-बिन्दु किसी विषय विशेष की तह तक पहुँचाने में बड़े सहायक होते हैं। मानव समाज के विभिन्न क्षेत्रों के सत्य ज्ञान में हुई मिलावट को निकाल फेंकने के लिए शास्त्र प्रसिद्ध समुद्र मंथन की तरह विचार सागर मन्थन अनिवार्य है ताकि अमृत और जहर अलग-अलग किया जा सके। मन्थन से प्राप्त अमृत बिन्दुओं द्वारा जन-जन का सशक्तिकरण करने के निमित्त 'ज्ञानामृत' के प्रथम सम्पादक और प्रकाशक बने आदरणीय भ्राता जगदीश जी। उन द्वारा रचित साहित्य मुरली रूपी दूध के साथ-साथ उस पौष्टिक खुराक का काम करता है जिससे आत्मा सबल बनती है।

भ्राता जगदीश जी को मिला वरदान

आपका जन्म 10 दिसम्बर, 1929 को मुलतान (वर्तमान समय पाकिस्तान) में हुआ। बाल्यकाल से

ही आपकी आध्यात्मिकता में गहन रुचि थी। इसी अभिरुचि को तृप्त करने के लिए आपने भारतीय दर्शन, वैदिक संस्कृति एवं विश्व के विभिन्न धर्मों का गहन अध्ययन किया। सन् 1953 में आपने ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त किया। आप बहुत ही बुद्धिशाली थे। जब पहली बार आप पिताश्री ब्रह्माबाबा के तन में अवतरित परमपिता परमात्मा शिव से मिले तो बाबा ने आपको वरदान दिया, 'यह बच्चा ईश्वरीय ज्ञान को अच्छी तरह समझकर दूसरों तक पहुँचाएगा, लिखेगा'। तब से आप ईश्वरीय साहित्य की रचना में पूरे समर्पण भाव से लग गए। आपने 200 से भी अधिक हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू भाषाओं में पुस्तकें लिखीं। प्यारे बाबा बार-बार आपको सम्मुख बुलाते और प्यार, दुलार के साथ-साथ मार्गदर्शन देते।

बाबा-मम्मा से आपने बहुत ही समीपता भरी पालना पाई। जब ज्ञानामृत का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ तब देहली के कमला नगर क्षेत्र में छोटा-सा सेवाकेन्द्र था और पत्रिका की छपाई बाहर की प्रेस में करानी पड़ती थी। कभी साइकिल पर और कभी कन्धों पर भी सामान उठाकर दिल्ली की सड़कों पर कार्य के लिए घूमना पड़ता था। ईश्वरीय ज्ञान तथा सहज राजयोग पर शोध कर-करके उसकी सरल और सुरुचिपूर्ण शब्दों में व्याख्या कर जन-जन तक पहुँचाने में आप अथक होकर लगे रहे, इसी अर्थ में बाबा ने आपको यज्ञ-सेवा में हड्डी-हड्डी स्वाहा करने वाले 'दधीचि ऋषि' कहा। आपकी बुद्धि की दिव्यता को देखते हुए महाभारत में प्रसिद्ध 'संजय' नाम दिया और 'गणेश' की उपाधि से भी विभूषित किया। आप 'ज्ञानामृत' के साथ-साथ 'वर्ल्ड रिन्युवल' तथा 'प्योरिटी' के प्रधान सम्पादक रहे।

समय-समय पर अनेक विशेषांक

सन् 1965 से सन् 1978 तक के ज्ञानामृत के अंकों में ईश्वरीय ज्ञान के आधारभूत विषयों पर कई विशेषांक निकाले गए। अप्रैल 1966 का अंक था 'लक्ष्य और मार्ग' अंक। इसमें मानव जीवन का लक्ष्य 'मुक्ति या जीवनमुक्ति' और उसके लिए मार्ग कौन-सा 'प्रवृत्ति या निवृत्ति (संन्यास)' – इस सम्बन्ध में लेख रहे। मई, 1966 के अंक को 'आत्मा अंक' नाम दिया गया। इसमें 'मैं कौन हूँ', 'स्वयं को शरीर मानने की भूल कैसे हुई', ' क्या मनुष्यात्मा पुनर्जन्म लेती है?' आदि प्रश्नों को सुलझाया गया। जून, 1966 के अंक को 'परमात्मा अंक' नाम दिया गया और परमात्मा पिता का सत्य परिचय, उनका अवतरण, उनके कर्तव्य, सर्वव्यापकता आदि विषय इसमें शामिल किए गए। फरवरी, 1967 का अंक 'पवित्रता अंक' रहा जिसमें काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि विकारों को जीतकर पवित्र बनने की युक्तियाँ समझाई गई थी। मई, 1967 का अंक 'शान्ति' विशेषांक था। जुलाई-अगस्त, 1968 तथा नवम्बर, 1968 के अंक 'साप्ताहिक पाठ्यक्रम विशेषांक' निकाले गये। जुलाई-अगस्त, 1969 'दिव्यगुण विशेषांक' रहा। जनवरी-फरवरी, 1975 में 'जीवन कहानी विशेषांक' निकाला गया। जुलाई-अगस्त, 1976 में 'वृत्ति, प्रवृत्ति और कर्म विशेषांक' निकाला गया। सितंबर, 1977 का अंक 'भगवद्गीता का सच्चा सार' विषय पर था। इस अवधि में निकाले गए विशेषांकों के माध्यम से सभी नए, गहन और महत्वपूर्ण विषयों पर प्रकाश डाल दिया गया जिससे भाई-बहनों को साप्ताहिक कोर्स कराने, भाषण करने तथा नए जिज्ञासुओं के प्रश्नों के उत्तर देने अर्थ मार्गदर्शन मिलता रहा।

प्रारम्भ में हिन्दी लेखकों का अभाव

यहाँ एक बात विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि इस अवधि के अंक चाहे वे विशेषांक रहे या साधारण अंक, आदरणीय भ्राता जगदीश जी द्वारा ही लिखे गए। भले ही उन्होंने लेखक के रूप में अपना नाम न देकर अलग-अलग वरिष्ठ बहनों के नाम दिए परन्तु लिखते वे स्वयं ही थे। कुछ गिने-चुने वरिष्ठ भाइयों (आदरणीय भ्राता रमेश शाह, आदरणीय भ्राता बृजमोहन, कवि रामऋषि शुक्ल आदि) का लेखों और कविताओं के रूप में कुछ योगदान होता था पर उस समय तक ज्ञानामृत के लिए हिन्दी लेखकों का अभाव ही था। इस कारण लिखना, प्रूफ देखना आदि सभी कार्य भ्राता जगदीशचन्द्र जी द्वारा ही सम्पन्न किए जाते थे। सन् 1982 में भ्राता जगदीश जी की जिम्मेवारियाँ बहुत बढ़ गई इसलिए मुझे उनके साथ सम्पादक नियुक्त किया गया।

साहित्यिक रुचि वाले भाई-बहनों का योगदान

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की जन-सेवाओं की वृद्धि की दृष्टि से आठवाँ दशक सफल काल था। इस समय तक ईश्वरीय सेवा की बहुत वृद्धि हो चुकी

थी। देश-विदेश में अनेक नए-नए तरीकों से जन-जन को ईश्वरीय ज्ञान दिया जाने लगा था। सन् 1982 के अन्त तक इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लगभग 850 सेवाकेन्द्र और उपसेवाकेन्द्र थे। भारत से बाहर 35 देशों में 70 सेवा-स्थान खुल चुके थे। अनेक बुद्धिजीवी और हिन्दी भाषा के माहिर विद्यालय के नियमित विद्यार्थी बन चुके थे। वे अपने कला-कौशल को, अपनी योग्यताओं को, तन-मन-धन को मानवता के उत्थान के लिए ईश्वरीय सेवा में लगाने लगे थे। कुछ साहित्यिक रुचि वाले भाई-बहनें लेख-कविताएँ भी भेजने लगे थे। इस सहयोग के कारण सम्पादक भ्राता जगदीश जी अन्य बेहद की सेवाओं के लिए समय दे सकते थे। अब ज्ञानामृत में उनकी भूमिका सम्पादकीय लिखने और मार्गदर्शन देने की थी, शेष कार्य हमारी टीम ने सम्भाल लिया था।

ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस की स्थापना

जैसा कि हम पहले लिख आए हैं, पहले छपाई बाहर की मशीनों से होती थी। सन् 1986 में दादियों के आशीर्वाद और मार्गदर्शन से कृष्णा नगर सेवाकेन्द्र के साथ लगते मकान में छपाई की छोटी-सी मशीन लगाई गई जिसका नाम रखा गया 'ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस'। इससे बाहर छपाई कराने में जो समय और शक्ति

शान्तिवन स्थित ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस तथा ज्ञानामृत भवन

लगती थी उसकी बचत होने लगी और कार्य भी तीव्र गति से बढ़ा। कुछ समय बाद वह स्थान भी छोटा पड़ने लगा और बड़े स्थान की खोज की जाने लगी। उन्हीं दिनों प्यारे बापदादा और वरिष्ठ भाइयों की यह श्रेष्ठ मत मिली कि आबू रोड, तलहटी (वर्तमान में शान्तिवन) में प्रेस को स्थानान्तरित किया जाए। सन् 1992 में यह कार्य भी सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ (अब प्रेस का और बड़ा भवन उदयपुर-अहमदाबाद हाइवे पर निर्माणाधीन है)। जब दिल्ली से शान्तिवन आए थे तब ज्ञानामृत प्रतियों की संख्या मात्र 35 हजार थी। अब यह बढ़कर 3 लाख 15 हजार हो गई है। सप्ताह भर के समय में इतनी प्रतियाँ तैयार हो जाती हैं।

जन-जन की सेवक 'ज्ञानामृत'

पिछले 50 वर्षों से 'ज्ञानामृत' जन-जन की सेवा कर रही है। भारत के निम्न, मध्यम और उच्च वर्ग – सभी के दिल को इसने छुआ है। अपने में विविधता को समेटे यह हर धर्म वाले को, हर उम्र वाले को उपयोगी लगती है। अपनी सरल और सरस भाषा से सहज दिल में उतर जाती है। ज्ञान की गहराई तथा दिव्य रमणीकता दोनों का सुन्दर सन्तुलन दर्शाती है। देश-विदेश के सेवा समाचारों के साथ-साथ हर विशेष दिन तथा हर विशेष पर्व का आध्यात्मिक रहस्य भी इसमें भरा रहता है। इसमें छपने वाले विविध जीवन-अनुभवों तथा सफलता की जीवन्त कहानियों से पाठक स्वयं भी प्रेरित होते हैं और दूसरों को भी प्रेरित करते हैं।

इलैक्ट्रोनिक मीडिया के इस युग में भी इसकी उपयोगिता बराबर बनी हुई है। दिनोंदिन, बिना किसी विशेष प्रयास के इसका प्रसार बढ़ता ही जा रहा है। आने वाले समय में यह ईश्वरीय कार्य की सम्पूर्णता में अधिकाधिक सहयोगी बने, यही हमारा विनम्र प्रयास है।

– ब्र.कु. आत्म प्रकाश

ईश्वरीय कारोबार में आदर्श व्यवस्था संपन्न करने की ज़रूरत – 9

❊ ब्रह्माकुमार रमेश, मुंबई (गामदेवी)

पिछले लेख में हमने श्रेष्ठ ईश्वरीय कारोबार के लिए आवश्यक गुण 'समर्पणता' के बारे में विचार किया। मैनेजमेन्ट सिखाने वाले गुरुओं का दूसरा विषय है - Devotion जिसे हिंदी में श्रद्धा, लगन, भक्ति या निष्ठा कहते हैं अर्थात् जो भी कार्य हम करें उस कार्य के प्रति पूर्णरूपेण श्रद्धा-विश्वास हो। जो कार्य करें वह पूरी लगन तथा दिल से करें। जब तक हमारे मन में किसी भी कार्य के प्रति संशय होता है या उसमें हमारा पूर्ण विश्वास नहीं होता है तो वह कार्य श्रेष्ठ रीति संपन्न नहीं होता है।

शास्त्रों में भी ऐसी ही बातें लिखी गई हैं। श्रीमद् भगवद्गीता में अर्जुन की मनोदशा चित्रित की गई है कि जब महाभारत का युद्ध शुरू हो रहा था तब अर्जुन के मन में यही दुविधा थी कि युद्ध करे या न करे क्योंकि उसके सामने युद्ध के मैदान में उसके परिजन व वरिष्ठजन थे इसलिए वह बहुत हताश व निराश था। वह युद्ध करना नहीं चाहता था इसलिए उसने शस्त्र त्याग दिये तो श्रीकृष्ण ने उसे पहले ही श्लोक में कहा कि मेरे में सम्पूर्ण निश्चय रखकर कर्मफल की इच्छा न रखते हुए तुम युद्ध करो तो तुम्हें सफलता मिलेगी। इस प्रकार ज्ञान मिलने के बाद अर्जुन ने कहा कि अब मैं सम्पूर्ण नष्टोमोहा व निश्चयबुद्धि बन गया हूँ इसलिए युद्ध करूंगा। इस प्रकार अर्जुन ने श्रीकृष्ण के वचनों पर पूर्ण श्रद्धा रखकर युद्ध किया और सफल हो गया।

इसी प्रकार अंग्रेजी साहित्य में हैमलेट का एक पात्र है। उसके सामने भी यही प्रश्न था कि यह करूँ या ना करूँ? इसमें वह मूँझ गया क्योंकि उसके पास श्रीकृष्ण जैसा कोई मार्गदर्शक नहीं था जो उसका मार्गदर्शन करता इसलिए वह असफल हो गया। अगर हम अपने जीवन में हर कार्य श्रद्धा, लगन एवं दृढ़ निश्चय से करते हैं तो सफलता अवश्य ही मिलती है।

बचपन में मैंने एक कहानी पढ़ी थी कि एक बार एक गाँव में अकाल पड़ा, गाँव के लोगों ने तय किया कि वे यज्ञ करेंगे। जब यज्ञ शुरू हुआ तब एक आदमी वहाँ छाता लेकर आया। उसे देखकर सब लोग हँसने लगे कि अभी तो बारिश के लिए यज्ञ ही कर रहे हैं और यह तो छाता भी ले आया। उस आदमी से जब पूछा गया तो उसने उत्तर दिया कि जब आप बारिश के लिए यज्ञ कर रहे हो तो बारिश तो आयेगी पर जब वापिस जायेंगे तो उसी समय छाता कहाँ से लायेंगे? फिर उसने कहा कि आप लोगों को अपने ही कार्य में जब पूर्ण श्रद्धा नहीं है तो सफलता कैसे मिलेगी? जब आप एक ही लक्ष्य प्रति सम्पूर्ण श्रद्धा से कार्य करेंगे तब ही सफलता मिलेगी।

शास्त्रों में मिसाल है कि एक राजा के पास एक पंडित था उसका नाम कुमारिल भट्ट था। राजा को संशय था कि वेद अपौरुषेय नहीं हैं परंतु पंडित कुमारिल भट्ट का कहना था कि वेद अपौरुषेय हैं। राजा ने उसे कहा कि अगर सचमुच वेद अपौरुषेय हैं तो आप चार मंजिल इमारत से छलांग लगाओ। इतनी ऊँचाई से गिरने के बाद भी तुम्हें कुछ नहीं होता हैं तो मैं मानूँगा कि वेद अपौरुषेय हैं। कुमारिल भट्ट ने छलांग लगाई और उसके दोनों पैर टूट गये तो उसे भी वेदों के अपौरुषेय होने के बारे में संशय हुआ और उसने भगवान से प्रार्थना की कि हे भगवान, मेरे साथ ऐसा क्यों हुआ? उसी समय एक आकाशवाणी हुई कि वेद अपौरुषेय हैं, इसमें तुम्हारी पूर्ण श्रद्धा नहीं थी इसलिए तुमने भगवान से कहा कि हे भगवान, अगर वेद अपौरुषेय हैं तो मुझे कुछ भी नहीं होना चाहिए। तुम्हारे

इस 'अगर' शब्द ने तुम्हारे मन के संशय को व्यक्त कर दिया और परिणामस्वरूप तुम्हारे दोनों पैर टूट गये। इस बात से हमें सबक मिलता है कि कोई भी कार्य करना है तो उसमें सम्पूर्ण निश्चय एवं श्रद्धा रखनी चाहिए।

प्यारे बाबा के यज्ञ में हर ईश्वरीय कार्य में सदा ही सफलता मिलती है। फिर भी हमें तब तक पूर्ण निश्चय नहीं होता जब तक वह कार्य सम्पन्न नहीं हो जाता। यज्ञ के प्रारंभ के दिनों में शिवबाबा और ब्रह्मा बाबा अलग-अलग हैं, यह सिद्ध करने के लिए शिवबाबा ने जो अलग रथ चुना उनका नाम था दादी पुष्पमणि। उनके तन में शिवबाबा लगातार 15 दिन आते रहे। एक बार दादी पुष्पमणि जी खटिया पर सोई हुई थी और बाहर कमरे में मातेश्वरी जी और दीदी मनमोहिनी जी चर्चा कर रहे थे और सोच रहे थे कि यह पुष्पमणि के तन में आया हुआ कौन है? ऐसा सोचते ही दादी पुष्पमणि के तन में शिवबाबा ने प्रवेशता की और कमरे से बाहर आकर कहा कि जब आपका ही मेरे में निश्चय नहीं है तो आप दूसरों को मेरे बारे में क्या समझायेंगे? आपके मन में जो यह संशय है कि शिवबाबा और ब्रह्मा बाबा एक हैं या अलग हैं, उसे दूर करने के लिए मैंने इस तन का आधार लिया। मैं आपको भविष्य की योजनाओं के बारे में बताना चाहता हूँ परंतु जब तक आपका मेरे में निश्चय नहीं होगा तब तक मैं आपको कैसे बताऊँ? मातेश्वरी जी और दीदी ने तुरन्त शिवबाबा से माफी मांगी और उसके बाद से उन्होंने शिवबाबा पर पूर्ण निश्चयबुद्धि होकर हर कार्य किया। उन दोनों का शिवबाबा में अटल निश्चय देखकर बाकी सभी ब्रह्मावत्स भी निश्चयबुद्धि बन गये और उसी अनुसार सभी ने यज्ञ सेवा की। भावार्थ यह है कि जब तक हम बाबा में सम्पूर्ण निश्चय या श्रद्धा नहीं रखते तब तक हमें सम्पूर्ण सफलता प्राप्त नहीं होती।

एक बार मैं आबू में था तब मातेश्वरी जी दिल्ली आदि स्थानों पर सेवा करके वापस आबू आये थे। उन्होंने उस समय हापुड़ में चल रही समस्याओं के बारे में बताया। एन्टी पार्टी ने हापुड़ में बहुत-सी समस्यायें खड़ी कर दी थीं जैसे कि पानी बंद कर दिया था, आवश्यक सामान खरीदने नहीं देते थे आदि-आदि तथा बलदेव भाई पर उन लोगों ने साँप डाल दिया था। यह सब सुन मेरे मन में प्रश्न उठा कि ऐसे स्थान पर कैसे सेवा करें? तो मैंने प्यारे ब्रह्मा बाबा से पूछा कि बाबा ये सब समस्यायें सुनते हुए आपको संशय नहीं आता कि स्थापना का कार्य कैसे होगा? ब्रह्मा बाबा ने बहुत सुन्दर उत्तर दिया कि बच्चे, मुझे ड्रामा में पूर्ण निश्चय है कि 5000 वर्ष पहले जैसे यज्ञ की स्थापना हुई थी ठीक वैसे ही अभी भी हो रही है इसलिए मुझे कोई संशय नहीं आता है। मुझे यह पूर्ण निश्चय है कि हर कार्य में सफलता हुई पड़ी है। यह उत्तर सुनकर उस समय से मैंने भी ड्रामा में पूर्ण श्रद्धा रखी।

सन् 1971 में हम छह डेलीगेट्स (दादी शीलइन्द्रा, जगदीश भाई, डॉ. निर्मला, रोजी बहन, ऊषा जी तथा मैं) विदेश सेवा पर जाने अर्थ विदाई लेने मधुबन आये थे। विदाई के समय अव्यक्त बापदादा ने यही कहा कि बच्चे, मैंने आप लोगों के लिए वहाँ सब तैयारी कर रखी है, आप को तो वहाँ केवल स्वीच ऑन करने जितनी मेहनत करनी है। भारत सरकार ने उस समय हममें से हरेक को केवल 6 डॉलर ले जाने की परमिशन दी थी और हम बाबा की श्रीमत पर पूर्ण श्रद्धा रख उस 6 डॉलर से पूरे विश्व की सेवा करने निकले थे। जब मुम्बई से हवाई जहाज से निकले तो एयर होस्टेस ने सभी को हैडफोन दिया। जगदीश भाई जी ने सोचा कि कुछ गीत आदि सुनेंगे परंतु उसके लिए एयर होस्टेस ने 3 डॉलर मांगे। जगदीश भाई ने मुझसे पूछा कि गीत सुनें? मैंने कहा कि हमारे पास सिर्फ 6-6 डॉलर हैं और उनमें से 3 डॉलर अगर गीत सुनने के लिए खर्च करेंगे तो बचे हुए 3 डॉलर में हम कैसे काम करेंगे।

ब्रुसेल्स में जब हम पहुँचे तब वहाँ

पर दो वर्ष पूर्व इन्टरनेशनल योगा की जो कॉन्फ्रेन्स हुई थी उन लोगों से हमने सम्पर्क किया और वहाँ से हम लंदन गये। लंदन में इतनी सेवा थी जो चार डेलीगेट्स लंदन में रहे तथा मैं और निर्मला बहन न्यूयॉर्क गये। न्यूयॉर्क में हम मेरे एक मित्र के घर गये। उस समय Awosting Retreat की कॉन्फ्रेन्स में हमें भाग लेना था। कॉन्फ्रेन्स का स्थान उनके घर से 180 मील दूर था। उस दिन रविवार था इसलिए मेरे मित्र ने हमें ऑस्टिंग रिट्रीट के कॉन्फ्रेन्स के स्थान पर छोड़ दिया। हमें बाबा पर पूर्ण विश्वास था कि हमें वापिस आने का प्रबंध मिल जायेगा। वहाँ एक भाई हमें मिला, उसने हमें कहा कि मैं आपकी मुम्बई की प्रदर्शनी में आया था और आपने मुझे इस कॉन्फ्रेन्स का निमंत्रण दिया था। फिर वह भाई चार दिन हमारे साथ ही रहा और उसने हमें वापिस भी छोड़ दिया। उस भाई ने ही बाद में हॉल आदि ढूँढ़ने में हमारी मदद की। प्रदर्शनी के लिए हॉल देखने जब गये तो हॉल की मालिक बहन को हमने कहा कि हमें प्रदर्शनी करनी है तो उस बहन ने कहा कि इस हॉल का एक दिन का किराया 300 डॉलर है फिर उस बहन ने हमसे पूछा कि आपको कितने दिन यह प्रदर्शनी करनी है, तो मैंने भी निश्चय से कहा कि 11 दिन करनी है और उस समय हमारे पास 10 डॉलर ही थे। फिर उस बहन ने हमसे पूछा कि आप प्रदर्शनी देखने वालों से हरेक से कितनी फीस चार्ज करेंगे? हमने कहा कि हम तो ईश्वरीय सेवा कर रहे हैं इसलिए हम किसी से कुछ भी चार्ज नहीं करेंगे। हमें हमारे शिवबाबा ने किसी से कुछ भी मांगना नहीं सिखाया। बाबा ने कहा है कि बच्चे, आप दाता के बच्चे देवता हो इसलिए आप किसी से मांग नहीं सकते। यह सुनकर उस बहन ने कहा कि जब आप फ्री सेवा करेंगे तो मैं आपसे कैसे किराया ले सकती हूँ। आपसे किराया लूँगी तो मेरे देश की इज्जत जायेगी और मैं अपने देश की इज्जत नहीं गँवाना चाहती हूँ। उस बहन ने हमें उस हॉल की चाबी दी और कहा कि आपको जितने दिन प्रदर्शनी करनी है, आप कर सकते हैं। इसके बाद प्रदर्शनी के लिए हमें टेबल की जरूरत थी तो हमने फर्नीचर वालों के साथ बात की तो उन्होंने कहा कि 1 टेबल का एक दिन का किराया 1 डॉलर है। हम बाबा के महावाक्यों पर निश्चय रखकर उस भाई के मालिक के पास गये और उन्हें प्रदर्शनी का उद्देश्य बताया तो उस भाई ने भी हमें 11 दिनों के लिए फर्नीचर फ्री में दिया, साथ में टेबलक्लॉथ भी दिया। उसके बाद हमें कार्ड छपवाने थे तो हम प्रिंटिंग प्रेस में गये। उसने 500 कार्ड के 9 डॉलर लिये, उसे भी हमने फ्री कराने का प्रयत्न किया परंतु वह नहीं हो सका। दूसरे दिन अमृतवेले मैंने बाबा को कहा, बाबा, सब काम आपने फ्री करा दिये फिर इसमें पैसे क्यों लगे? सूई की नोंक से सारा ऊँट निकल गया परंतु पूँछ उसमें अटक गई। ऐसे तो बाकी सब मुफ्त में मिल गया लेकिन कार्ड छपवाने के 9 डॉलर क्यों लगे? बाबा बहुत ही सुन्दर मुसकराये और कहा कि यह सब कार्य ईश्वरीय शक्ति के आधार से हो रहे हैं यह समझाने के लिए ये 9 डॉलर का खर्चा हुआ। अगर मेरा सहयोग नहीं होता तो यहाँ आपको कितना खर्चा करना पड़ता था इसका अनुभव कराने के लिए मैंने ऐसा किया।

उसके बाद हमारे 4 अन्य डेलीगेट्स भी न्यूयार्क आये, प्रदर्शनी सफल हुई। इस प्रकार सफलता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार हैं परन्तु आवश्यकता है कि हमारा परमात्मा में दृढ़ निश्चय, दृढ़ विश्वास हो। ईश्वरीय सेवा में सदा यह निश्चय रखें कि यह कार्य परमात्मा का है, हम निमित्त बनकर कार्य कर रहे हैं।

बाबा के बताये इस सिद्धांत का प्रयोग लौकिक दुनिया के कारोबार में भी करेंगे तो वहाँ भी सफलता मिलेगी। बाबा के बच्चों के दृढ़ निश्चय के हजारों मिसाल हैं जिनमें सफलता मिली है। ऐसे अनुभवों की पूरी किताब बन सकती है। जिन भी भाई-बहनों ने बाबा में सम्पूर्ण निश्चय रखकर ऐसी सफलता प्राप्त की है उन्हें मेरा शत शत प्रणाम! ❖

आवरण पर आवरण

❊ ब्रह्माकुमारी उर्मिला, संयुक्त संपादिका

भारत की आजादी के आन्दोलन के दौरान एक बार महात्मा गांधी जी उड़ीसा के दौरे पर थे। वहाँ उन्हें एक महिला देखने में आई जिसके कपड़े बहुत मैले थे। बापू ने बा को उस महिला से मिलने और स्वच्छता का पाठ पढ़ाने के लिए भेजा। महिला ने अपनी समस्या बताई कि कपड़े बदलने के लिए दूसरे कपड़े हैं ही नहीं, स्वच्छता कैसे अपनाई जाए। बापू को जब यह समाचार दिया गया तो उन्हें बहुत दुख हुआ। उन्होंने उस समय प्रण किया, जब तक इस देश के हर नागरिक को आवश्यकतानुसार कपड़े नहीं मिल जाते, बापू भी न्यूनतम आवश्यकता पूर्ति के लिए कपड़े पहनेंगे और उन्होंने इस प्रण को निभाया। जब एक बच्चे ने बापू को पत्र लिखा, बापू, मेरी माताजी कोट बहुत अच्छा सिलाई करती हैं, आपके पास सर्दी में पहनने के लिए कोई कोट नहीं है, आप कहें तो एक सिलवा दूँ। बापू ने उत्तर दिया था, मेरे 35 करोड़ भारतीय भाइयों में से प्रत्येक के लिए कोट उपलब्ध करवा सकते हो तो मैं भी पहन लूँगा।

वनमानुष संस्कृति

बापू और बापू के साथी, सहयोगियों के देशप्रेम, सादगी, अहिंसा, त्याग, दया, सत्य के बल से भारत आज़ाद हुआ, विकसित भी हुआ। आज देश में हर प्रकार का कपड़ा बनता है और निर्यात भी होता है परन्तु अफसोस की बात है कि हर शहर में सैकड़ों दुकानें कपड़े की होते भी हमारी माताओं, बहनों के कपड़े छोटे होते जा रहे हैं। इतिहास कहता है, सभ्यता के विकसित होने के कुछ समय पहले के दौर में मानव वनमानुष था। जंगलों में रहता था, कच्चा मांस खाता था, वृक्षों की छाल से जैसे-तैसे तन ढकता था। धीरे-धीरे हम सभ्य बने। हथकरघे से कपड़ा बुना जाने लगा और मानव तन ठीक से ढका जाने लगा। वनमानुष संस्कृति को पार कर सभ्य मानव बनने के सफर में अन्य बातों के साथ-साथ शालीन पोशाक की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका है। आज यदि हम शालीन पोशाक के मानदण्ड को भुलाकर कीटाणुओं और रोगों से भरी त्वचा के प्रदर्शन में मन-बुद्धि को लगा रहे हैं तो यह भी उसी वनमानुष संस्कृति की ओर लौटने का एक कदम ही जान पड़ रहा है।

वनमानुष ही क्यों? हमारे चारों तरफ घूमने वाले जानवरों में से कोई कपड़े नहीं पहनता। मानव सर्वश्रेष्ठ प्राणी है तो प्रकृति ने उसे श्रेष्ठ से श्रेष्ठ साधन भी उपलब्ध करवाए हैं ताकि वह उनका आनन्द ले। पर यदि हम प्राप्त साधनों की उपेक्षा कर, मानवीय मर्यादाओं की रेखा से बाहर निकलते हैं तो पशु संस्कृति की तरफ आकर्षित-से होते नज़र आते हैं।

या तो दब्बू या उच्छृंखल

थोड़े दिन पहले अखबार में एक लेख आया था, 'नज़र तेरी खराब और बुर्का मैं पहनूँ'। नारी को किसी की कुदृष्टि के कुठाराघात से बचाने के लिए समाज में पर्दाप्रथा चली। यह निश्चित रूप से उस पर अत्याचार था। उसके अधिकारों का हनन था। आज के जागरूक समाज में पर्दाप्रथा, कुछ ग्रामीण क्षेत्रों को छोड़कर, लगभग समाप्त हो चुकी है। नारियाँ खुली हवा में सांस ले सकती हैं। और भी कई अधिकार जो काल प्रवाह में उससे छीन लिए गए थे, आज उसको प्राप्त हैं, यह खुशी की बात है। बीते काल में सामाजिक अंकुश लगे तो इतने कि हमें खुली हवा में सांस भी नहीं लेने दिया गया और सामाजिक अंकुश हटे तो हम इतने लापरवाह हो गए कि शालीन पोशाक की सीमा ही पार करने लगे। असन्तुलन की इन दोनों स्थितियों में हमारा आदर्श और सम्पूर्ण व्यक्तित्व तो निखर ही नहीं

पाया। पहली स्थिति में हम में अधीन रहने और दबने के संस्कार विकसित हुए और उस स्थिति से निपटते-निपटते इस युग में आए तो उच्छृंखल होने और शालीनता की मर्यादा लांघने के संस्कार बन गए, हम सन्तुलन में तो आ ही नहीं सके।

सूर्पनखा, भीलनी और सीता

रामायण में तीन नारी पात्र दिखाए गए हैं। सूर्पनखा, भीलनी और सीता। सूर्पनखा सर्व सामाजिक मर्यादाओं से मुक्त, मनमानी प्रकृति की है। सुन्दर पुरुष को देखते ही उसे काम का ज़हर चढ़ता नज़र आता है। मन को भा जाने वाले किसी भी नर के समक्ष अपनी कुटिल, काली, काम से रंगी भावनाएँ नि:संकोच व्यक्त कर देती है। परिवार की तरफ से भी उसे कोई बन्धन, रोक-टोक नहीं है। रामायण में श्रीराम ने सूर्पनखा के लिए कहा है, ''लज्जाविहीन नारी जब कामुक हो जाती है तो बहुत भयंकर हो जाती है।'' उसके लज्जाविहीन चाल-चलन पर रोक लगाने के बजाय उसका भाई रावण, श्रीराम पर ही क्रोधित होता है और बदला लेने की ठानता है। दूसरी पात्र हैं भीलनी जो राम-नाम रूपी पुष्प पर, मन रूपी भ्रमर के मंडराते हुए पूरा जीवन गुज़ारती है। राम की चहेती बनती हैं। पूर्ण आत्मिक जीवन जीती हैं। तीसरी पात्र हैं सीता जो भाग्य द्वारा सौंपी गई हर ऊँची से ऊँची नेमत से सुशोभित है। रूप, ऐश्वर्य, ऊँचा खान-दान सबके होते हुए भी आदर्श का नमूना हैं। सब कुछ प्राप्त होते हुए भी त्याग का साकार रूप हैं। बल के होते भी नम्रता की मूर्त हैं। सब प्रकार की स्वतन्त्रता होते भी शालीनता और मर्यादा का प्रत्यक्ष दर्शन हैं। प्रश्न यह है कि आज हम इन तीनों में से किसका अनुकरण करना चाह रहे हैं? यदि भीलनी की तरह जंगल में अकेले रह, भगवान के इन्तज़ार में जीवन खपा देना हमें वांछनीय नहीं है तो सूर्पनखा की तरह देह का जहाँ-तहाँ प्रदर्शन भी तो वांछनीय नहीं होना चाहिए।

मर्यादा रूपी किनारों के बीच बहें

हमारा आदर्श तो सीता है जिसमें भौतिक उपलब्धियों के साथ आध्यात्मिक गुणों का बराबर का समावेश है। यह है नारी का संतुलित जीवन। ना तो ज़बरदस्ती लादी गई साधना और ज़बरदस्ती पहनाई गई बेड़ियों की घुटन हो और न ही समाज की शालीनता और मर्यादा की धज्जियाँ उड़ा देने वाली उच्छृंखलता हो। जैसे नदी दो किनारों के बीच बहती है इसी तरह भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति का एक किनारा, आध्यात्मिक शक्तियों की धारणा का दूसरा किनारा, इन दोनों के बीच जीवन बहे, यही सन्तुलन है, जीवन की सुन्दरता है।

एक बार किसी ने हमसे पूछा, आप प्रतिदिन सफेद कपड़े पहनते हैं, बोर नहीं होते क्या, हम तो एक ड्रेस को कुछ दिन पहनने के बाद उससे बोर हो जाते हैं, मन करता है, इसे फेंक दें। हमने कहा, यह बोर होने की आदत अच्छी नहीं है। इस आदत के कारण आज हम कपड़े से बोर हुए, कल किसी नज़दीकी रिश्ते से भी बोर हो गए, तब क्या करेंगे? क्या कपड़े की तरह उसे भी फेंक देने की नौबत आ जाएगी? और फिर सोचने की बात यह है कि हमारी कई आदतें तो जन्म से हमारे साथ हैं, क्या हम उनसे बोर हुए? उस आदत को जीवन से निकाल फेंकने का दृढ़ निश्चय किया क्या? उदाहरण के लिए ज़ोर से बोलना, किसी पर गुस्सा करना, मूड खराब करना, अनुमान लगाना, ईर्ष्या करना, परचिन्तन करना – इन्हें भी तो हम बरसों से लादे हुए हैं। हम कपड़ों से तो दो मास में बोर हो गए पर आदतों से तो कई वर्षों में भी बोर नहीं हुए।

अपनी जाति से डर

हम देखते हैं कि कोई जानवर अपनी जाति से नहीं डरता, दूसरी जाति वाले से डरता है। चूहा, चूहे से नहीं डरता, बिल्ली से डरता है। खरगोश, दूसरे खरगोश से नहीं, कुत्ते से डरता है। लेकिन मानव अपनी जाति से डरता है। नर और नारी एक-

दूसरे से डरते हैं। इस डर का कारण है दैहिक दृष्टि। जब तक एक-दूसरे को दैहिक नज़रों से देखते रहेंगे, यह डर खत्म नहीं होगा। देह दृष्टि अर्थात् स्वयं को देह मानना। पहले तो व्यक्ति को केवल देह रूपी कपड़े का अभिमान था पर अब तो इस कपड़े पर चढ़े कपड़ों का भी खूब अभिमान होने लगा है। मध्यमवर्गीय परिवारों में अक्सर कपड़ों को लेकर महाभारत मचता है। घर की महिला यदि नए कपड़े की मांग करती है तो उससे पूछा जाता है कि कुछ दिन पहले लाकर दिया था, वह कहाँ गया? क्या वह फट गया? यदि वह कहती है, वह तो पिछले उत्सव में पहन लिया था और सबने देख लिया था, इस उत्सव में पहनने के लिए नया कपड़ा चाहिए, तो दिखावे के लिए किए जाने वाले इस खर्च को परिवार सह नहीं पाता, फिर कलह होती है। उस कलह के बाद यदि वह कपड़ा मिल भी जाए तो उसे प्रयोग करते समय कलह की कहानी तो मन में घूमती ही रहती है। कहा-सुनी से सना हुआ वह कपड़ा मन को कितना सुकून देगा, यह सोचने की बात है।

सुख विचारों में है, आवरणों में नहीं

विडंबना यह है कि हम नए कपड़े का दिखावा करना चाहते हैं पर नए विचारों का नहीं। हम नए-नए रंग-बिरंगे कपड़ों में सुख खोजते हैं परन्तु नए-नए ऊँचे, पावन विचारों में नहीं। नए कपड़े के लिए हम कलह झेल लेते हैं पर नए विचार तो हम सुलह में भी नहीं अपनाना चाहते। क्या यह शरीर और मन इन नश्वर पदार्थों के पीछे लटकाने के लिए ही मिले हैं? क्या इन्हें नश्वर पदार्थों से हटाकर ऊँचे उद्देश्य में नियोजित करने का कोई लक्ष्य नहीं है? यदि विचारों से प्राप्त आनन्द को लेना सीख जाएँ तो कपड़ों से बोर होने के लिए समय ही नहीं बचेगा। कपड़े तन ढकने की आवश्यकता पूर्ति के लिए हैं, बोर होने या उनमें प्रसन्नता खोजने के लिए नहीं। अध्यात्म कहता है, शरीर आवरण है। इसे भूल अपने मूल स्वरूप में टिकिए। इस आवरण की रक्षा और शालीनता के लिए चढ़ाए जाने वाले अल्पकालीन आवरणों को इज़्जत, मान और शान प्राप्ति का साधन मत बनाइये। आवरण पर चढ़े आवरण अर्थात् दोहरे आवरणों की गिरफ्त में फँसे अपने असली स्वरूप को पहचानिए। आत्म साक्षात्कार और परमात्म साक्षात्कार कीजिए। ❖

दुआओं से अभिषेक

ब्रह्माकुमारी राजकुमारी, मजलिस पार्क, देहली

''ज्ञानामृत'' है ज्ञान के अमृत का समन्दर,
सद्ज्ञान, सद्विवेक का भण्डार इसके अन्दर,
परमात्म प्रत्यक्षता का होता प्रस्फुटित इससे स्वर,
आती नव चेतना, नवजागृति सबको अहर्निश निरन्तर,
सर्व की भावनाओं के प्रकटीकरण का आधार,
नवीन रचनाओं, अनुभवों को निष्पक्ष करता स्वीकार,
महान विभूतियों के जीवन का करता चरित्र आंकन (चरित्रांकन),
देख सकते अठारह ही विंग्स का इसमें सर्वोत्तम आकलन,
आध्यात्मिकता का अनुपम, अद्वितीय दर्पण है समाज को अर्पण,
उदाहरणों-उद्धरणों-दृष्टान्तों और वरदानों का वर्णन,
है समय की पुकार, हे ''ज्ञानामृत''! तुम जुग-जुग जीओ।
आज मनाएँ स्वर्ण जयन्ती, कल को हीरक भी हो!!
पत्र-पत्रिकाएँ हैं जगत में यूँ तो अनेकानेक,
करें वैचारिक सुपरिवर्तन, शुभ भावनाओं का अतिरेक।
है मुबारक तुम्हें, सुकामनाओं-दुआओं से है अभिषेक।।

समय नहीं है

❊ ब्रह्माकुमार शिवराज, दहिसर (पू), मुंबई

'समय नहीं है' प्राय: यह वाक्य हमें हर किसी के मुख से कभी न कभी सुनने के लिए मिल जाता है और दिन में न जाने कितनी बार इस वाक्य का उपयोग किया जाता है। किसी के लिए यह एक सच्चाई, तो किसी के लिए महज बहाना होता है। वास्तव में समय का होना या न होना, किसी कार्य के प्रति हमारी प्राथमिकता या उपेक्षा को दर्शाता है। हम जिन कार्यों को प्राथमिकता देते हैं, उनके लिए हमारे पास पर्याप्त समय रहता है और जिन की उपेक्षा करते हैं उनके लिए कभी भी वक्त नहीं रहता है।

समय है सिर्फ भगवान के लिए

ईश्वरीय ज्ञान के आधार पर इस बात को हम सकारात्मक तरीके से लें, तो हमें लाभ ही लाभ होगा। 'समय नहीं है' यह वाक्य हम पाँच विकारों के विरुद्ध उपयोग में लाएँ। जब भी कोई व्यर्थ या अनावश्यक बात पास आने का प्रयास करे, तंग करे, तो 'समय नहीं है' इस वाक्य को दोहराएँ। इससे स्पष्ट होगा कि हम माया (विकार, विकृति) को कोई महत्व नहीं दे रहे हैं। सांसारिक जीवन में जब कोई कहता है, 'मेरे पास समय नहीं है' तो सामने वाला तुरंत पूछता है, 'फिर आपके पास समय किसके लिए है।' जब हम कहते हैं, माया के लिए हमारे पास समय नहीं है, तो तुरंत ही मन में सवाल उभरेगा कि हमारे पास फिर समय किसके लिए है? इसका आसान-सा जवाब है, 'शिव बाबा' अर्थात् सिर्फ खुदा के लिए, भगवान के लिए वक्त है। अगर हम हर जगह प्राथमिकता शिव बाबा को देंगे, तो वैसे भी विकारों के लिए हमारे पास वक्त ही नहीं बचेगा।

महत्व न देने पर विकार आना छोड़ देंगे

यदि किसी की बुराई देखकर गलत चिंतन शुरू हो जाता है तो तुरंत दोहराइये, 'समय नहीं है।' इससे गलत चिंतन से किनारा हो जाएगा। उसके स्थान पर हम अच्छे संकल्प ला सकते हैं जैसे, मैं बाबा का मीठा-सा, प्यारा-सा, लाडला बच्चा हूँ, किसी की बुराइयों को देखकर मुझे क्या मिलेगा? मैं तो होलीहंस हूँ, पवित्र आत्मा हूँ, दूसरों की बुराइयाँ और अपवित्रता देखकर स्वयं को अपवित्र क्यों करूँ? ऐसे संकल्प करने से विकल्पों से स्वत: दूर होते जाएँगे। जब हमारे पास माया के लिए समय ही नहीं रहेगा, जब हम उसे कोई महत्व ही नहीं देंगे, तो ज़ाहिर है कि वह आना ही छोड़ देगी। 'समय नहीं है' यह वाक्य बाबा के लिए प्रयोग में लाया जाए तो नकारात्मक है लेकिन पाँच विकारों के लिए उपयोग में लाया जाए, तो सकारात्मक है। वाक्य एक ही है लेकिन उपयोग अनुसार उसकी महत्ता बदल जाती है।

दिल की याद में अविश्वसनीय शक्ति

बात कितनी भी बुरी हो, अगर हमारा नज़रिया सकारात्मक रहेगा, तो वह हमारे लिए सकारात्मक बन जाएगी। मान लीजिए, किसी ने हमारी बेइज़्ज़ती की, हमें भला-बुरा कहा, तो हम सोचें कि हमारे पास इतना समय कहाँ है, जो उसके बुरे शब्दों पर ध्यान दें और फिर उनका चिंतन करें, कौन इतना समय बर्बाद करेगा? हम तो बाबा की याद में मस्त रहने वाली आत्माएँ हैं। फिर हमें किसी और की व्यर्थ बातों पर ध्यान देने की क्या ज़रूरत है? जब हम ऐसा सोचेंगे तो सामने वाला व्यक्ति किसी पुरानी और मूक फिल्म के अभिनेता की तरह प्रतीत होगा और हमारे चेहरे पर खुशी की झलक आएगी। फिल्म में हम बुरे शब्दों को सुनते हैं लेकिन गुस्सा नहीं करते क्योंकि हम जानते हैं कि वह अभिनेता हमें नहीं बोल रहा है। यहाँ भी हम सोच सकते हैं कि वह व्यक्ति महज अपना पार्ट बजा रहा है। ऐसा करते हुए हम बाबा की याद में रहेंगे, तो थोड़े समय के पश्चात् वह अपने आप शांत हो जाएगा। बाबा की याद में अविश्वसनीय शक्ति है, बस याद दिल से होनी चाहिए। ❖

आलोचना से बचें

* ब्रह्माकुमारी वर्षा, नांदेड

अपने जीवन में गुणों का अभाव दूसरों की ग्लानि की आदत को बढ़ावा देता है। जब हम जीवन को प्रेम, आनंद से भरपूर करते हैं तब दूसरों को भी वही देते हैं लेकिन जब दूसरों के दोष बार-बार देखते हैं तो वे हमारे अंदर भी आ जाते हैं।

स्वयं का निरीक्षण करें

मैं कौन हूँ, मेरा कर्त्तव्य क्या है, मुझे जाना कहाँ है, दिनभर की व्यस्त दिनचर्या में हम कितनी बार यह प्रश्न अपने से पूछते हैं? बहुत कम क्योंकि हम स्वयं के बदले दूसरों को ज़्यादा देखते हैं। चेक करना चाहिए स्वयं को लेकिन करते हैं दूसरों को। यदि दूसरों का निरीक्षण करना भी है तो उनमें क्या देखें, यह प्रशिक्षण हमें स्वयं को देना है। एक छोटे-से उदाहरण से इसे समझेंगे –

एक दिन बरसात से बचने के लिए कुछ लोग एक पेड़ के नीचे खड़े हो गये। उनमें से एक व्यक्ति ने पेड़ की तरफ देखकर कहा, इस पेड़ पर कुछ फल-फूल नहीं आते, यह तो एकदम फालतू है। दूसरे ने भी कहा, यह कुछ काम का नहीं। तभी एक अन्य सज्जन ने कहा, अरे आपका निरीक्षण बिल्कुल सही नहीं है, इसी पेड़ ने तो हम सबको बरसात से बचाया है। यह कितना घना और बड़ा है, इसकी छाँव भी अच्छी है। एक अन्य ने कहा, इसकी लकड़ी भी महंगी बिकती है। ऐसा सुनते ही पहले जो बोल रहे थे, चुप हो गये।

इस उदाहरण का तात्पर्य यह है कि हमेशा सकारात्मक बातों का निरीक्षण करें। दूसरों के गुण देखेंगे तो गुणवान बनेंगे। हर किसी में कुछ न कुछ विशेषता अवश्य होती है। बंद घड़ी भी दिन में दो बार सही वक्त बताती है।

सकारात्मक दृष्टिकोण रखें

किसी को भी सुधारने का तरीका उसकी गलतियाँ ढूँढ़कर उसको डाँटना नहीं बल्कि उसके गुणों की प्रशंसा करना है, इससे उसको आपेही अपनी कमियों का दर्शन होगा। दूसरा हमसे कैसा भी व्यवहार करे, हमें उसको प्रेम ही देना है। हम दूसरों के जीवन में जो भी भेजेंगे वही हमारे पास लौटकर आएगा। अच्छी भावनाएँ पहले देने से जीवन अच्छा बन जाएगा। खुशी देंगे तो खुशी मिलेगी। धन दान करेंगे तो बदले में धन कहीं से भी लौटकर आयेगा। दूसरों की दिल से प्रशंसा करना, धन्यवाद करना, इससे सुखद अनुभव होंगे। उनकी गुणवत्ता का वर्णन करने की आदत प्रभुप्रिय, लोकप्रिय बना देगी। एक छोटी-सी प्रशंसा किसी को आगे बढ़ाने का मार्ग प्रशस्त कर सकती है। हमारे चारों ओर जो भी मनुष्य आत्मायें हैं, वे किसी न किसी गुण से अवश्य सम्पन्न हैं।

आलोचना खुजली करने के समान है

आलोचना व्यक्ति की पीठ पीछे होती है, उसके सामने नहीं। आलोचना के क्षणभंगुर आनंद में समय न गंवायें। किसी पर कीचड़ फेंकते समय अपने हाथ कीचड़ से सन ही जाते हैं। किसी को आगे बढ़ाने के बजाय उसकी आलोचना में ही लगे रहेंगे तो हजारगुणा ग्लानि लौटकर हमारे पास आएगी। दूसरों की गलतियों पर हँसना तो आसान है पर अपनी गलती पर हँसना बहुत कठिन है। अतः दूसरों को माफ करना सीखें। अगर दिल से माफ कर देते हैं तो न वह संकल्प चलायेगा, न हम। जब तक माफ नहीं करते, संकल्पों का तूफान चलता रहेगा जैसे कि इसने मेरे साथ ऐसा क्यों किया? क्या यह शोभा देता है?

कई समझते हैं, कुछ तो सबक सिखाना चाहिए, नहीं तो वह सुधरेगा नहीं, माफ करेंगे तो दुबारा गलती करेगा। लेकिन नहीं, ऐसे में यही सोचें कि जो कुछ भी उसने किया वह अपनी समझ के अनुसार किया, हमारी समझ तो उससे ऊपर है। माफ

करने से हमें भी और सामने वाले को भी राहत मिलती है।

आलोचना करना खुजली करने के समान है, जो खुजलाने से बढ़ती है। जब हम कोई हलका जख्म खुजलाते हैं तो अल्पकाल का आनंद प्राप्त होता है मगर उससे जख्म बढ़ता ही जाता है। आलोचना करके, एक इंसान बिना कुछ किए अपने को बहुत बड़ा मानता है। यह बड़प्पन का काल्पनिक खयाल है जिससे कुछ भी प्राप्त नहीं होगा। अत: ऐसे काल्पनिक ख्याल से बचें। सारा जहान इस काम में लगा हुआ है पर हम अपने को इससे मुक्त रखें। ❖

खुशहाल जीवन के लिए श्रेष्ठ व्यवहार

- ब्रह्माकुमार मोहनभाई बुचडे, बार्शी, महाराष्ट्र -

व्यक्तिगत जीवन, परिवार, समाज, गाँव में खुशी का वातावरण रहे, ऐसी हर एक मानव की चाहना होती है। व्यवहार में समरसता और सहकर्मियों के साथ मिलजुल कर अपनी ज़िम्मेवारी पूरी करने की वृत्ति जीवन में खुशी प्रदान करती है। लेकिन ना चाहते भी कई बार चिंताजनक परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। ऐसी परिस्थिति से बचे रहने के लिए मनुष्य क्या करे? पहली बात है परिस्थिति को बदले, दूसरी बात है अन्य व्यक्ति को बदले और तीसरी बात है स्वयं को बदले।

इन तीनों में से हमारे हाथ में कौन-सी बात है? केवल स्वयं का बदलाव हमारे हाथ में है। कहा जाता है, हम बदलेंगे तो जग बदलेगा। जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि। यदि हमने जीवन में खुश रहने का निर्णय लिया है तो किसी की हिम्मत नहीं जो हमें नाराज़ करे और यदि हमने नाराज़ रहने का निर्णय लिया है तो कोई भी हमें खुश नहीं कर सकता। बीती बातों का चिंतन न करके वर्तमान के सुअवसरों का फायदा लेते रहेंगे तो खुशी भी बढ़ेगी और भविष्य की चुनौतियाँ स्वीकार करने के लिए मनोबल भी मिलेगा। परिस्थिति की चिंता करने से मार्ग नहीं मिलता परन्तु नाटक का दृश्य देखने की तरह परिस्थिति को भी अलग हो कर साक्षीभाव से देखेंगे तो परिस्थिति से बाहर आने का मार्ग मिल जाएगा।

खुशी पाने का एक और सुंदर तरीका है दुआओं का खज़ाना जमा करना। भिन्न स्वभाव, भिन्न परिवार, भिन्न संस्कृति के मनुष्य के साथ रहते हुए भी अपने श्रेष्ठ व्यवहार द्वारा उसे संतुष्ट कर देने से मनुष्य दुआओं का पात्र बन जाता है। पारस्परिक व्यवहार पर प्रभाव डालने वाली मुख्य तीन बातें हैं भाव, भावना और कामना। दूसरों के प्रति क्षमाभाव, शुभभावना, शुभकामना धारण करने से व्यवहार में श्रेष्ठता आती है। इसके लिए ज़रूरी है, मनुष्य स्वमान में रहे और औरों के प्रति अपनेपन की भावना रखे। आज परस्पर संबंधों में स्वार्थ की भावना और कामनाएँ बढ़ गयी हैं। मनुष्य को चाहिए कि वह कामना को शुभकामना में बदले तथा पारस्परिक व्यवहार में निष्काम सेवाभाव लाये। बदले की भावना मन को व्यर्थ और नकारात्मक संकल्पों से भर देती है। ईर्ष्या और वैर की भावना मन को अस्वस्थ कर देती है। अत: हर बात में समाधान खोजें, समस्या का चिन्तन न करें। खुश व्यक्ति समाधानी होगा ही, यह गारंटी नहीं है लेकिन समाधानी व्यक्ति ज़रूर खुश रहता है। समाधान का अर्थ है दूसरों की खुशी देखकर खुश होना। बदला न लो, बदलकर दिखाओ, संतुष्ट रहो, संतुष्ट करो, खुश रहो और खुशी बाँटो, त्याग में ही भाग्य समाया है – इन सुंदर विधियों द्वारा व्यवहार को श्रेष्ठ बनायें। इससे जीवन खुशहाल बन जाएगा। ❖

गुरुपूर्णिमा महोत्सव

❊ ब्रह्माकुमारी नलिनी, मुंबई (घाटकोपर)

गुरुपूर्णिमा का दिवस भक्तगण बहुत श्रद्धा से मनाते हैं। इस दिन हर एक अपने गुरुस्थान पर उनका आशीर्वाद लेने जाते हैं। गुरुओं के पद पर प्रस्थापित महान आत्माएँ सत्गुरु की स्मृति दिलाने वाली होती हैं। सत्गुरु ही उनके द्वारा अपने भक्तों की मनोकामनायें पूरी करते हैं। सत्गुरु अर्थात् परमपिता परमात्मा, वे गुरुओं को निमित्त बनाकर सबकी मदद करते हैं।

कहते हैं, 'गुरु बिना ज्ञान नहीं', 'गुरु बिना घोर अंधियारा', 'गुरु बिना सद्गति नहीं' इसलिए गुरु को बहुत महान माना जाता है। सृष्टि की रचना करने वाले ब्रह्मा तथा उनके साथी विष्णु और शंकर को भी गुरु रूप में याद किया जाता है। कहा गया है, 'गुरुर्ब्रह्मा, गुरुर्विष्णु, गुरुर्देवो महेश्वर, गुरु साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः' इस तरह ब्रह्मा, विष्णु, शंकर के साथ-साथ परब्रह्म में रहने वाले परमपिता परमेश्वर को भी सत्गुरु के रूप में विशेष याद करके उन्हें नमन किया जाता है। जैसे ब्रह्मा, विष्णु, शंकर देवताय नमः, वैसे ही शिव परमात्माय नमः। ऊँचे से ऊँचे लोक के रहने वाले, सर्व आत्माओं के परमपिता, गुरुओं के भी सत्गुरु, गुरुणाम् गुरु एक ही थे, एक ही हैं और एक ही रहेंगे, ऐसे सत्गुरु को भी इस दिन विशेष रूप से याद किया जाता है। मनुष्य आत्माओं की सभी चाहनाएँ गुरुओं के भी सत्गुरु परमपिता परमात्मा पूरी करते हैं।

हमें उनका पूर्ण परिचय न होने के कारण हम अन्य गुरुओं के पास जाते हैं। लेकिन अब समय आ गया है कि हम सच्चे सत्गुरु परमपिता परमात्मा को जानें, जो एक ही हैं। श्रीराम, श्रीकृष्ण और शंकर आदि देवताओं ने भी शिव का ध्यान किया है। वे इस सृष्टि के निवासी नहीं हैं, सृष्टि के पांच तत्वों से भी पार ब्रह्मतत्व, परलोक, परमधाम है, वहाँ के रहने वाले हैं। हम सब के लिये सत्गुरु के साथ-साथ माता, पिता, सखा, बंधु आदि सर्व सम्बन्धी हैं। वे गुरु या सत्गुरु के रूप में हमें जीवन में मदद करते आये हैं, शिक्षा देते आये हैं और दुख-दर्दों से मुक्त करते आये हैं।

जब किसी भी व्यक्ति की पूर्णता को, विशेषता को पूर्ण रूप से दिखाना होता है, तो कहा जाता है, वह चंद्रमा की तरह 16 कला पूर्ण है। गुरु भी सर्व गुणों के सागर, सर्वज्ञ, सर्व शक्तियों से पूर्ण, सर्व दुखों, विकारों से मुक्त करने वाले, सभी आत्माओं को सुख देने वाले होने चाहिएँ। ऐसे सत्गुरु तो एक ही परमपिता परमात्मा हैं जिनके स्मरण से ही सारे गुरुओं को गुरु पद मिलता है। जो भी गुरु हैं वे परमात्मा की मदद के बिना किसी का दुख दूर नहीं कर सकते, इच्छाओं को पूर्ण नहीं कर सकते क्योंकि वे खुद जीवन-मृत्यु और जन्म-पुनर्जन्म के बंधन में बंधे हुए हैं। याद रहे, केवल एक ही निराकार सत्गुरु परमपिता हैं जो सर्व बंधनों से मुक्त हैं, कालों के काल सद्गति दाता हैं। इसलिए गुरुपूर्णिमा उन्हीं सत्गुरु की याद में मनानी है। भले ही हम इन गुरुओं पर श्रद्धा रखें, आदर करें परन्तु याद रखें कि इन गुरुओं की महानता भी केवल सत्गुरु के कारण ही है। इसलिए हमें सत्गुरु को ही जानने का यत्न करना है। गुरु तो दलाल होते हैं। उनसे बुद्धि की सगाई करने के बजाए सत्गुरु की याद में गुरुपूर्णिमा मनाएँ। उस सत्गुरु परमपिता परमात्मा को हम अपने विकारों की भेंट दें ताकि फिर कभी उन विकारों के वश ना हों और सदा सफलता को प्राप्त करें। ❖

बाबा बने न्यायाधीश और वकील

❊ राजेन्द्र कुमार मारवीजा, रायपुर

सन् 2005 से मैं नियमित रूप से ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र पर ईश्वरीय ज्ञान सुनने जाता हूँ। हमने सन् 1995 में जिनसे घर खरीदा, वे घर के सामने ही रहते हैं। एक दिन न्यायालय के नजूल विभाग से एक कागज आया जिससे हमें ज्ञात हुआ कि हमारे साथ धोखा हुआ है और हमारा नामांतरण नजूल विभाग में न होने के कारण उस सामने वाले व्यक्ति के मन में लोभ आ गया है। वह मुझसे अनावश्यक रूप से रुपयों की मांग करने लगा। हर रोज़ मानसिक प्रताड़ना, जान से मारने की धमकी और लौकिक पुत्र संजय (14 वर्ष) का अपहरण करने की धमकी देने लगा। यह मामला न्यायालय में पहुँच गया। कभी स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि ऐसे बैठे बिठाये मुसीबत आ सकती है और वो भी उनके द्वारा जिनसे अच्छे सम्बन्ध हों। रुपयों के लालच में इंसान इतना बदल जाता है, फिल्मों में देखा था, वास्तविक जीवन में यकीन नहीं आ रहा था।

जुल्म और धमकी

न्यायालय में केस चलते भी उस व्यक्ति ने जुल्म करने बंद नहीं किये। इस दहशत में मेरी माताजी ने बीमार होकर बिस्तर पकड़ लिया। मैं रोज़ अमृतवेले बाबा से यही रूहरिहान करता था, बाबा, सबसे बड़े न्यायाधीश तो आप हैं, आप ही वकील भी बन जाओ, मेरे साथ न्याय करो। एक दिन मैंने देखा, बाबा कह रहे हैं, बच्चे क्यों घबराते हो, मैं तुम्हारे साथ हूँ। एक दिन उस व्यक्ति ने पुलिस वाला बनकर मुझे फोन द्वारा एक सुनसान जगह पर आने को कहा। उसी समय मुझे आवाज़ आयी, सावधान बच्चे। मेरा सर घूमने लगा, ऐसे लगा, कोई शक्ति मुझे संभाल रही है। मैंने हिम्मत जुटाई, मोबाइल लेकर मैं जिलाधीश के पास चला गया। फिर पुलिस के द्वारा नम्बर ढूंढ़ा गया और वही व्यक्ति पकड़ा गया। उसे जेल हो गई। जेल से छूटने के बाद फिर धमकी दी कि ठीक एक महीने के बाद तुम्हारी हत्या करूँगा। पर कहते हैं, 'जिसके सिर ऊपर तू स्वामी सो दुख कैसे पावे।'

मेरे पक्ष में आदेश

मैं रोज़ सवा पाँच बजे सेवाकेन्द्र जाने के लिए घर से निकल जाता हूँ। घर में माँ और युगल कहने लगे, इतनी जल्दी जाते हो, कहीं अंधेरे का लाभ उठा कर वह कुछ कर न दे। मैं

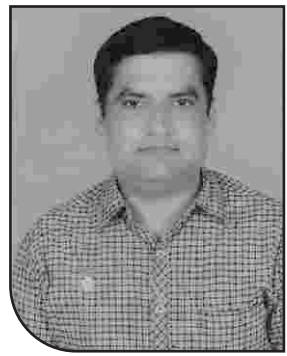

माँ और युगल को कहता था, पहले भी भगवान ने ही तो मुझे बहुत बड़े दुख से निकाला था, अब भी वही निकालेगा। मैं सेवाकेन्द्र जाता रहा। कुछ दिनों के बाद अचानक ही उस व्यक्ति को पता नहीं क्या हुआ, उल्टियाँ करने लगा, उसे हास्पिटल ले जाया गया, डाक्टरों ने आपरेशन कराने को कहा, आपरेशन हुआ और वह शरीर छोड़ कर चला गया। मार्च, 2013 को मेरे पक्ष में आदेश जारी हुआ। मेरे भोलेनाथ बाबा ने जज और वकील बनकर मेरी मदद की। इस दौरान बाबा ने न्यायालय में भी सेवा करवाई। **मैंने इस घटना से यही सीखा कि परिस्थितियों से घबराना नहीं चाहिए। परिस्थितियाँ हमें बहुत कुछ सिखा कर अनुभवी बनाती हैं।** ❖

दीदी की अद्भुत पालना और सम्भाल

❊ ब्रह्माकुमार डॉ. रामश्लोक, शान्तिवन

सन् 1969 में मैं ईश्वरीय ज्ञान के सम्पर्क में आया। सत्य की खोज के लिए मैंने सब धर्मों का अध्ययन किया था इसलिए सबकी मुख्य-मुख्य बातों को मैं जानता था। मेरे जीवन की शुरूआत सीधे मुरली सुनने से हुई। बाबा की मुरली के ज्ञान-बिन्दु इतने ज्ञानयुक्त, युक्तियुक्त तथा तर्कसंगत होते हैं कि मैं जो बात सोच के जाता उसी का उत्तर आ जाता। ज्ञान की ऐसी बातों से प्रभावित होकर मैंने प्रतिदिन मुरली सुनना प्रारम्भ कर दिया लेकिन मन को एकाग्र करने में बहुत मुश्किल होती थी। जब अन्न की शुद्धि का ज्ञान मिला और उसे अपनाया तो मन भी एकाग्र होने लगा। संदेशी दादी (मम्मा की मौसेरी बहन) हमारी टीचर थी। हम लौकिक रीति से अध्ययनरत थे। सेवाकेन्द्र के नज़दीक कमरा किराये पर लेकर रह रहे थे इसलिए सारा दिन सेन्टर पर आना-जाना होता रहता था। सेवाकेन्द्र का सारा कार्य-व्यवहार भी हम सम्भालते थे। पढ़ाई से जब छुट्टियाँ होती थीं तो माउंट आबू आ जाते थे।

परखने में माहिर दीदी

एक बार हम मुज़फ्फरपुर से माउंट आबू आ रहे थे। रिजर्वेशन उन दिनों होता नहीं था। ट्रेन में लगभग 40 घंटे बैठ करके हम आबू पहुँचे। जब पांडव भवन क्लास में गये तो दादी प्रकाशमणि मुरली सुना रही थी और दीदी वहीं कुर्सी पर बैठकर नोट्स लिख रही थी। स्टूडेन्ट लाइफ सीखना हो तो दीदी से सीखें। दीदी हर बात में बहुत एक्यूरेट थी। क्लास में ही एक भाई ने दीदी से कहा, पहरा देने के लिए एक भाई की ज़रूरत है। दीदी ने हाथ खड़े करवाए कि यह सेवा कौन करेगा। मैंने देखा, किसी ने हाथ नहीं उठाया, मैंने हाथ उठा लिया। हरेक के पास कई-कई ड्यूटीज़ होती थीं, मैं तो नया-नया था। पहरा रात को दस बजे से सुबह पांच बजे तक देना होता था। फिर धोबी घाट वाले भाई ने कहा, मुझे भी एक सेवाधारी की ज़रूरत है। दीदी ने फिर पूछा, धोबीघाट में कौन जायेगा? मैंने फिर हाथ उठा दिया। फिर लच्छू दादी ने कहा, मुझे अलमारी को पेन्ट कराना है, कौन करेगा? उसके लिए भी मैंने हाथ उठा दिया। रातभर पांडव भवन का पहरा दिया। फिर आठ बजे से दस बजे तक धोबीघाट में सेवा की, उसके बाद ग्यारह बजे अलमारी को पेन्ट करना शुरू किया। पेन्ट करते-करते मुझे इतनी ज़ोर की नींद आई कि मैं ब्रश हाथ में पकड़े खड़ा-खड़ा ही सो गया। दीदी ग्यारह बजे पोस्ट लिखती थी। उस कार्य को पूरा करने के बाद दीदी-दादी दोनों शान्तिस्तम्भ की तरफ आईं। दोनों ने देखा, मैं तो

सो रहा था। दादी ने पूछा, रामश्लोक क्या कर रहे हो? आवाज़ सुन करके मेरी नींद खुली और मैं चौंक गया। फिर मैंने बताया कि पिछले 56 घंटों से मैं लगातार सेवा में हूँ, अब आत्मा की बैटरी बिल्कुल ज़ीरो पर पहुँच गई है। सारी बात सुनकर दीदी ने मुझे तुरंत सेलेक्ट कर लिया कि यह बालक यज्ञ की बड़ी ईमानदारी, वफादारी से सेवा करेगा। इसके बाद मुझे छुट्टी दी गई। भोजन करके मैंने आराम किया और पाँच बजे फिर म्यूज़ियम में जाने की ड्यूटी लगाई गई।

प्रशासन की गहरी सूझ

दीदी-दादी दोनों प्रशासन के अलग-अलग भागों को संभालती थीं। दादी जी क्लास, मुरली आदि संभालती थी और दीदी भोजन आदि का विभाग देखती थी। आवास-निवास भी दीदी ही देखती थी। दीदी दिल्ली तरफ के सेवाकेन्द्रों को सम्भालती थी और दादी मुंबई तरफ के सेवाकेन्द्रों की देख-रेख करती थी। दीदी और दादी का आपस में इतना समायोजन था कि हम कहते थे, दो शरीरों में एक आत्मा है। एक जो बोलेंगी, दूसरी हाँ ही करेंगी। क्यों, क्या उनके बीच में आते ही नहीं थे। दादी ने जो बोला, दीदी ने हाँ जी किया। दीदी ने जो बोला, दादी ने हाँ जी किया। दीदी में प्रशासन संभालने की इतनी सूझ और शक्ति थी कि कोई उनके सामने सिर उठाके बात करे, संभव नहीं था। सिर नीचा करके ही हम दीदी के साथ बात करते थे।

ऊर्जावान स्टूडेन्ट लाइफ

दीदी जब किसी को बुलाने के लिए घंटी बजा देती थी तो हम लोग अपना चार्ट देखने लगते थे कि हम से क्या भूल हुई है। मन में सवाल आता था कि बुलाया क्यों है? दीदी बुलाकर डायरेक्शन देती थी। रात के नौ बजे की क्लास में भी दीदी हाथ में डायरी लेकर हाज़िर होती थी। रात की क्लास में दीदी ज्ञान का बैडमिंटन खेलती और खेलवाती थी। सुबह की सुनी हुई मुरली में से प्रश्न-उत्तर निकालती थी। दीदी सवाल पूछती थी और हम लोग उत्तर देते थे। वे ऐसे-ऐसे सवाल पूछती थी कि हम लोगों को फेल कर देती थी। दीदी की विशेषता थी कि वे सदा स्टूडेन्ट बनकर रही। इतनी उम्र में भी उनमें स्टूडेन्ट भाव प्रबल था। वे बहुत उमंग-उत्साह और ऊर्जा वाली थी। दीदी अधिकतर योग करवाती थी, दृष्टि देती थी और अनुभव करवाती थी।

एकॉनॉमी का भाव

दीदी में एकॉनॉमी का भाव कूट-कूट कर भरा था। उन दिनों निवार की चारपाइयाँ होती थीं। दीदी-दादी हमारे साथ बैठकर निवार का गोला बनाती थीं, फिर हम उस निवार से चारपाई बुनते थे। जब योग-भवन, ज्ञान-विज्ञान भवन बन रहे थे तो शाम को हम सब लोग तार आदि बांध करके सेन्ट्रिंग करते थे। नाश्ते के बाद छत डालते थे। सीमेंट की बोरियाँ उठाते थे। तगारियाँ उठाते थे। यज्ञ में इतने पैसे नहीं होते थे कि मज़दूरों को दिये जा सकें इसलिए सब काम दीदी-दादी की देख-रेख में हाथों से किये जाते थे। एकॉनॉमी के संबंध में एक हंसी की बात याद आ रही है। एक बार हमने सोचा, संदेशी दादी को एक पत्र लिखते हैं, पोस्ट कार्ड पांच पैसे में आता था। जब पोस्ट कार्ड मांगा तो पूछा गया, आपको क्या लिखना है। हमने कहा, याद-प्यार, राज़ी-खुशी लिखना है। दीदी ने कहा, एक चिटकी पर लिख कर दे दो, हम जो लिफाफा भेज रहे हैं उसी में डालकर भेज देंगे, पांच पैसे क्यों खर्च करें? मैंने वैसा ही किया, चिटकी लिखकर दे दी। दीदी की ऐसी पालना से हमारे भी रग-रग में एकॉनॉमी समा गई है।

दीदी द्वारा अनोखी सज़ा

मैं, वल्लभ भाई, राजू भाई, गोलक भाई सब इकट्ठे लाइट हाउस में रहते थे और छोटे-छोटे तो थे ही। गोलक भाई को एक दिन केले खाने का दिल हुआ। पचास पैसे के एक दर्जन केले मिलते थे। हमें कटिंग और हज़ामत के लिए भी 50 पैसे मिलते थे दो महीने बाद। जब दो मास कटिंग के

हो गए तब मैं ईशु दादी के पास गया और मुझे 50 पैसे मिल गए। रास्ते में गोलक भाई मिले, उन्होंने पूछा, कहाँ से आ रहे हो? मैंने कहा, ईशु दादी से 50 पैसे लेके आ रहा हूँ। उन्होंने कहा, दिखाओ। मैंने हाथ खोला, हथेली पर अठन्नी रखी थी, उन्होंने हाथ को नीचे से उछाल दिया। अठन्नी गिर गई। वह अठन्नी लेकर बाज़ार से एक दर्जन केले ले आया। मुझे कहा, कुछ दिन और हज़ामत नहीं करवाएगा तो क्या हो जायेगा? जब केले आ गये तो विचार चला कि इन्हें खायें कहाँ? हम लोगों ने कमरे में बैठकर छिपकर केले खाये। फिर प्रश्न आया कि छिलके कहाँ फेंकेंगे। छिलकों को हमने एक डिब्बे में फेंक दिया। सफाई करने वाली माता ने डिब्बे में छिलके देख लिए। एक भाई पहरे की ड्यूटी करता था उसने छिलके ले जाकर दीदी को दिखाये और कहा कि दीदी इन लोगों ने केले खाये हैं। अगले दिन दीदी के सामने हमारी पेशी हुई। हम सोच में पड़ गए कि हम लोगों ने क्या गलती की है। दीदी पालना भी देती थी तो संभाल भी करती थी। दीदी ने पूछा, तुम लोग केले लाये कहाँ से और केलों के लिए 50 पैसे लाये कहाँ से? हमने सारी बात सुना दी कि 50 पैसे हजामत वाले थे, उनसे केले खरीदे गये हैं। दीदी सुनती भी रही और हमारा मुख भी देखती रही। हम लोग डर के मारे कांप रहे थे लेकिन हमने चोरी तो की नहीं थी। जिन्होंने शिकायत की थी वो भी देख रहे थे कि देखें आज इनको क्या सज़ा होती है। दीदी का सज़ा देने का तरीका भी न्यारा और प्यारा था। दीदी ने उसी समय भूरी दादी को बुलाया। भूरी दादी आबू रोड से सब्जी खरीद कर ले जाती थी। दीदी ने कहा, भूरी दादी, इन बालकों का केले खाने का दिल होता है, 15 दिन में एक दर्जन केले लाकर इनको देना। हम लोग इतने खुश हुए और मन ही मन दीदी का खूब गुणगान किया। तब से दीदी की आज्ञा प्रमाण केले आते रहे और हमें मिलते रहे।

डेढ़ रुपये की घड़ी

दीदी की पालना की कमाल थी, किसी की तबीयत खराब हो जाती थी तो खुद देखने जाती थी। दीदी की लौकिक माताजी का नाम था क्वीन मदर। हम लोगों की बनियान फट जाती थी तो क्वीन मदर उसे सिलाई करके देती थी। कहती थी, इसे कुछ दिन और पहनो। एक बार क्वीन मदर ने मुझे एक घड़ी दी चुपके से। सन् 1936 की रशियन घड़ी थी, कीमत थी डेढ़ रुपये (अठारह रुपये प्रति दर्जन)। बहुत चमकदार और एकदम नई घड़ी थी। हममें से किसी भी भाई के पास घड़ी नहीं होती थी। क्वीन मदर ने घड़ी देकर कहा, इसे दिन में मत पहनना। मैंने पूछा, क्यों? तो कहा, दूसरे देखेंगे तो वे भी मांगेंगे। मैंने पूछा, कब पहननी है? क्वीन मदर ने कहा, रात को ग्यारह बजे पहनना और सुबह तीन बजे खोलकर रख देना। हमने कहा, दादी, इसका क्या फायदा, तो कहा, नहीं, तुम पहन के रात को सोना। वह बहुत अच्छी घड़ी थी, लम्बे समय तक हमारे पास रही, वैसी ही चमकदार रही, कोई घड़ीवाला उसे खोल नहीं पाता था। कभी खराब नहीं हुई। चाबी भरने वाली थी, एकदम ठीक चलती थी। दिन में उसे जेब में रखे रहते थे।

संगदोष से सावधानी

दीदी इतना ध्यान रखती थी कि म्यूज़ियम जाते समय आपके साथ कौन था, किसका संग किया? हम अकेले नक्की झील तक भी नहीं जा सकते थे, गहरी जांच-पड़ताल होती थी। दीदी कहती थी, कहाँ भी जाना हो, दो साथ जाओ। दीदी संगदोष से बचाने का बहुत ख्याल रखती थी, कहती थी, संग घुन की तरह से है। इतनी पालना दीदी देती थी। दीदी-दादी ने हम लोगों पर इतना ध्यान दिया, क्या वर्णन करें? हमारी एक-एक पल की खबर उनके पास होती थी। मुझे आवास-निवास की सेवा में भी दीदी ने ही रखा था। दीदी से हमने बहुत दुआयें पाईं। उनकी दुआओं और पालना से हम इतने आगे बढ़े।

दीदी का फ़ैसला

एक बार एक भाई के साथ मेरा थोड़ा विवाद हो गया। हम दोनों को दीदी ने बुलाया। दीदी को फ़ैसला करना था। सच्चाई निकलवाने का दीदी के पास बहुत अच्छा तरीका था। हम दोनों ने अपना-अपना पक्ष सुनाया। दीदी ने कहा, तुम दोनों ने भूल की है, दोनों बाबा के कमरे में एक-एक घंटा योग करो। शाम को दीदी ने फिर बुलाया, पूछा, बाबा के कमरे में गये थे? मैंने कहा, हाँ दीदी, डेढ़ घंटा योग किया। फिर पूछा, रियलाइज़ किया? महसूस कराने की दीदी के पास बहुत अच्छी तकनीक थी। मैंने कहा, हाँ दीदी, महसूस किया। फिर यही बातें दूसरे भाई से भी पूछी। उसने कहा, मैं बाबा के कमरे में गया ही नहीं। दीदी ने कहा, तुम सच्चे नहीं हो, तुम्हें भी तो रियलाइज़ करना चाहिए था ना, यूँ ही शिकायत करते रहते हो। दीदी-दादी के पास ऐसा तरीका था कि किसी को सज़ा की अनुभूति भी नहीं होती थी और उसे अपनी गलती महसूस भी हो जाती थी।

भोजन के समय निरीक्षण

दीदी की परख शक्ति और निर्णय शक्ति बहुत अद्भुत थी। दीदी मन से बहुत ही हलकी और सादी थी। बच्चे के साथ बच्चा, बड़ों के साथ बड़ी बन जाती थी। जब हम भोजन करते थे तो दीदी निरीक्षण करती थी कि कोई बातें करते तो खाना नहीं खा रहे। बाबा ने ही दीदी को कहा था, दीदी, भोजन के समय चक्कर लगाया करो। दीदी के सामने हम बहुत ज्यादा प्रश्न-उत्तर नहीं करते थे, चुप करके सुनते थे और हाँ जी करके चल देते थे। दीदी-दादी की पालना इतनी प्यारी थी कि घर कभी याद नहीं आया। ईश्वरीय कायदों में बहुत फायदे हैं। हम जितना सच्चे दिल से सेवा करेंगे, बाबा खुद ही आगे बढ़ायेंगे। हम किसी की टांग खींच करके, धक्का लगा करके आगे नहीं जा सकते। हम अपनी सेवा से ही आगे बढ़ते हैं। हम दिल से गीत गाते हैं, वो दिन कितने प्यारे थे, ये दिन भी कितने प्यारे हैं। ❖

संजय की कलम से..पृष्ठ 20 का शेष

अनेक वर्षों से कई केन्द्रों पर यह विचार किया जाता रहा है कि ईश्वरीय ज्ञान, योग और पवित्रता से सम्बन्धित एक प्रदर्शनी बनाई जाए। विशेषकर देहली में तो समय-समय पर प्रदर्शनी के बारे में विचार-विमर्श हुआ। आबू में भी प्रदर्शनी-जैसी एक चित्रशाला बनाने की योजना थी परन्तु मुम्बई केन्द्र के भाइयों व बहनों ने इस संकल्प को साकार रूप दिया है। परमपिता परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा ईश्वरीय ज्ञान देकर नई सृष्टि का निर्माण कैसे कर रहे हैं और उस ज्ञान से भ्रष्टाचार तथा पापाचार दूर होकर मनुष्य श्रेष्ठाचारी कैसे बन रहे हैं, इस विषय को लेकर 'विश्व नव-निर्माण प्रदर्शनी' के लिये सारी सामग्री रची गई है।

पिछले दिनों मुम्बई में तथा देहली में इसी प्रदर्शनी से सम्बन्धित कार्यों में बहुत व्यस्त होने के कारण ही हम मासिक पत्रिका के कार्य की ओर यथेष्ट ध्यान न दे सके। अत: इसके प्रकाशन में देरी हो गई है। यह सोचकर कि प्रदर्शनी का कार्य भी जनता की ईश्वरीय सेवा का एक आवश्यक कार्य है, पाठकगण क्षमा करेंगे।

नाम में परिवर्तन

हमने सोचा था कि अब भी हम मासिक पत्रिका को 'त्रिमूर्ति' नाम ही देंगे परन्तु बाद में मालूम हुआ कि पिछले कुछ महीनों से एक और पत्रिका इसी नाम से प्रकाशित हो रही है। अत: इस पत्रिका को 'ज्ञानामृत' नाम से प्रकाशित करने का निर्णय किया गया है। यह बात सभी पाठकों को नोट कर लेनी चाहिए। ज्ञानामृत नाम भी बहुत ही अच्छा है। 'त्रिमूर्ति' नाम परमपिता परमात्मा शिव की मधुर स्मृति दिलाता था। अब 'ज्ञानामृत' नाम उन द्वारा प्राप्त हो रहे इस अमृत की ओर ध्यान आकर्षित किया करेगा। ❖

बिछुड़ने लगे तो रोने न दिया

❋ नीरज तिवारी, द्वितीय सचिव, भारतीय राजदूतावास, विराटनगर

शांतिवन (आबू रोड़) में आयोजित पांच दिवसीय राजयोग शिविर (20-25 मई, 2013) का लाभ लेने का स्वर्णिम अवसर मुझे मिला। मेरा परम सौभाग्य है कि जीवन को नया रास्ता और नई दिशा मिल गयी है। यह एक ऐसा अनुभव है जिसे सबके साथ बांटना चाहता हूँ।

अज्ञानता अंधकार है। लौकिक ज्ञान द्वारा हम पशु से मानव बनने का प्रयास करते हैं तथा ईश्वरीय ज्ञान द्वारा हम मानव से महामानव या श्री लक्ष्मी और श्री नारायण समान भी बन सकते हैं। आबू पर्वत शिव बाबा का पवित्रतम् तीर्थ-स्थल है जहां प्राप्त ईश्वरीय ज्ञान, जीवन को मधुर रस से भर सकता है। इस प्रकार यह तीर्थ अन्य तीर्थ-स्थलों से भिन्न है। वहाँ तो हम योजनाबद्ध रीति से प्रियजनों के साथ जाते हैं। तीर्थ-स्थल पर पहुँच कर, नहा-धोकर, प्रसाद खरीद कर, लंबी पंक्ति में लग जाते हैं। समय आने पर मूर्ति के दर्शन कर गद्‌गद् हो जाते हैं। छवियाँ लेते हैं तथा मोटी रकम दान-पात्र में डालकर निश्चिंत हो जाते हैं कि हमने धर्म का काम किया तथा हमारे पाप भी कम हो जायेंगे। प्रसाद लेकर वापस आ जाते हैं और परिजनों में बांट देते हैं। प्रश्न यह है कि हमने पाया क्या? हमें धार्मिक अथवा आध्यात्मिक रूप से क्या प्राप्त हुआ?

इसके विपरीत शांतिवन में एक सुनियोजित तरीके से स्वयं की पहचान, परमसत्ता की पहचान, सकारात्मक सोचने की कला, तनावमुक्त जीवन जीने की कला का ज्ञान प्राप्त हुआ। काल-चक्र, अनादि विश्व नाटक, कर्मों की गहन गति का दर्शन प्राप्त हुआ। खुशी में रहने तथा खुशी बांटने, शांति द्वारा शक्ति की अनुभूति तथा आत्मशक्ति अर्जन करने का मार्ग पाया। पिताश्री ब्रह्मा की जीवन कहानी सुनने को मिली जिन्होंने भारत वर्ष को ज्ञान का मार्ग दिया। राजयोग का अभ्यास भी कराया गया। आत्मचिंतन पर ज़ोर दिया गया क्योंकि आत्मचिंतन से आत्म परिवर्तन तथा आत्म परिवर्तन से विश्व परिवर्तन सम्भव है। आत्मचिंतन से वस्तुतः सृजनात्मक चेतना आती है।

ब्रह्माकुमारीज़ के शान्तिवन परिसर के डायमंड हाल में चार दिनों तक निरंतर ज्ञानामृत की वर्षा होती रही। इस में नहाकर शरीर तथा आत्मा सशक्त हो गयी तथा लगने लगा कि जीवन नया मोड़ ले रहा है। ज्ञान अर्जन करने के पश्चात् मुझे लगा

कि डायमंड हाल का नाम सत्यम् शिवम् सुन्दरम् दर्शनम् डायमंड हाल होना चाहिए।

धन्य है आबू पर्वत जहाँ आधुनिक भारत के निर्माताओं – ज्ञानयोगी विवेकानन्द, कर्मयोगी महात्मा गांधी तथा राजयोगी प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के सपनों को साकार किया जा रहा है तथा मानवीय, सामाजिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों द्वारा स्वर्णिम भारत वर्ष का निर्माण किया जा रहा है। धन्य हैं राजयोग सिखाने वाली ब्रह्माकुमारी बहनें। वे परमात्मा शिव की पवित्रतम् शक्तियाँ हैं जो परमपिता शिव के नाम को दूर-दूर तक फैला रही हैं। इस कलयुगी दुनिया में जहां मूल्यों, मानवता तथा सदाचार का ह्रास हो रहा है, वे निरन्तर प्यार, शांति और सद्‌भावना का संदेश दे रही हैं। अपना सब कुछ शिव बाबा पर न्योछावर कर सदाचार का आचरण करने का आह्वान कर रही हैं। ऐसा

राजयोग द्वारा ही संभव है। वे इस पृथ्वी पर सतयुग लाने के लिए प्रतिबद्ध हैं और पूर्ण रूप से आशावादी हैं इस पुण्य काम को पूरा करने के लिए। हमें कह रही हैं कि हम उच्च विचारों, पवित्र आचरण तथा सत्कर्मों द्वारा सतयुग के लिये तैयार रहें। बहनों की प्रशंसा करना सूर्य को रोशनी दिखाने जैसा होगा।

पुण्यस्थली शांतिवन में ज्ञान अर्जन के साथ-साथ शिव बाबा से भी मेरी बात चलती रही। पच्चीस मई को बाबा के प्रति एक कविता लिखी जो इस प्रकार है–

आज रात बाबा ने मुझे सोने न दिया,
जब बिछुड़ने लगे तो रोने न दिया।
जाने को कहा, रुकने न दिया,
फिर आने को कहा, इतना वादा तो किया।
अपनी महफिल में शुमार होने तो दिया,
अपना बनाने का वादा भी किया।
न भुलाने का वचन भी दिया,
जब चलने लगा तो हाथ थाम भी लिया।।

मिला खुदा दोस्त का साथ

जब मैं आठ वर्ष की थी तब राजापार्क (जयपुर) सेवाकेन्द्र से मुझे ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त हुआ और उसी दिन मैंने शिवबाबा को अपना बेस्ट फ्रेन्ड बना लिया। बाबा हमेशा दोस्त के रूप में साथ देते हैं। मैं रोज अमृतवेले योगाभ्यास करती हूँ। बिना बाबा की याद के जो पढ़ती हूँ वो याद भी देरी से होता है और उसे जल्दी ही भूल जाती हूँ। बाबा की याद में जो पढ़ती हूँ वह जल्दी ही याद हो जाता है और हमेशा याद रहता है। छुट्टी के दिन सुबह मुरली क्लास में जाती हूँ, स्कूल में जाती हूँ तो शाम को मुरली क्लास करती हूँ। रोज मुरली की प्वाइंट नोट करती हूँ, बाबा को पत्र लिखती हूँ, स्वमानों का अभ्यास करती हूँ और तीन अव्यक्त मुरली पढ़ती हूँ।

भाषण, पोस्टर, तीन कि.मी.की मैराथन, पेन्टिंग, कविता पाठ, वाद-विवाद, राइटिंग, क्विज तथा निबंध लेखन जैसी कई प्रतियोगिताओं में मैंने भाग लिया है और बहुत उपहार प्राप्त किये हैं। कक्षा में सबकी मदद करती हूँ, बुरे संग से सदा दूर रहती हूँ। खाली समय में लड़कियाँ एक-दूसरे की बुराई करती हैं और मैं ज्ञानामृत पढ़ती हूँ। कक्षा में सदा प्रथम आती हूँ। आज तक मैंने 5 ट्राफी, 2 शील्ड, 1 मेमेन्टो, कुल 3680 रुपये कैश, 17 सर्टिफिकेट, 4 उपहार तथा कई किताबें इनाम में पाई हैं। ये सब प्राप्त हुए सिर्फ बाबा के साथ से। बाबा के बिना मुश्किल था लेकिन बाबा के साथ से सबकुछ आसान हुआ।

एक बार मेरी वाद-विवाद प्रतियोगिता का विषय था ''तीर्थ यात्राएं धार्मिकता का प्रमाण हैं''। इसके विपक्ष में मैंने चार पेज का मैटर बोला। वो भी कोई इन्टरनेट से निकाल कर नहीं बल्कि बाबा की अव्यक्त मुरली (वृक्षपति द्वारा कल्प वृक्ष की देखरेख) से, ज्ञानामृत के एक लेख से और ब्र.कु.बहन की क्लास से तैयार किया था। कुल 80 बच्चों ने प्रतियोगिता में भाग लिया था। उन्होंने मैटर इन्टरनेट से तैयार किया था। मेरे मन में यह प्रश्न नहीं था, मैं जीत पाऊँगी या नहीं। बस, बाबा को याद किया और बिना घबराहट के बोल दिया। मन में इतना विश्वास था कि बाबा मेरे साथ हैं और होगा वही जो ड्रामा में नूँध है और मैं जीत गई। मुझे खूब प्रशंसा के साथ-साथ एक सर्टिफिकेट, एक पुस्तक तथा 2100 रुपये इनाम में प्राप्त हुए।

अब मेरा लक्ष्य है कि मैं एक बहुत अच्छी ब्रह्माकुमारी बनकर बहुत सेवा करूँगी। मैंने अपनी बहुत सहेलियों को ज्ञान भी दिया है। अभी तो बाबा मुझसे बहुत सेवाएँ कराएंगे। मैं आपसे भी यही कहना चाहूँगी कि एक बार खुदा को अपना दोस्त बनाकर तो देखो, आपकी जिन्दगी न बदल दे तो कहना।

-- ब्रह्माकुमारी प्राची, राजापार्क, जयपुर (राज.)

मैंने जाना सच्ची खुशी को

* डा.कौशल चौहान, मुलाना (हरियाणा)

मेरा जन्म उत्तर प्रदेश के एक गांव नेक नामपुर नानई में हुआ। जब मैं सात साल की थी तो हम तीनों बहनों का इकलौता भाई चल बसा। उसके जाने से माँ-बाप को गहरा सदमा लगा। माँ-बाप के सदमे का मेरे मन पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा और मैंने तय किया, मैं कुछ ऐसा करूँगी जिससे माँ-बाप को खुशी दे सकूँ, लड़के की कमी को पूरा कर सकूँ। सन् 1996 में दसवीं की पढ़ाई पूरी करने के बाद उच्च शिक्षा के लिए मेरठ गई, वहाँ होस्टल में रहकर पढ़ने लगी जहाँ सखियों ने मेरा नाम खुशी रख दिया। मेरे शिक्षक कहते थे, यह लड़की बहुत सहनशील है लेकिन आसमान छूना चाहती है।

किसी को ठीक से सन्तुष्ट नहीं कर पा रही थी

शहर की मायावी दुनिया में आने के बाद गाँव का भोलाभाला बचपन, आधुनिकता का ताज पहनाकर लौट गया। मन व्यर्थ विचारों से घिरने लगा। पढ़ाई-लिखाई में सबसे आगे निकलने की स्पर्धा ने मेरे मन को दिशाहीन-सा कर दिया। इसी बीच मेरी दोस्ती ब्रिजेश (मेरे पति), जो मेरे साथ ही पढ़ते थे, से हो गई और शादी भी हो गई। प्रेमविवाह होने के कारण शादी के बाद ससुराल में मुझे कुछ चुनौतियों का सामना करना पड़ा। ससुराल वालों से वो स्वीकृति नहीं मिली, जो मिलनी चाहिए थी। मुझे आभास ही नहीं हुआ कि मैं तनावग्रस्त होती जा रही हूँ। माँ-बाप की चिन्ता, बहनों की चिन्ता, पढ़ाई की चिन्ता, नौकरी में परेशानियाँ और शारीरिक परेशानियाँ भी थीं। इसी बीच पुत्र को जन्म दिया, वो भी बहुत बीमार रहता था। सभी की ज़रूरतों का ध्यान रखते-रखते अपना अस्तित्व ही खोता जा रहा था, फिर भी किसी को ठीक से सन्तुष्ट नहीं कर पा रही थी। मन बहुत कमजोर हो चुका था। इन सबके बावजूद दो बातें सकारात्मक थी, मैंने पढ़ाई नहीं छोड़ी और नौकरी नहीं छोड़ी। छोटी बहनों की शादी के बाद माँ-बाप को साथ ले आई। पिताजी शूगर के मरीज़ थे, डाक्टर को दिखाया तो वे बोले, शूगर बढ़ी हुई है, इन्हें तनाव से परे रखना है।

भगवान को बहुत करीब पाया

उसी दिन ब्रह्माकुमारी बहनें घर पर आईं, अलविदा तनाव शिविर का पर्चा पिताजी को देकर चली गईं। शाम को महाविद्यालय से लौटते हुए मैं सोच रही थी कि मैं ऐसा क्या करूँ जिससे पिताजी का तनाव कम हो

जाये। घर पहुँचकर पर्चे को देखा और अलविदा तनाव शिविर के बारे में पढ़ा। अगली सुबह पांच बजे पिताजी को लेकर शिविर में चली गई। शिविर का विषय था 'खुशी की अनुभूति'। उस दिन मैंने जाना कि वास्तव में खुश होना किसे कहते हैं, खुशी के आँसू कैसे आते हैं। मैंने जाना कि भगवान मेरे कितने करीब हैं। जब मैं छोटी थी तब छत पर बैठकर आसमान को देखकर कहती थी कि भगवान, बस एक बार मुझे यह बता देना कि मरने के बाद कहाँ जाते हैं। जब भी कभी देवी-देवताओं के धारावाहिक देखती थी तो सोचती थी, ये सभी एक-दूसरे से शक्ति लेते रहते हैं, इनमें सबसे बड़ा भगवान कौन है? मैं तो उसी से ही प्यार करूँगी जो सबसे बड़ा होगा। परन्तु बड़ी होते-होते दुनिया के आकर्षण में आकर इन सब बातों को भूल चुकी थी।

महसूस हुआ, मैं बहुत खास हूँ

गई तो थी पिताजी को लेकर लेकिन भगवान ने निमन्त्रण मुझे भेजा था क्योंकि उनसे कहीं ज्यादा ज़रूरत मुझे थी। मैं कितने तनाव में हूँ और भगवान को भी परेशानियाँ सौंपी जा सकती हैं मुझे यह अहसास तक नहीं था। मैं अपने आप को भगवान के करीब तथा हलकी महसूस कर रही थी और तनाव मुझसे दूर भागता हुआ महसूस हो रहा था। मुझे अनुभव हुआ कि मैं कितनी खास हूँ, भगवान मुझसे बहुत प्यार करते हैं। उन्हें मेरी बहुत फिक्र है। खैर, बाबा ने मुझे ढूंढ़ा। मैं घर में सभी को सोता हुआ छोड़कर, सिर्फ अपने पिताजी को लेकर शिविर में आ गई थी। शिविर खत्म होने से थोड़ी देर पहले ही पुनः लौट आई। मुझे पता ही नहीं चला कि यह कौन-सी संस्था थी जिसने इतना अच्छा अनुभव कराया। दुर्भाग्यवश कभी ब्रह्माकुमारी संस्था के बारे में सुना भी नहीं था।

पिताजी की आँखों में थे खुशी के आँसू

जहाँ मैं काम करती थी वहाँ कुछ दिन बाद एक विद्यार्थी ज्ञानामृत पत्रिका लेकर आया। उसी से मुझे ब्रह्माकुमारी संस्था के बारे में पता चला और यह भी पता चला कि अलविदा तनाव शिविर भी ब्रह्माकुमारी संस्था ने ही लगाया था। उस स्टूडेन्ट ने मेरी उत्सुकता को देखते हुए सेवाकेन्द्र की निमित्त बहन को मेरा मोबाइल नंबर दे दिया। उन्होंने मुझे कई फोन किये और माउन्ट आबू (शान्तिवन) में शिक्षक सम्मेलन में चलने का आग्रह किया। मैंने अपनी एक सखी के साथ माउन्ट आबू जाने का कार्यक्रम बनाया। माउन्ट आबू आकर मुझे बहुत अच्छा लगा। सम्मेलन में बड़े-बड़े लोगों से मुलाकात हुई, बहुत अच्छी-अच्छी बातें सीखने को मिली। एक भी क्लास मिस नहीं की। शान्तिवन में चार दिन रहे, ज्यादातर समय डायमंड हाल में ही बीता। घर के किसी भी सदस्य की याद नहीं आई। आते हुए गुलज़ार दादी जी ने सौग़ात में एक आध्यात्मिक डायरी दी और कहा, 'अब चारों ओर खुशी मुसकरायेगी'। लौटकर आने के बाद एक दिन मेरे गांव के पास वाले गजरौला सेवाकेन्द्र की निमित्त बहन का नम्बर लिया और उनसे कहा, 'दीदी, हमारा एक बहुत बड़ा मकान गाँव में खाली है और वहाँ आस-पास बाबा का कोई आश्रम भी नहीं है। अगर मैं गाँव के लोगों के लिए बाबा का आश्रम खुलवा पाई तो अपने आप को बहुत सौभाग्यशाली समझूंगी।' कुछ दिन बाद ब्रह्माकुमारीज़ पाठशाला खुली। जब घर में बाबा का झण्डा लग रहा था तब मैंने पिताजी की आँखों में आँसू देखे, वैसे ही आँसू, जैसे मैंने अपने छोटे भाई की मृत्यु के बाद देखे थे पर ये खुशी के आँसू थे। अब वहाँ पर बहुत अच्छी सेवा चल रही है।

पढ़ाई में बाबा की बहुत मदद रही

बाबा मिला, बहुत अच्छा नारायणी नशा रहने लगा। बहुत सारी परीक्षायें आईं, जिन रिश्तों के लिए मैं जीती थी, बाबा ने उन्हीं रिश्तों से अवगत कराया कि वो कितने खोखले हैं। बाबा ने सभी समस्याओं को बड़ी सहजता से पार कराया। मेरी पी.एच.डी. की पढ़ाई में बाबा की बहुत मदद रही। एक सर्वे में बताया गया था कि अगर पी.एच.डी.थिसिस से एक लेख निकलता है तो उसकी कीमत 10 लाख होती है अर्थात् सरकार को उससे दस लाख का फायदा होता है और मेरी पी.एच.डी.थिसिस से अन्तर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर पचास लेख निकले। यूनिवर्सिटी ने मेरे निबंधों को पुस्तक रूप में छपवाने की स्वीकृति दी। यह सब बाबा की मदद से सम्भव हुआ।

बाबा के प्यार से मन मज़बूत हो गया

बाबा से प्यार होने का सबसे बड़ा फायदा यही रहा कि मेरा मन जो बहुत कमज़ोर था, बहुत मज़बूत हो चुका है। परीक्षायें आती रहती हैं परन्तु बाबा

(शेष..पृष्ठ 47 पर)

जहाँ एकाग्रता है, वहीं सफलता है

❊ ब्रह्माकुमार सूर्य, आबू पर्वत

प्रत्येक मनुष्य आज प्रथम प्रयास में ही सफलता का हार पहनना चाहता है और चाहे भी क्यों न, यही तो भाग्य के धनी मनुष्य की पहचान है। जो मनुष्य प्रत्येक कदम पर सफल है, वही महान है, वही भाग्यवान है। लोग कहते हैं कि सफलता ही खुशी की चाबी है परन्तु सत्य इसके विपरीत है कि जहाँ खुशी है वहीं सफलता है। इससे भी बढ़कर है, जहाँ एकाग्रता है वहाँ सफलता परछाई की तरह आगे-पीछे घूमती है। जिसका मन सारा दिन व्यर्थ में भटकता है, उन्हें सफलता हेतु भारी संघर्ष करना पड़ता है।

सैकड़ों अनुभवों से पाया गया है कि जिन युवकों की मनोस्थिति श्रेष्ठ है, जिन्होंने सदा लक्ष्य पर ही एकाग्र किया है, जिन्होंने मन को वासनाओं के पीछे नहीं भटकाया है, उन्हें सहज ही अच्छी नौकरी मिल जाती है। परन्तु जो लक्ष्य को एक किनारे रखकर किसी के दुखदाई प्यार में भटक गये वे तो अटक गये। जिन्होंने व्यर्थ की परेशानियों में, झूठी आकांक्षाओं में व झूठे वायदों में जीवन के अनमोल क्षणों को गँवा दिया वे तो परेशानियों के सागर में बह गये।

जिन्हें जीवन में सहज ही सफलता के शिखर को छूना है, वे स्वयं को लक्ष्य पर एकाग्र करें। बुद्धिवान मनुष्य वही है जो अपने वर्तमान समय के महत्व को पहचाने, विद्यार्थी विद्या-काल को महत्व दें। अन्य किसी क्षेत्र में कार्यरत मनुष्य समय के महत्व को पहचान कर मेहनत करें। एक बार जीवन की गाड़ी ठीक-ठीक पटरी पर आ जाए, फिर तो वह सरपट दौड़ेगी। यदि आप एक महत्वपूर्ण स्पर्धा जीतना चाहते हैं तो निश्चित रूप से आपको सब तरफ से ध्यान हटाकर सम्पूर्ण आत्मविश्वास के साथ वहीं एकाग्र होना होगा। यहाँ हम एकाग्रता पर सुन्दर चर्चा प्रस्तुत कर रहे हैं –

क्या है एकाग्रता

मन का किसी विषय वस्तु पर स्थिर हो जाना व बुद्धि का स्वरूप पर स्थिर हो जाना एकाग्रता है। मन का काम चिन्तन करना व बुद्धि तीसरा नेत्र है, उसका काम किसी लक्ष्य को देखना है। एक विद्यार्थी यदि पढ़ रहा है तो उसका मन इधर-उधर न भटके, ध्यान पढ़ाई में हो और बुद्धि उसे ग्रहण कर रही हो, यह एकाग्रता है। याद रहे, बुद्धि धारणा शक्ति है।

एक खिलाड़ी जब खेल रहा हो तो मन खेल का आनन्द ले रहा हो तथा बुद्धि और आँखें गेंद पर या लक्ष्य पर स्थिर हों। उसे केवल गेंद ही दिखाई दे रही हो, यह उसकी एकाग्रता है। कोई भी शिल्पी (कारीगर), चित्रकार या संगीतकार अपने कार्य में तल्लीन हों, मन-बुद्धि उसी में लगे हों, यह उनकी एकाग्रता है। एक योगी का मन, आत्मा तथा परमात्मा का चिन्तन कर रहा है और बुद्धि परमात्म स्वरूप पर स्थिर हो जाए, यह उसकी एकाग्रता है।

क्यों हो रही है एकाग्रता भंग

सारी रात क्रिकेट के खिलाड़ी नृत्य पार्टी का आनन्द लेते रहे और सवेरे वे महत्वपूर्ण पारी खेलने जा रहे हैं, उनकी हार निश्चित है। मन की वासनाएँ एकाग्रता को भंग कर रही हैं। एकाग्रता पर सबसे ज्यादा मार पड़ी है कामवासना की। जो विद्यार्थी इस चक्रव्यूह में उलझ गये हैं, उनकी एकाग्रता नष्ट हो रही है। परिणामत: वे प्रत्येक फील्ड में असफलता का मुँह देख रहे हैं। उनके हाथ लग रही है निराशा और उन्हें इस महाबीमारी का आभास ही नहीं है। वे दैहिक सुख को

सर्वोपरि मानकर अपना भविष्य अन्धकारमय बना रहे हैं।

संसार में तनाव व चिंताएँ तेजी से बढ़ती जा रही हैं। इसका कारण है, मन की शक्ति कमज़ोर पड़ गई है, शीघ्र क्रोध आ जाता है, तनाव में रहने लगते हैं, एकाग्रता नष्ट होने लगती है। छोटे बच्चों का भी मन तनाव-ग्रस्त रहने लगा है। अनेक बच्चे खुश नहीं रहते। इसका असर उनकी बुद्धि पर पड़ता है।

बड़ों को परिवार की चिन्ताएँ, अनहोनी घटनाएँ, अकाले मृत्यु, बढ़ती हुई महंगाई, सम्बन्धों में टकराव एकाग्र नहीं होने देते। जहाँ रात-दिन टकराव है, क्रोध है, परस्पर प्रेम व शुभ-भावनाओं की कमी है वहाँ मन का भटकना स्वाभाविक है। यदि मन में ईर्ष्या-द्वेष की अग्नि जल रही है, यदि बदला लेने के लिए मन उमड़ रहा है, यदि घृणा का घुन मन की शान्ति को नष्ट कर रहा है, यदि परचिन्तन व परदर्शन में मन भटका हुआ है, यदि दूसरों से तुलना करने में ही मन लगा है तो हम एकाग्रता से कोसों दूर हैं।

टी.वी., इन्टरनेट, मोबाइल फोन पर यदि हम संयमित नहीं हैं तो मन-बुद्धि भटकते ही रहेंगे। यदि गंदी फिल्में देखने का रस है तो यह जीवन को काल की ओर ले जाने वाला है। इन तीनों से बहुत कुछ सीखा भी जा सकता है। ये विज्ञान की अनुपम देन हैं, इनका सदुपयोग करें। इनका दुरुपयोग एकाग्रता नष्ट करता है, जीवन को भ्रष्ट करता है व बुद्धि को मलीन करता है। यह देखने में आता है कि बहुतों का मन बिना कारण ही खिन्न व अशान्त रहता है। अल्पायु से ही कइयों को संघर्ष का सामना करना पड़ता है, उनका मार्ग कांटों से भरा होता है। इनके कारण वर्तमान नहीं होते। पूर्व जन्मों के विकर्म उन्हें न तो एकाग्र होने देते, न सफल। ऐसे ही अब के कर्म भविष्य पर प्रभाव डालेंगे अत: पाप कर्मों से बचना चाहिए।

व्यर्थ सोचते रहने की आदत, अर्थहीन कल्पनाएँ व अनुमान लगाने की आदत एकाग्रता को समाप्त कर देते हैं। दृढ़ संकल्प करें कि हमें एकाग्रचित्त होकर सम्पूर्ण सफल होना ही है। अब उन सब बातों को छोड़ देना है जो एकाग्रता के मार्ग में बाधक हैं।

कैसे बढ़े एकाग्रता

जो एकाग्रचित्त हैं उनके संकल्पों में बहुत बल होता है। उनकी शुभ-भावनाएँ दूसरों का कल्याण कर सकती हैं। वे देव-कुल की आत्माओं का आह्वान कर सकते हैं। उनकी परम आत्मा से स्पष्ट रूह-रिहान (बातें) होती है।

ब्रह्ममुहूर्त को महत्व दें

इस शक्ति को बढ़ाने के लिए सवेरे-सवेरे स्वयं में श्रेष्ठ संकल्प भर लेना सबसे ज्यादा लाभकारी है। जो राजयोगी हैं वे योग की भिन्न-भिन्न ड्रिल करें। यदि आप विद्यार्थी हैं तो सत्साहित्य का अध्ययन करें अथवा आंखें खुलते ही 108 बार लिखें कि 'मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ।' रात्रि सोने से पूर्व लिखें कि 'मैं एक महान आत्मा हूँ'। इससे व्यर्थ को समाप्त करने में बहुत मदद मिलेगी। जो राजयोगी हैं वे सवेरे स्वयं को सुन्दर संकल्पों से चार्ज करें। स्वमान का अभ्यास करें व ईश्वरीय महावाक्य

सुनें। ये महावाक्य प्रतिदिन मन में महान संकल्पों का संचार करते हैं और व्यर्थ समाप्त हो जाता है।

ध्यान रहे, आँख खुलते ही नकारात्मक संकल्प मन में कभी न आने दें। उठते ही पांच संकल्प पाँच-पाँच बार करें.... मैं बुद्धिमान हूँ, मैं चरित्रवान हूँ, मैं एकाग्रचित्त हूँ, मैं श्रेष्ठ योगी हूँ और मैं बहुत-बहुत भाग्यवान हूँ। इन्हें अवचेतन मन स्वीकार कर लेगा और हमारे अन्तर्मन की शक्ति हमें वैसा ही बना देगी। इस तरह जो मनुष्य सवेरे के समय का सदुपयोग करता है, उसका मन व्यर्थ से मुक्त होकर एकाग्र हो जाता है।

पवित्रता बढ़ायें

एकाग्रता का सीधा संबंध पवित्रता से व विचारों की शुद्धि से है। विद्यार्थी दैहिक प्रेम से बचें, आत्मिक प्रेम बढ़ाएँ। वासना व प्रेम में बहुत अन्तर है। वासनात्मक प्रेम काम विकार को बढ़ावा देता है जबकि आत्मिक प्रेम विचारों को शुद्ध करता है। क्रोध एकाग्रता का शत्रु है। मैं-मैं करने वाला व्यक्ति नकारात्मक विचारों की मृग-तृष्णा में भटकता रहता है। जो मनुष्य समस्याओं से घिरा है व छोटी-छोटी बातों में तनाव-ग्रस्त रहता है वह एकाग्र नहीं हो सकता। इसलिए स्वयं को सरलचित्त बनायें तो एकाग्रता भी सरल हो जाएगी। पवित्रता, शुद्ध विचार व स्वमान के अभ्यास से ब्रेन शक्तिशाली बनता है तथा बुद्धि स्थिर होती है।

साक्षीभाव बढ़ायें

अपने चित्त को ज्ञानबल से शान्त रखने वाला मनुष्य ही स्थिरचित्त हो सकता है। स्वयं भगवान ने अपनी रचना का सम्पूर्ण ज्ञान हमें दिया है। उन्होंने विश्व की तुलना एक नाटक से की है। इसमें सभी आत्माएँ पार्टधारी हैं व देह रूपी वस्त्र पहनकर अपना-अपना पार्ट बजा रही हैं। विश्व ड्रामा के ज्ञान को यूज करके अपने चित्त को शांत करें। कुछ निम्नलिखित बातों का अभ्यास करें।

इस ड्रामा में सबका अपना-अपना पार्ट है व अपना-अपना भाग्य है, अपने बच्चों के लिए व अन्य साथियों के लिए यह दृष्टिकोण रखें।

वही हो रहा है जो 5000 वर्ष पूर्व हुआ था, नथिंग न्यू....यहाँ किसी का कोई भी दोष नहीं। जो कुछ हो रहा है, वही सत्य है, वही होना चाहिए। इस ड्रामा में मेरा पार्ट भी बहुत सुन्दर है। मुझे अपने पार्ट का आनन्द लेना है।

इस खेल को साक्षी होकर देखें। नो क्वेश्चन, नो कम्प्लेन्ट।

जीवन में सन्तुलन हो

पहला सन्तुलन भोजन व नींद का हो। न बहुत कम सोयें न ज्यादा। विद्यार्थी सात घण्टे अवश्य सोयें व राजयोगी छह घण्टे अवश्य सोयें। इससे कम नींद हानिकारक रहेगी।

भोजन न ज्यादा न कम। ज्यादा भोजन ब्रेन को सुस्त करेगा व कम भोजन कमज़ोर।

टी.वी., नेट की गन्दी साइट पर न जाएँ। इनसे मन में गंदगी भरती है, यह स्वीकार कर लें कि मैं तो पवित्र आत्मा हूँ, गंदगी मेरा विषय नहीं है।

मेडिटेशन का अभ्यास करें

विद्यार्थी वर्ग के लिए प्रतिदिन आधा घण्टा राजयोग मेडिटेशन परम आवश्यक है। आप राजयोग सीख लें व आत्म स्वरूप व परमात्म स्वरूप पर एकाग्रता का अभ्यास करें। इस अभ्यास को एक मिनट से बढ़ाकर दस मिनट तक ले जाएँ।

जो लोग राजयोग सीख चुके हैं वे पाँच स्वरूपों का अभ्यास, स्वमान का अभ्यास व अशरीरीपन का अभ्यास कर्म करते भी करें।

बुद्धि आत्म-स्वरूप पर व परमात्म स्वरूप पर चिन्तन के साथ एकाग्र हों।

इस तरह हमारी एकाग्रता की शक्ति बढ़ेगी। संकल्प शक्तिशाली होते जाएंगे। शक्तिशाली संकल्पों के वायब्रेशन जब चारों ओर फैलेंगे तो समस्याएँ दूर से ही नष्ट हो जाएँगी। मन जब व्यर्थ से मुक्त रहेगा तो संकल्पों की गति कम हो जाएगी और इससे बौद्धिक क्षमता में अतिशय वृद्धि होगी। एकाग्रता के बल से कम बुद्धि वाला मनुष्य भी बड़े-बड़े कार्य करने में सफल होगा। ❖

शान्ति की खोज में

❊ ब्रह्माकुमार उमेन्द्र कुमार सिंह, कुशीनगर

एक महीने के अवकाश के दौरान भारत भ्रमण करके जब वापस कुशीनगर आया तो मेरे पुलिस मित्रों ने पूछा कि आपने क्या देखा, क्या पाया। मेरे मन से आवाज निकली कि अशान्ति से भरे माहौल में कहीं भी शान्ति नहीं मिली। मेरे एक मित्र ने बताया कि यहीं फाजिलनगर (कुशीनगर) में एक संस्था है जिसका नाम ॐ शान्ति (ब्रह्माकुमारीज़) है, आप वहाँ जायेंगे तो शान्ति ज़रूर मिलेगी। मैंने सोचा, जिस शान्ति की खोज में भारत भ्रमण करते एक मास बीत गया, फिर भी नहीं मिली, चलो एक दिन ॐ शान्ति में ही चलकर देखें, क्या पता वहीं मिल जाये।

अगली शाम हम उस भाई के साथ ब्रह्माकुमारीज़ की स्थानीय शाखा में पहुँच गये। वहाँ लगी ब्रह्मा बाबा व मम्मा की तस्वीरों पर जब ध्यान गया तो लगा, सारी थकावट दूर हो गयी, अपार शान्ति महसूस होने लगी। हमें स्थानीय शाखा की निमित्त बहन व भाई से मिलवाया गया, बहन ने बताया कि आपको एक सप्ताह का कोर्स करना पड़ेगा और सूरज भाई ने हमारी जिज्ञासा को देखते हुए एक ज्ञानामृत पढ़ने के लिए दे दी। पत्रिका का पहला पेज पढ़ते ही हमको बहुत अच्छा लगा।

नया जन्म

इसके बाद निमित्त बहन ने हमसे एक फार्म भरवाया और हमारा एक सप्ताह का कोर्स शुरू हो गया। पहले ही दिन के कोर्स से हमें लगा कि हमारा सार्थक जीवन अब शुरू हुआ है, हमारा नया जन्म अब हुआ है। सप्ताह का कोर्स धीरे-धीरे पूरा हो गया। मैं जहाँ भी रहता, चाहे ड्यूटी पर या कहीं भी, ज्ञानामृत पत्रिका पढ़ता रहता और सुबह-शाम जब मौका मिलता मुरली (ईश्वरीय महावाक्य) सुनने आश्रम पर चला जाता। यदि नहीं जा पाता तो मोबाइल फोन के ज़रिये सुन लेता तथा उन्हें नोट भी करता। बाबा के महावाक्य दिल की गहराई तक पहुँच जाते हैं तथा परम शान्ति का अनुभव होता है।

पुरानी यादें

पाँच भाई-बहनों में मैं तीसरे स्थान पर हूँ। बहुत सुखी परिवार था पर अचानक 18.08.1992 को माता जी का देहान्त हो गया, मुसीबत का पहाड़ टूट पड़ा। दो बड़ी बहनों की शादी हो चुकी थी और पिताजी नौकरी पर वाराणसी में थे, घर (बलिया जिले के बैरिया गाँव) पर मैं और मेरा छोटा भाई व मेरी छोटी बहन ही थे। मेरी उम्र उस समय 20 वर्ष, भाई की 15 वर्ष

और छोटी बहन की उम्र 10 वर्ष थी, पूरी ज़िम्मेवारी मेरे कन्धों पर आ गयी। आनन-फानन में मात्र छः महीने बाद 23.2.1993 को मेरी शादी कर दी गयी। अभी हम माता जी की मृत्यु का गम भुला ही नहीं पाये थे कि मात्र चार महीने बाद हमारी युगल नाराज होकर अपने मायके चली गयी। समय अनुसार परिस्थितियों से समझौता तो करना पड़ा पर शान्ति की तलाश में भटकता रहा।

थोड़ी खुशी

सन् 1994 में उत्तर प्रदेश पुलिस में मेरी नौकरी लग गयी। युगल भी हमारे घर वापस आ गयी। फिर पुत्र रत्न की भी प्राप्ति हुई लेकिन नौकरी पर रहते घर की चिन्ता हमेशा बनी रहती थी, मन हमेशा अशान्त रहता था। पिताजी रिटायर्ड होकर घर पर आ गये लेकिन माताजी के बिना पूरा परिवार अधूरा लगता था। मैं जब भी छुट्टी लेकर घर जाता, माताजी

के बिना मन अशान्त रहता। मैं बार-बार भगवान से यही विनती करता कि प्रभु, एक बार हमें हमारी माताजी से मिला दो। जब माता जी की याद आती, कलेजा फट जाता था।

सहारा ॐ शान्ति का

माताजी को गुज़रे लगभग 21 वर्ष बीत चुके थे, मन को शान्ति नहीं मिल रही थी, सब कुछ होते हुए भी खालीपन, अकेलापन महसूस होता था। शान्ति की खोज में एक माह का अवकाश लेकर भारत-भ्रमण पर निकल गया, सबसे पहले कोलकाता में स्वामी विवेकानन्द के मठ, फिर कालीघाट, फिर दक्षिणेश्वर गया। बाद में मुम्बई चला गया, जहाँ मुम्बा देवी, सिद्धिविनायक, शिरडी के साईं बाबा के दर्शन किये। सबसे एक ही प्रार्थना करता, हमारे मन को शान्ति प्रदान करो प्रभु। मुम्बई में 10 दिन रहने के बाद दिल्ली चला आया। वहाँ राधास्वामी संस्थान में गया। फिर माँ वैष्णो देवी (जम्मू-कश्मीर) गया। वहाँ तीन दिन रहने के बाद वापस बाबा गोरखनाथ मंदिर गया। फिर दो दिन बाद अपने गांव बैरिया गया जहाँ स्वामी जी महाराज बाबा के दर्शन किए और लौटते समय गोपालगंज जिले (बिहार प्रान्त) में माँ थाँवे वाली महारानी के पास झोली फैलाई। उसके बाद कसया (कुशीनगर) में भगवान बुद्ध के महापरिनिर्वाण स्थल पर गया और जैन धर्म के 24 वें तीर्थंकर महावीर स्वामी के सानिध्य में पावानगर (फाजिलनगर) गया मगर मन को शान्ति नहीं मिली। लेकिन दिनांक 26.5.2013 को शाम को जैसे ही फाजिलनगर में 'ॐ शान्ति' आश्रम में ब्रह्मा बाबा व मम्मा का मनमोहक चित्र देखा, मन को अपार शान्ति मिली।

ममता-मोह का नाश

जिस शान्ति की खोज में मैं दर-दर भटकता फिर रहा था वह शान्ति 'ॐ शान्ति' आश्रम पर जाने पर मिली। मैं अपनी माताजी की आत्मा की शान्ति के लिए 21 वर्षों से परेशान था, उसका समाधान प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में आकर हुआ। यहाँ हमें सिखलाया गया कि आत्मा अजर, अमर, अविनाशी है, कभी मरती नहीं, अपना पार्ट बजा कर चली जाती है और 5000 वर्ष बाद फिर उसी समय पर, वही पार्ट बजाती है। इससे हमको अपार शान्ति मिली और लगा कि माताजी फिर 5000 वर्ष बाद हमको जरूर मिलेंगी इसी समय। हमारे मोह-ममता का नाश हो गया और पल-पल शान्ति का अनुभव होने लगा। दिल से यही गीत निकलने लगा

'बनाया प्रभु ने है अपना,
दिया सुख हमें है कितना,
न इतने तारे अम्बर में,
न सागर में ही जल इतना'

❖

मैंने जाना.. पृष्ठ 42 का शेष

उन्हें बड़ी सहजता से, आगे के लिए पाठ पढ़ाकर पार कराता है। आज मैं एम.एम.यूनिवर्सिटी, मुलाना (हरियाणा) में प्रशासनिक पद पर कार्यरत हूँ। यहाँ यूनिवर्सिटी में ही मुझे फ्लैट मिला है। यूनिवर्सिटी के पास में ही ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र है। यहाँ के सेवाकेन्द्र की निमित्त बहन मुझे बहुत प्यार करती हैं। मेरे पति जयपुर में एक बहुराष्ट्रीय कंपनी में विपणन प्रबंधक (Marketing manager) के पद पर कार्यरत हैं। बाबा के ज्ञान में नहीं हैं परन्तु सहयोगी हैं और मन ही मन में बाबा को मानते भी हैं। जब भी मुझ पर कोई परेशानी आती है तो मुझे याद कराते हैं कि बाबा को याद करो। मेरा बेटा और मेरी माँ मेरे साथ ही रहते हैं। इन दोनों के प्रति अपनी ज़िम्मेवारियों को निभाते हुए आज मैं अपने आप को बहुत हलका महसूस करती हूँ। मेरे सर्व सम्बन्ध शिव बाबा से हैं और बाबा से यही चाहना है कि चाहे कुछ भी हो जाये परन्तु मेरा और बाबा का प्यार हमेशा बढ़ता रहे। ❖

डिस्चार्ज होती आंतरिक ऊर्जा की पहचान

❊ ब्रह्माकुमारी शकुंतला, बहल (हरियाणा)

अनेक प्रकार की ऊर्जाओं का हम दैनिक जीवन में उपयोग करते हैं। उपयोग करने से ऊर्जा की मात्रा में कमी आती जाती है। फिर हमारा ध्यान उस ऊर्जा को पुन: भरने पर जाता है।

रोजमर्रा के जीवन का एक छोटा-सा उदाहरण ही हम लें। हम मोबाइल फोन प्रयोग करते हैं। इसका प्रयोग करते समय हम एक साथ चार प्रकार की ऊर्जा प्रयोग कर रहे होते हैं। पहली ऊर्जा है पैसे की ऊर्जा। बात पूरी होते ही मोबाइल की स्क्रीन पर आ जाता है कि आपने कितने पैसे खर्च किये हैं और अभी कितने बाकी हैं। यदि पैसे इतने कम हैं कि आपको एक कॉल और करनी पड़ी और आपकी बात बीच में ही रह जायेगी तो आप सब ज़रूरी कार्य छोड़कर भी उसे रिचार्ज कराने भागते हैं।

दूसरी ऊर्जा है उसकी बैटरी में, उसकी भी खपत हो रही है। वह भी यदि बहुत कम हो गई हो और बेशक हमारा सोने का समय हो गया हो, फिर भी हम उसे बिजली से जोड़कर रिचार्ज करते हैं ताकि किसी के साथ भी संवाद की प्रक्रिया बीच में न रह जाए।

तीसरी, मोबाइल प्रयोग करने वाले व्यक्ति की शारीरिक ऊर्जा की खपत हो रही है। कर्मेन्द्रियों से बोलते हैं, सुनते हैं तो शरीर की शक्ति भी प्रयोग होती है। फिर शरीर भी रिचार्ज होना चाहता है। शरीर की चार्जिंग के लिए ऑक्सीजन, जल, भोजन और नींद जैसी आवश्यक चीज़ों की हम पूर्ति करते हैं।

चौथी ऊर्जा जो सबसे अधिक महत्वपूर्ण है और बाकी तीनों ऊर्जाओं का भी संचालन करने वाली है वह है – आन्तरिक ऊर्जा, मन की ऊर्जा, आत्मा की ऊर्जा। शरीर जिस ऊर्जा से चलता है उसका ही नाम ''आत्मा'' है। क्या हमें आत्मा को रिचार्ज कराने का ख्याल कभी आया? बाकी सभी साधन फिर भी सीमित समय के लिए प्रयोग में आते हैं लेकिन शरीर को चलाने वाली यह आत्मिक ऊर्जा तो 'अहर्निशम् सेवामहे' वाली उक्ति के अनुसार कभी अपने कार्य से छुट्टी नहीं लेती। सब ऊर्जाओं का निर्माण, व्यवस्था व उपयोग करने वाली आत्मा को 24 घन्टे में एक बार तो क्या 24 सालों में भी चार्ज करने की आवश्यकता महसूस नहीं करते!! आप कहेंगे कि हमें तो इसको चार्ज कराने की आवश्यकता का कोई संकेत ही नहीं मिलता है, फिर कैसे चार्ज कराने की बात सोचें? आइये! जानें, वे कौन-से संकेत हैं, लक्षण हैं जिनसे पता चले कि मुझे तुरन्त आत्मिक रूप से रिचार्ज होने की आवश्यकता है।

शान्ति की कमी – दिन-प्रतिदिन मनुष्य के जीवन में शान्ति की कमी होती जा रही है। परिणामस्वरूप अशान्ति बढ़ रही है। बात-बात में झुंझलाहट, आवेश में आना, चिड़चिड़ापन, तुरन्त प्रतिक्रिया, हिंसात्मक विचार, हिंसा, रोना, रूठना, मूड ऑफ, आगजनी, जाम, हड़ताल, सरकारी व अपनी सम्पत्ति में तोड़-फोड़, अपना ही अंगभंग, आत्महत्या, बदले की भावना, आत्मघाती हमला, हिंसक उपकरणों की खोज व उनका निर्माण – ये सभी नकारात्मक भाव एवम् कर्म सिद्ध करते हैं कि शान्ति का स्तर खतरे के निशान से काफी नीचे चला गया है और स्वयं को तुरन्त शान्ति की शक्ति से रिचार्ज कराना आवश्यक है। जैसे शरीर में भी पानी या हवा का स्तर आवश्यकता से नीचे चला जाए तो उसकी भी निशानियाँ दिखाई देने लगती हैं और तुरन्त हम उस कमी को पूरा करते हैं।

वास्तव में इन नकारात्मक वृत्तियों का अपना कोई अस्तित्व नहीं है। ये

तो शान्ति रूपी ऊर्जा (प्रकाश) की अनुपस्थिति में पैदा हुए मच्छर-मक्खियाँ व कीटाणु मात्र हैं। इस तथ्य को न समझ पाने के कारण हिंसा व हिंसात्मक गतिविधियों पर रोक लगाने के लिए आज राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर बड़ी भारी योजनाएँ बनाई जा रही हैं, कानून पास किये जा रहे हैं, राष्ट्र का कीमती धन, समय व शक्तियाँ निरर्थक बहाई जा रही हैं। यह तो ऐसे ही हुआ जैसे एक दीपक जलाने की बजाय अन्धेरे को बोरियों में भरकर बाहर फेंकने का निरर्थक प्रयास करना।

प्रिन्ट और इलैक्ट्रोनिक मीडिया में हत्या व आत्महत्या के ऐसे-ऐसे समाचार छपते हैं जिन्हें पढ़ या देखकर बरबस ही हमारे मुख से निकल पड़ता है – बस! इतनी-सी बात पर!!..... आज हमारे क्रोध का स्तर खतरे के निशान से ऊपर चला गया है और फिर भी हम निश्चिन्त बैठे हैं।

सतरह वर्षीय पोते ने बाइक की मांग पूरी न होने पर दादी की हत्या की.... होमवर्क करा रही माँ ने फोर्टी लिखना न आने पर अपने ही 7 वर्षीय बच्चे को सब्जी वाला चाकू मारा.... शराब के लिए पैसे न देने पर बेटे ने माँ को ईंट मारी.....खरीदे गये सामान के पैसे मांगने पर ग्राहक ने दुकानदार को गोली मारी....नकल करने से रोके जाने पर विद्यार्थी ने अध्यापक को ''देख लेने'' की धमकी दी....शादी का प्रस्ताव ठुकराने पर मनचले ने लड़की पर तेजाब फेंका..... इलाज के दौरान मृत्यु होने से रोगी के परिजनों ने अस्पताल में तोड़फोड़ व डाक्टर के साथ हाथापाई की....यह उस सभ्य समाज की तस्वीर है जिसके लिए हम गर्व से कहते हैं कि हम तो विकास के रास्ते पर तेज़ी से अग्रसर हैं।

आपको कितने ही लोग ऐसे मिल जाएँगे जिन्हें मोबाइल पर बात करते समय क्रोध आया और मोबाइल ही फेंक कर तोड़ दिया जबकि जिस व्यक्ति पर गुस्सा आया है वह तो सैकड़ों किलोमीटर दूर है। गलती उसकी और नुकसान अपना कर रहे हैं। क्रोध बुद्धि को तेज़ी से डिस्चार्ज करता है – यह इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है।

प्रेम की कमी – परमात्मा प्रेम का सागर होने के कारण हम सब उसके बच्चे भी मास्टर प्रेम के सागर हैं लेकिन आत्मा की यह प्रेम की ऊर्जा भी दिन-प्रतिदिन घटती जा रही है जिससे समाज व व्यक्तिगत जीवन में कई निशानियाँ दिखाई दे रही हैं। सम्बन्धों में कटुता, स्वार्थ, धोखाधड़ी, सन्देह, टकराव, मनमुटाव, चापलूसी, टूटते परिवार, अनाथालयों, वेश्यालयों व वृद्धाश्रमों में बेतहाशा वृद्धि, बढ़ते मुकदमे, अस्त्रों-शस्त्रों का निर्माण, भ्रूण हत्या, रिश्वत, मिलावट, भ्रष्टाचार के विभिन्न रूप आदि प्रेम की कमी से उपजी समस्याएँ हैं। जिस परिवार या समाज में प्रेम की भरपूरता होती है वहाँ इनके पैदा होने के लिए उपयुक्त वातावरण नहीं मिलता। कहते हैं, प्रेम की कमी वाले परिवार में तो लक्ष्मी के भी पैर नहीं पड़ते, वह भी पलायन कर जाती है।

आज के समय की एक गम्भीर समस्या – प्रेमी जोड़ों द्वारा आत्महत्या करना। यह भी सच्चे प्रेम की कमी से उपजी समस्या है। प्रेम किसी से भी हो, पिता, पुत्र, प्रेमी, पति, पुत्री, पत्नी, प्रेयसी, परमात्मा, पैसा, पढ़ाई, प्रकृति, पशु-पक्षी – जहाँ सच्चा प्रेम है वहाँ सहन तो करना ही पड़ता है। जहाँ यथार्थ प्रेम की कमी होती है वहाँ सहन करने की भावना में कमी आ जाती है, जो हिंसा को जन्म देती है। जब समाचारों में सुनते हैं कि 13-14 वर्ष की किशोरी ने प्रेम में असफल होने पर प्रेमी संग आत्महत्या कर ली तो एक प्रश्न ज़ेहन में उभरता है कि इस उमर की सुकोमल कुमारियाँ जहाँ अन्धेरे से, छिपकली या काक्रोच से इतनी डरती हैं तो उनमें स्वयं को आग लगाने या जहर खाने या कुएँ में गिरने जैसी भयानक घटनाओं को अन्जाम देने की शक्ति कहाँ से आ जाती है? जाहिर है, प्रेम में शक्ति तो होती ही है लेकिन आज उस प्रेम को सकारात्मक

दिशा नहीं मिल रही है इसलिए अनेकानेक मूल्यवान जिन्दगियाँ बर्बाद हो रही हैं।

कुछ समय पहले अखबार में एक समाचार छपा था कि विदेश में एक नन्हें बच्चे को डाक्टर बहुत प्रयासों के बाद भी बचा नहीं पाए और उसकी माँ को मृत शरीर ले जाने को कहा गया। पर माँ ने जैसे ही बच्चे की मृत देह को गोदी में उठाया, माँ के ममता भरे स्पर्श ने जादू किया और बच्चा गोद में जाते ही जीवित हो गया। इस घटना से डाक्टरों ने स्वीकार किया कि माँ का स्पर्श बच्चे के लिए सबसे बड़ी हीलिंग पावर है।

सच्चे प्रेम में मृत व्यक्ति को भी जीवित कर देने की क्षमता है लेकिन आज उल्टा हो रहा है। प्रेम के नाम पर मरना और मारना – इसी को ही सच्चा प्रेम मान लिया गया है। प्रेम की कमी का गिरता हुआ ग्राफ कहाँ जाकर ठहरेगा, इसकी कल्पना मात्र से ही हर एक की रूह काँप जाती है। इसलिए आत्मा को सच्चे आत्मिक प्रेम की ऊर्जा से तुरन्त रिचार्ज कराने की आवश्यकता है। इसमें देरी दुर्घटनाओं को जन्म दे रही है।

पवित्रता की कमी – जैसे पानी की कमी से शरीर व संसार में हा-हाकार मच जाता है वैसे ही आज संसार में पवित्रता की कमी से हा-हाकार मचा हुआ है। अपवित्रता की अग्नि सारे मानव समाज को झुलसा रही है। पवित्रता के ऐसे अभूतपूर्व संकटकालीन समय की आज तक किसी ने भी कल्पना नहीं की थी। ''विषय वैतरणी नदी'' आज के समय में जैसे बह रही है और उसमें समाज के सुशिक्षित, ऊँच पदासीन, बुद्धिजीवी और तथाकथित धर्म के ठेकेदार जिस तरह गोते मार रहे हैं, यह तो किसी ने भी नहीं सोचा होगा!!

महाभारत के सीरियल में एक द्रौपदी का चीरहरण और रामायण के सीरियल में एक सीता हरण का दृश्य पर्दे पर देख कर आँसू बहाने वालों ने तनिक भी सोचा न होगा कि एक दिन हर मुहल्ले, हर गली में, नहीं-नहीं हर घर में ऐसी घटनाओं का जीवन्त (Live) प्रसारण देखेंगे। पवित्रता की कमी से उपजे इस काम के दावानल को और अधिक भड़काने में इन्टरनेट, फिल्में, प्रिन्ट और इलैक्ट्रोनिक मीडिया भी घी का काम कर रहे हैं। आज कामुक वृत्ति वालों के लिए कोई भी, किसी भी उम्र और रिश्ते की नारी मात्र मांस का एक लोथड़ा है। जैसे कुत्ते को तो हड्डी चाहिए चबाने के लिए चाहे वह मृत या जीवित किसी भी प्राणी की हो, वैसे ही आज मानव पशुओं से भी बदतर हो गया है।

राजयोग के अभ्यास से अपने में शान्ति, प्रेम और पवित्रता की शक्ति भरना – यह कार्य कोई ''टाइम पास मूंगफली'' नहीं है जो जब फुरसत मिलेगी तब करेंगे। मनुष्य वर्तमान और भविष्य की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए धनार्जन या विद्यार्जन जवानी में ही करता है, इसे बुढ़ापे के लिए नहीं छोड़ता। तो फिर राजयोग के अभ्यास से अपने को शान्ति, प्रेम और पवित्रता आदि सद्गुणों से रिचार्ज करने के अति महत्वपूर्ण कार्य के लिए बुढ़ापे का इन्तज़ार क्यों? हाँ! इसके लिए इन्तज़ार वे लोग कर सकते हैं जिन्हें एक तो यह पक्का हो कि वे बुढ़ापे तक जीयेंगे ही और दूसरा यह गारंटी भी मिली हो कि बुढ़ापे में भी वे कार्य करने में उतने ही सक्षम भी रहेंगे।

यह फैसला तो स्वयं को करना होगा कि आत्मिक रूप से शान्ति की शक्ति से चार्ज करना है तो उसके लिए उपयुक्त समय या आयु कौनसी है? यदि हम ''फुरसत'' का इन्तज़ार करते हैं तो फुरसत के पल तो अस्पताल, जेल या फिर वृद्धाश्रम में ही मिलते हैं। आज समग्र विश्व के सामने शक्ति (आत्मिक बल और ईश्वरीय बल) के भयंकर अकाल की स्थिति प्रकट हुई है। इसीलिए प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय ने इस वर्ष का विषय रखा है, 'परमात्म शक्ति द्वारा महापरिवर्तन का समय।' ❖

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन -307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। संयुक्त सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
E-mail : omshantipress@bkivv.org Ph. No. : (02974) - 228125 gyanamritpatrika@bkivv.org

1.दिल्ली (कृष्णा नगर)- केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री डॉ.हर्षवर्धन को शुभकामनाएँ देते हुए ब्र.कु.जगरूप भाई। **2.शान्तिवन (आबू रोड)-** अखिल भारतीय बाल व्यक्तित्व विकास शिविर का उद्घाटन करते हुए पंजाब के स्काउटस एण्ड गाइड के सचिव कमिश्नर डॉ.साधू सिंह, ब्र.कु.मृत्युंजय भाई, ब्र.कु.भूपाल भाई, ब्र.कु.डॉ.हरीश शुक्ल, ब्र.कु.मुन्नी बहन तथा अन्य। **3.गांधीनगर-** केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री बहन स्मृति ईरानी को शुभकामनाएँ देते हुए ब्र.कु.कैलाश बहन। **4.वलसाड-** 'कर्म और भाग्य' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.शिवानी बहन, मेयर सोनल बहन, ब्र.कु.रोहित भाई, विधायक भ्राता भरत पटेल तथा ब्र.कु.रंजन बहन। **5.जयपुर (वैशाली नगर)-** 'परमात्म शक्ति द्वारा महापरिवर्तन का समय' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, राजस्थान के समाज कल्याण एवं न्यायमंत्री भ्राता अरुण चतुर्वेदी तथा अन्य। **6.आस्ट्रेलिया (मेलबोर्न)-** रिट्रीट के बाद ब्र.कु.रामलोचन भाई, ब्र.कु.सूर्यमणि भाई प्रतिभागियों के साथ समूह चित्र में।

RNI No.10563/1965, Postal Regd. No.RJ/SRO/9559/2012-2014 Posting at Shantivan-307510 (Abu Road) Licensed to post without prepayment No. RJ/WR/WPP/002/2013-2014. Published on 25th of each Month & Posted on 1st to 6th of each month. Price 1 copy Rs. 8.50, Issue : July 2014.

ज्ञान सरोवर (आबू पर्वत)-
मीडिया महासम्मेलन का उद्घाटन करते हुए प्रेस परिषद के सदस्य एवं इंडिया न्यूज टी.वी. के संपादक भाता राजीव रंजन नाग, राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, ब्र.कु.करुणा भाई, ब्र.कु.मृत्युंजय भाई, ब्र.कु.ओमप्रकाश भाई, ब्र.कु.शीलू बहन, ब्र.कु.शान्तनु भाई तथा अन्य।

शान्तिवन (आबू रोड)-
मूल्य, आध्यात्मिकता, स्वास्थ्य और पर्यावरण विषयक शिक्षाविद सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए राष्ट्रीय युवा योजना, दिल्ली के निदेशक डॉ.एस.एन.सुब्बा राव, ब्र.कु.मृत्युंजय भाई, ब्र.कु.शीलू बहन, राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, डॉ.हरीश शुक्ल तथा डॉ.आर.पी.गुप्ता।

नई दिल्ली-
केन्द्रीय रेल मन्त्री भाता सदानन्द गौड़ा को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.मृत्युंजय भाई। साथ में न्यायमूर्ति भाता वी.ईश्वरैय्या एवं ब्र.कु.शिविका बहन।

ज्ञान सरोवर (आबू पर्वत)-
समाज सेवा प्रभाग सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए सांसद भाता नंद कुमार चौहान, पंजाब व हरियाणा उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश भाता ए.एन.जिन्दल, रोटरी प्रांतपाल भाता वाई.पी.दास, नेपाल चेंबर्स ऑफ कॉमर्स के उपाध्यक्ष भाता प्रकाश पोडवाल, ब्र.कु.संतोष बहन, ब्र.कु. अमीरचंद भाई, ब्र.कु.प्रेम भाई तथा ब्र.कु.सीता बहन।